सोशल मीडिया से जुड़ें

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHI/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 220, नई दिल्ली, शुक्रवार 17 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता.

03 डीटीसी बचाओ अभियान का 11वां दिन...
06 पंजाब की महिलाएं बच्चे पैदा करने से परहेज करती हैं!
08 शिक्षा विभाग की ई-पत्रिका में शिक्षक मृत्युंजय की कविता प्रकाशित

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति, नई दिल्ली : देश के 24 करोड़ ड्राइवरों की आवाज़

देशभर के ड्राइवरों के हित में चार प्रमुख मांगों के समर्थन में अपील

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति ने आज देश के 24 करोड़ ड्राइवर भाइयों की ओर से सरकार से चार प्रमुख मांगें रखी हैं, जो ड्राइवर समाज की सामाजिक, आर्थिक और संवैधानिक सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

चार प्रमुख मांगें इस प्रकार हैं —

1 ड्राइवर आयोग (Driver Commission) का गठन किया जाए —

ताकि देश के ड्राइवरों से जुड़ी समस्याओं का समाधान एक स्वतंत्र और स्थायी आयोग के माध्यम से किया जा सके।

2 हर राज्य में "ड्राइवर वेलफेयर बोर्ड" की स्थापना की जाए —

जिससे ड्राइवरों को चिकित्सा सहायता, सुरक्षा योजनाएँ, और सामाजिक कल्याण सुविधाएँ प्राप्त हों।

3 हर ड्राइवर के लाइसेंस पर 20 लाख का बीमा कवर सुनिश्चित किया जाए —

ताकि सड़क दुर्घटना या आकस्मिक मृत्यु की स्थिति में परिवार को उचित आर्थिक सहायता मिल सके।

4 ड्राइवरों को "ऑनलाइन वोटिंग का अधिकार" प्रदान किया जाए —

ताकि देश के विकास में भागीदारी सुनिश्चित हो सके, भले ही ड्राइवर अपने कार्य के कारण राज्य से बाहर हों।

राष्ट्रीय ड्राइवर संयुक्त मोर्चा समिति का संकल्प:

"हमारा उद्देश्य है कि देश के हर ड्राइवर भाई को सुरक्षा, सम्मान और अधिकार प्राप्त हो —

क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था के पहिये ड्राइवर के हाथों से चलते हैं।"

लाजवंती गार्डन के आठ परिवारों की पुकार: 'हमारा रास्ता बंद मत कीजिए', डर के साए में जी रहे हैं सभी निवासी

परिवहन विशेष न्यूज

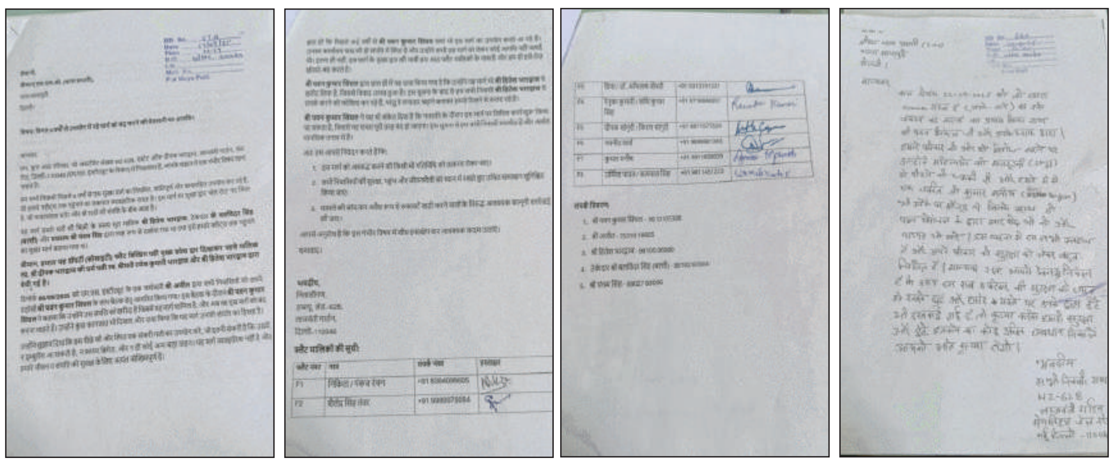

नई दिल्ली। दिल्ली के लाजवंती नगर इलाके में आठ परिवारों का जीना मुहाल हो गया है। एमएस इंस्टीट्यूट के मालिक पवन सिंघल उनके एकमात्र रास्ते को बंद करने की कोशिश में हैं। पुलिस में शिकायत दर्ज होने के बावजूद कार्रवाई का इंतज़ार है।

राजधानी के लाजवंती गार्डन इलाके की डब्ल्यूज़ेड-62बी सोसाइटी के आठ परिवार इन दिनों गहरे तनाव में हैं। वजह है - उनके आने-जाने का एकमात्र रास्ता बंद किए जाने की कोशिश। इन परिवारों ने अपनी जीवनभर की कमाई लगाकर यह घर खरीदे थे, लेकिन अब वही मकान उनके लिए 'कैदखाना' बनते दिख रहे हैं।

मुख्य विवाद - रास्ते पर दीवार खड़ी करने की कोशिश सोसाइटी के निवासियों ने मायापुरी थाने में दी गई शिकायत में बताया कि एम.एस. इंस्टीट्यूट के मालिक पवन कुमार सिंघल ने हाल ही में यह संकेत दिया है कि वह मुख्य रास्ते पर दीवार खड़ी कर देंगे। यह वही रास्ता है जिससे सोसाइटी के सभी परिवार रोज़ाना आवागमन करते हैं। निवासियों का कहना है कि सिंघल अब यह तर्क दे रहे हैं कि यह रास्ता उनकी निजी संपत्ति का हिस्सा है, जबकि पिछले कई वर्षों से सभी लोग इसी मार्ग से होकर अपने घरों तक पहुंचते रहे हैं। निवासियों ने सिंघल पर दल-बल के साथ मारपीट करने का आरोप लगाते हुए कहा कि वे अपने घरों में डर के साए में जी रहे हैं।

9 साल से इस्तेमाल में रहा यह मार्ग अब विवाद का केंद्र शिकायत में लिखा गया है कि यह रास्ता करीब नौ वर्षों से सभी परिवारों के लिए एकमात्र मुख्य प्रवेश और निकास द्वार रहा है। मौजूदा निवासियों को घर बेचने के वक्त तत्कालीन मालिक हितेश भारद्वाज, ठेकेदार बलविंदर सिंह (बल्ली) और मध्यस्थ पंचम सिंह ने अपना स्वामित्व (लीगल ओनरशिप) बताया था। उस समय इसे रास्ते के रूप में सभी के लिए उपयोग हेतु उपलब्ध कराया गया था। अब जब यह संपत्ति पवन कुमार सिंघल द्वारा खरीदी गई है, तब से रास्ता बंद करने की बात उठाई जा रही है। निवासियों का कहना है कि अगर दीवार खड़ी कर दी गई, तो न तो फायर ब्रिगेड, न एम्बुलेंस, और न ही कोई बड़ा वाहन उनके घरों तक पहुंच सकेगा। इससे उनकी जान और संपत्ति दोनों को खतरा है।

पुलिस कार्रवाई का इंतज़ार, निवासियों में बढ़ा तनाव पीड़ित परिवारों ने बताया कि उन्होंने वीडियो सबूत, हस्ताक्षरित शिकायत पत्र, और प्लॉट मालिकों की सूची पुलिस को सौंप दी है। बावजूद इसके, अभी तक पुलिस द्वारा कोई ठोस एक्शन नहीं लिया गया है। **निवासियों का कहना है कि दिन-प्रतिदिन उनका डर बढ़ता जा रहा है, क्योंकि किसी भी दिन रास्ता बंद किया जा सकता है।**

निवासियों की भावनात्मक अपील शिकायत पत्र में आठों परिवारों ने लिखा है कि उन्होंने "कड़ी मेहनत की कमाई से ये घर खरीदे हैं" और अब उन्हें "अपनी ही संपत्ति में आने-जाने से रोके जाने का भय सता रहा है।" उन्होंने प्रशासन से आग्रह किया है कि -

1. किसी भी अवरोध निर्माण को तत्काल रोका जाए।

2. सभी निवासियों की सुरक्षा और पहुंच सुनिश्चित की जाए।

3. अवैध रूप से रास्ता रोकने वालों पर कानूनी कार्रवाई की जाए।

क्या कहती है शिकायत की सूची शिकायत में शामिल परिवारों में डॉ. अभिलाष चौधरी, रेणुका कुमारी, दीपक सांगुरी, नवनीत शर्मा, कुमार मनीष, और उर्मिला यादव जैसे निवासी शामिल हैं। सभी ने अपने हस्ताक्षर कर पुलिस से त्वरित हस्तक्षेप की मांग की है।

अब उम्मीद पुलिस और प्रशासन से सोसाइटी के लोगों का कहना है कि यह मामला सिर्फ एक प्रॉपर्टी विवाद नहीं, बल्कि जन सुरक्षा का गंभीर प्रश्न है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ, तो वे सामूहिक रूप से उच्च अधिकारियों और अदालत की शरण लेंगे। दिल्ली जैसे व्यस्त शहर में जहां हर इंच जमीन कीमती है, वहीं कुछ लोग अपने पड़ोसियों की सुरक्षा और मानवीय दृष्टिकोण को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं। मायापुरी के ये आठ परिवार उम्मीद लगाए बैठे हैं कि पुलिस और प्रशासन उन्हें 'कैद' होने से पहले राहत देंगे।

"टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

क्या मिलेगा हमसे जुड़कर

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं — छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

SCAN ME

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत
tolwaindia@gmail.com
www.tolwa.com

रमा एकादशी व्रत आज

इस साल रमा एकादशी का व्रत शुक्रवार, 17 अक्टूबर 2025 को रखा जाएगा। हिंदू पंचांग के मुताबिक ये व्रत हर साल कार्तिक कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि पर आता है। इस दिन भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा का खास महत्व होता है। मान्यता है कि जो भी भक्त इस दिन पूरे नियम और श्रद्धा से व्रत करता है, उसे बैकुंठ धाम की प्राप्ति होती है और जीवन के सभी दुख-दर्द मिट जाते हैं।

रमा एकादशी की तिथि और मुहूर्त

========================

एकादशी तिथि की शुरुआतः 16 अक्टूबर सुबह 10:35 बजे

समाप्तिः 17 अक्टूबर सुबह 11:12 बजे

व्रत की तिथिः 17 अक्टूबर (उदयातिथि के अनुसार)

अभिजीत मुहूर्तः सुबह 11:43 बजे से दोपहर 12:29 बजे तक

अमृत कालः सुबह 11:26 बजे से दोपहर 1:07 बजे तक

पारण की तिथि और समयः 18 अक्टूबर सुबह 6:24 से 8:41 बजे तक

रमा एकादशी का महत्व

===================

शास्त्रों के अनुसार, रमा एकादशी का व्रत करने से व्यक्ति को हजार अश्वमेध यज्ञ के समान फल की प्राप्त होती है। इस व्रत को करने से व्यक्ति के जीवन के सभी पापों का नाश होता है। रमा एकादशी के दिन अनाज, प्याज, लहसुन और सरसों के तेज का सेवन वर्जित होता है। दिन भर व्रत रखकर महिलाएं शाम को भगवान विष्णु की पूजा करती हैं और रमा एकादशी की कथा सुनती है। अगले दिन शुभ मुहूर्त में जल अर्पित कर व्रत खोला जाता है।

रमा एकादशी पूजन विधि

=================

सुबह ब्रह्म मुहूर्त में स्नान करें और पीले या सफेद वस्त्र पहनें, क्योंकि ये रंग भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी को प्रिय हैं। पूजा स्थल पर गंगाजल छिड़ककर शुद्धिकरण करें। फिर दीप जलाकर भगवान विष्णु का पंचामृत से अभिषेक करें और उन्हें चंदन, फूल, तुलसीदल, मेवा और अक्षत अर्पित करें। इसके बाद माता लक्ष्मी की पूजा करें और रमा एकादशी कथा सुनें या पढ़ें।

पूजा के बाद आरती करें और "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" या "ॐ लक्ष्म्यै नमः" मंत्र का जप करें। अगले दिन विधि अनुसार ब्राह्मण या किसी जरूरतमंद को दान देकर व्रत का पारण करें।

रमा एकादशी व्रत कथा

====================

पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार महाराज युधिष्ठिर ने भगवान कृष्ण से पूछा कि कार्तिक महीने की एकादशी का क्या महत्व है। भगवान श्रीकृष्ण मुस्कुराए और बोले, "राजन, कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में जो एकादशी पड़ती है, उसे रमा एकादशी कहा जाता है। इस व्रत से मनुष्य के सारे पाप मिट जाते हैं और उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसकी एक बहुत सुंदर कथा है, सुनो- बहुत समय पहले राजा मुचुकुंद का राज्य था, जो भगवान विष्णु के बड़े भक्त और सत्यप्रिय शासक थे। उनके राज्य में हर कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी को लोग निर्जला व्रत रखते थे। राजा का नियम था कि इस दिन कोई भी खाना-पीना नहीं करेगा और सभी लोग व्रत का पालन करेंगे।

राजा की बेटी चंद्रभागा की शादी दूसरे राज्य के राजकुमार शोभन से हुई थी। शोभन का शरीर बहुत कमजोर था, लेकिन उसने राजा मुचुकुंद के नियम और भगवान पर विश्वास करते हुए व्रत रखने का निर्णय लिया। दिन भर भूख-प्यास सहने के बाद, द्वादशी तिथि की सुबह पारण से पहले ही शोभन की मृत्यु हो गई। चंद्रभागा बेहद दुखी हुई, लेकिन उसे भगवान पर भरोसा था। भगवान विष्णु ने शोभन की भक्ति देखकर उसे अगले जन्म में मंदराचल पर्वत का राजा बनाया। समय बीतने पर राजा मुचुकुंद मंदराचल आए और अपने दामाद को राजा बन देखा। उन्होंने ये बात चंद्रभागा को बताई। चंद्रभागा यह सुनकर बहुत खुश हुई और फिर उसने भी रमा एकादशी का व्रत किया और उसे भी पुण्य और फल प्राप्त हुआ। अंत में वह अपने पति के साथ फिर से सुखपूर्वक रहने लगी।

पराली जलाने की आग में झुलसता उत्तर भारत : समाधान किसानों और पर्यावरण दोनों के हित में

हर वर्ष अक्टूबर–नवंबर के महीनों में पंजाब और हरियाणा के खेतों से उठने वाला धुआँ दिल्ली सहित पूरे उत्तर भारत की साँसें रोक देता है। पराली जलाना किसानों की विवशता और नीतिनिर्माताओं की विफलता दोनों का परिणाम है। जब तक किसान के हित, कृषि की आवश्यकताएँ और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ जोड़कर देखा नहीं जाएगा, तब तक न तो प्रदूषण घटेगा और न ही ग्रामीण भारत को स्थायी आजीविका का मार्ग मिलेगा।

डॉ प्रियंका सौरभ

हर वर्ष जब धान की कटाई का मौसम आता है, तब पंजाब और हरियाणा के खेतों से उठने वाला धुआँ आसमान को धुंध से भर देता है। यह केवल खेतों की आग नहीं होती, बल्कि भारत की कृषि नीति, आर्थिक असमानता और पर्यावरणीय असंतुलन की जलती हुई तस्वीर होती है। दिल्ली तथा उसके आस-पास के क्षेत्र इस धुएँ से ढक जाते हैं और वायु गुणवत्ता अत्यंत गंभीर स्तर तक पहुँच जाती है।

कानूनी रूप से पराली जलाना प्रतिबंधित है, फिर भी किसान इसे हर साल दोहराते हैं क्योंकि इसके पीछे अनेक सामाजिक और आर्थिक कारण जुड़े हैं।

पराली जलाने का मूल कारण खेतों में बचा हुआ धान का ठूँठ होता है। जब धान की फसल कट जाती है, तब खेत में रह गए अवशेष को हटाने के लिए किसानों के पास न समय होता है न साधन। पंजाब और हरियाणा की कृषि व्यवस्था मुख्य रूप से धान और गेहूँ पर आधारित है। सन 1960 के दशक की हरित क्रांति ने इन राज्यों को देश का अन्न भंडार तो बना दिया, परंतु कृषि को एकरूपी और जल–प्रधान भी बना दिया। भूजल के अत्यधिक दोहन को रोकने के लिए सन २००9 में पंजाब में "उप–जल संरक्षण अधिनियम" लागू किया गया, जिसके अंतर्गत धान की रोपाई जून के अंत तक करने का निर्देश दिया गया ताकि मानसूनी वर्षा का लाभ लिया जा सके।

परिणामस्वरूप धान कटाई और गेहूँ की बुवाई के बीच केवल दस से बीस दिन का अंतर रह गया। इतने कम समय में किसान पराली को एकत्रित या सड़ाकर खेत तैयार नहीं कर सकते, इसलिए वे सबसे तेज़ और सस्ता उपाय—जलाना—चुन लेते हैं।

दूसरा बड़ा कारण आर्थिक है। पराली हटाने या निपटाने के लिए जो मशीनें चाहिए—जैसे सुपर स्ट्रॉ प्रबंधन प्रणाली, हैप्पी सीडर, बेलर या रोटावेटर—वे अत्यंत महँगी हैं। छोटे और सीमांत किसान जिनकी जोत तीन हेक्टेयर से भी कम है, वे इन मशीनों को खरीदने या किराए पर लेने में असमर्थ हैं। उदाहरण के लिए, हैप्पी सीडर का किराया लगभग दो से तीन हज़ार रुपये प्रति एकड़ पड़ता है, जबकि पराली जलाने में केवल माचिस और थोड़े डीज़ल का खर्च आता है। यही व्यावहारिकता इस समस्या को गहराई तक जकड़े हुए है।

तीसरा कारण पराली का कम उपयोग मूल्य है। पंजाब और हरियाणा में बोई जाने वाली अधिकतर धान की किस्में साधारण होती हैं, जिनमें सिलिका की मात्रा अधिक होती है। ऐसी पराली पशु चारे के रूप में प्रयोग योग्य नहीं होती और न ही इससे जैव ईंधन या खाद आसानी से बनाई जा सकती है। पूर्वी भारत के राज्यों में धान की पराली पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग में आती है, परंतु पंजाब–हरियाणा में यह उपयोग सीमित है। इसीलिए यहाँ पराली किसानों के लिए किसी आर्थिक लाभ का साधन नहीं बन पाती।

चौथा कारण है श्रम की कमी और जोत का विखंडन। प्रवासी मजदूरों की संख्या घट रही है, और छोटे खेतों में मशीनरी लगाने की क्षमता नहीं है। समय की कमी और श्रमिकों के अभाव में किसान अगली फसल बोने की जल्दी में पराली को जला देते हैं।

सामाजिक दृष्टि से भी पराली जलाना वर्षों से एक स्वीकृत प्रक्रिया बन चुकी है। किसानों को यह लगता है कि खेत की सफाई का यही सबसे आसान और पारंपरिक तरीका है।

कानूनों और जुर्मानों के बावजूद यह प्रथा इसलिए जारी है क्योंकि प्रवर्तन ढीला है और राजनीतिक दबावों के कारण प्रशासन कठोर कार्रवाई नहीं कर पाता। वर्ष २०२३ में पंजाब में लगभग साठ हज़ार पराली जलाने की घटनाएँ दर्ज की गईं, जबकि जुर्माना और निगरानी दोनों व्यवस्था में थे।

अब प्रश्न यह है कि इस समस्या का स्थायी समाधान क्या हो सकता है?

स्पष्ट है कि केवल प्रतिबंध या दंड इस समस्या को समाप्त नहीं कर सकते। आवश्यक है कि ऐसी रणनीति अपनाई जाए जो किसान की आजीविका और पर्यावरण संरक्षण दोनों को साथ लेकर चले।

पहला समाधान है फसल विविधीकरण। पंजाब और हरियाणा की भूमि लगातार धान–गेहूँ चक्र से थक चुकी है। जल स्तर भी नीचे जा रहा है। अतः मक्का, दलहन, तिलहन और बागवानी फसलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इन फसलों के लिए यदि सरकार न्यूनतम समर्थन मूल्य, बीमा सुरक्षा और निश्चित खरीद सुनिश्चित करे तो किसान धीरे-धीरे धान पर निर्भरता कम कर सकते हैं। हरियाणा की "भावांतर भरपाई योजना" इस दिशा में एक अच्छा उदाहरण है, जिसमें किसानों को मूल्य अंतर की भरपाई दी जाती है।

दूसरा समाधान है यंत्रीकरण और साझा संसाधन। किसानों को मशीनें साझा उपयोग के लिए उपलब्ध कराई जाएँ। पंचायत या सहकारी समितियों के स्तर पर "कस्टम हायरिंग केंद्र" स्थापित हों, जहाँ से किसान कम किराए पर हैप्पी सीडर या सुपर स्ट्रॉ प्रबंधन प्रणाली जैसी मशीनें ले सकें। केंद्र सरकार की "फसल अवशेष प्रबंधन योजना" के अंतर्गत पंजाब और हरियाणा में एक लाख से अधिक मशीनें बाँटी गई हैं, पर इनकी पहुँच सभी किसानों तक नहीं हो पाई है। यदि हर गाँव में सामुदायिक यांत्रिक केंद्र बने, तो किसान पराली जलाने से बचेंगे।

तीसरा उपाय है पराली का औद्योगिक उपयोग। पराली को कचरा न मानकर एक संसाधन के रूप में देखा जाए। इससे जैव ऊर्जा, एथेनॉल, कागज़, पैकेजिंग और निर्माण सामग्री तैयार की जा सकती है। उदाहरण के लिए, भारतीय तेल निगम की पानीपत जैव रिफाइनरी प्रतिवर्ष लगभग दो लाख टन पराली से एथेनॉल बनाती है। यदि इस प्रकार की परियोजनाएँ हर जिले में स्थापित हों तो पराली किसानों के लिए आय का स्रोत बनेगी और जलाने की आवश्यकता कम होगी। सरकार को परिवहन सहायता, खरीद अनुबंध और स्थायी बाज़ार उपलब्ध कराने की नीति बनानी चाहिए।

चौथा कदम होना चाहिए कृषि–पर्यावरणीय समय निर्धारण। धान की छोटी अवधि वाली किस्में जैसे पी.आर.–१२६ या डी.आर.आर. धान–44 अपनाने से किसानों को फसल कटाई और बुवाई के बीच कुछ अतिरिक्त दिन मिल सकते हैं। इस समय का उपयोग पराली प्रबंधन में किया जा सकता है।

इसके साथ–साथ परिशुद्ध कृषि यानी सटीक तकनीकी साधनों का प्रयोग, जल–सिंचाई प्रणाली में सुधार और जैविक खाद उपयोग से भी पर्यावरणीय लाभ मिलेगा।

पाँचवाँ, सामुदायिक प्रोत्साहन और जनजागरूकता। पराली न जलाने वाले किसानों को आर्थिक प्रोत्साहन दिया जाए, गाँव स्तर पर प्रतियोगिता आयोजित हो और "शून्य दहन ग्राम" घोषित किए जाएँ। दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में "पुसा डीकंपोज़र" नामक जैविक घोल के प्रयोग से पराली को खेत में ही खाद में बदला जा रहा है। यदि इस तकनीक को बड़े पैमाने पर अपनाया जाए तो पराली जलाने की आवश्यकता नहीं बचेगी।

छठा, प्रशासनिक तालमेल और नीति–समन्वय। केंद्र तथा राज्य सरकारों के बीच सामंजस्य होना चाहिए ताकि कृषि, पर्यावरण और ऊर्जा विभाग एक साझा योजना के अंतर्गत काम करें। पराली प्रबंधन को ग्रामीण रोजगार योजना, जैव ऊर्जा मिशन और जलवायु परिवर्तन कार्यक्रमों से जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए, मनरेगा के अंतर्गत पराली एकत्रीकरण या जैव खाद इकाइयों में कार्य को रोजगार से जोड़ा जा सकता है।

सातवाँ, शहरी–ग्रामीण सहभागिता भी इस दिशा में उपयोगी होगी। दिल्ली जैसे महानगर जहाँ प्रदूषण का सबसे अधिक प्रभाव होता है, उन्हें अपने सामाजिक उत्तरदायित्व निधि के माध्यम से पंजाब–हरियाणा के किसानों को आर्थिक सहायता प्रदान करनी चाहिए। इससे प्रदूषण के स्रोत और पीड़ित क्षेत्र के बीच साझा जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी।

इसके साथ-साथ तकनीकी निगरानी प्रणाली को भी सशक्त बनाना चाहिए। उपग्रह आधारित आँकड़ों से पराली जलाने की घटनाओं की त्वरित जानकारी मिल सकती है, जिससे स्थानीय प्रशासन समय रहते हस्तक्षेप कर सके। परंतु यह हस्तक्षेप केवल दंडात्मक न होकर सहयोगात्मक होना चाहिए।

इन सभी उपायों का उद्देश्य यह है कि किसान को दोषी नहीं बल्कि भागीदार बनाया जाए। किसान पराली इसलिए जलाते हैं क्योंकि उनके पास व्यावहारिक विकल्प नहीं हैं। जब उन्हें ऐसे विकल्प मिलेंगे जो सस्ते, लाभकारी और पर्यावरण के अनुकूल हों, तो वे स्वयं इस समस्या के समाधान का हिस्सा बनेंगे।

अंततः यह समझना होगा कि पराली जलाना केवल पर्यावरणीय संकट नहीं बल्कि सामाजिक–आर्थिक असंतुलन का परिणाम है। इसे रोकने के लिए किसानों के कल्याण, नीति सुधार और तकनीकी समर्थन का समन्वय आवश्यक है। यदि पराली को ऊर्जा, उद्योग और जैविक खाद के रूप में उपयोग में लाया जाए, तो यह प्रदूषण का कारण नहीं बल्कि विकास का साधन बन सकती है।

पराली जलाने की समस्या का समाधान केवल प्रतिबंधों और दंड से नहीं, बल्कि संवेदनशील नीति, किसानों की सहभागिता और तकनीकी नवाचार से निकलेगा। जब फसल विविधीकरण, यंत्रीकरण, पराली का औद्योगिक उपयोग और सामुदायिक प्रोत्साहन एक साथ काम करेंगे, तब ही स्वच्छ वायु और सुरक्षित कृषि दोनों संभव होंगी। यह संतुलन ही उत्तर भारत को पराली की आग से मुक्त करने और टिकाऊ कृषि विकास की दिशा में अग्रसर करने का एकमात्र मार्ग है।

विद्वानों/सदाचारियों का मार्ग सत्य से परिपूर्ण होता है जिससे वह आप्तकाम होतें हैं...

वह जहां पहुंचते हैं वह भी सत्य हो जाता है अर्थात सत्य ही पथ है, सत्य ही मंजिल है। निष्काम आदमी उसी पथ पर चलता है यद्यपि सकाम व्यक्ति नहीं चल सकता। सकाम व्यक्ति लड़खड़ा जाता है। जो सत्यपथ पर चलता है उसका कोई/क्या/कितना बिगाड़ सकता है? व्यक्ति जो भीतर से कंपित/अविवेकी/कमजोर रहता है, वह पल-पल असत्य का सहारा लेता है। यदि हम ईश्वर को जानते हैं और ईश्वर हमें जानता है तो अन्य लोग हमें जानें या न जानें, तो कोई फर्क नहीं पड़ता। ध्यान रहे कि यदि हम अपने को ठीक से जानते/पहचानते हैं, अपनी आत्मा/अपने चरित्र को पहचानते हैं, अपना निरीक्षण करते हैं, यदि हम ठीक हो रहें हैं और सारी दुनिया हमें ठीक न भी समझे तो कोई नुकसान नहीं है। इसके विपरीत हम ठीक नहीं हैं और सारी दुनिया हमें अच्छा समझे तो क्या ही फायदा? समाज हमें क्या कहता/मानता/जानता हैं और क्या नहीं मानता, इससे क्या/कितना लाभ होगा हमें? इस संसार में अच्छे-अच्छों को भी बुराईयां/निंदायें झेलनी पड़ीं हैं तो हम क्या चीज़ हैं? यदि यह बात हमें भीतर तक समझ आ गई तो हम अपने समय को, भीतर सत्य के संचार में संलग्न करने लगेंगें।

जहाँ चेतना, करुणा और कौशल, तीनों का संतुलन हो, वह त्रिमूर्ति मिलकर नया युग बना सकती है

जहाँ चेतना, करुणा और कौशल, तीनों का संतुलन हो, वह त्रिमूर्ति मिलकर नया युग बना सकती है

जिसमें विज्ञान की आंखें हों, अध्यात्म का हृदय हो और तकनीक के हाथ हों। यह तीनों मिलकर एक ही यात्रा को पुष्ट कर सकतें हैं। जबतक हम इन तीनों में से, किसी एक को पकड़ने या किसी एक को छोड़ने की धारणा से ग्रसित हैं हम अस्तित्व के सूक्ष्म/मूल तल तक नहीं जा पायेंगें। ध्यान रहे कि मानव सभ्यता की यात्रा इन तीन महान शक्तियों के इर्द-गिर्द घूमती है, विज्ञान, अध्यात्म और तकनीक। विज्ञान हमें ब्रह्मांड की बाह्य गहराइयों तक ले जाता है। वहीं अध्यात्म हमें आत्मा की अंतर्ज्ञान यात्रा में डुबो देता है और तकनीक वह सेतु है, जो इन दोनों को जोड़ने में सक्षम है। विज्ञान वस्तु में ₹क्या/कैसे₹ की खोज है। वह उस ऊर्जा की खोज, उसके अवलोकन, प्रयोग, निष्कर्ष और कारण-नियम, जैसे गुरुत्वाकर्षण, प्रकाश, डीएनए, ब्रह्मांड के विस्तार को समझाता है। यद्यपि अध्यात्म, मौन में उतरकर अस्तित्व की गहराइयों में जाकर पूछता है कि ₹मैं कौन हूँ?₹ बिना किसी प्रयोगशाला/इंस्ट्रुमेंट के, केवल श्वास, ध्यान, प्रेम और चैतन्य द्वारा अपने अनुभव जन्य उस सत्य के द्वारा देखता है, जो केवल स्वयं के भीतर प्रकट होता है। जबकि तकनीक विज्ञान की संतान, जो मनुष्य को चंद्रमा पर भी पहुँचा देती है और साथ ही अध्यात्म को एक बटन पर संगीतमय ध्यान तक पहुँचा देती है। तकनीक अद्भुत संगम है दोनों अतियों को मध्य में उतारने की कला है। होश रहे कि विज्ञान और अध्यात्म, दोनों एक ही सत्य की दो दिशाएँ/पहलूं हैं। जब विज्ञान नम्र/हृदयंगम होता है, तो वह अध्यात्म बन जाता है। और जब अध्यात्म विवेकपूर्ण/तर्कपूर्ण होता है, तो वह विज्ञान हो जाता है। इस अस्तित्व में कोई किसी के विपरीत नहीं है। यह परोक्ष-अपरोक्ष रूप से, एक-दूसरे को गति/तीव्रता देने के लिए मात्र विरोधाभासी प्रतीत होतें हैं वस्तुतः हैं नहीं।

माँ लक्ष्मी और श्री गणेश का आपस में क्या रिश्ता है और दीपावली पर इन दोनों की पूजा क्यों होती है?

लक्ष्मी जी जब सागर मन्थन में मिलीं, और भगवान विष्णु से विवाह किया, तो उन्हें सृष्टि की धन और ऐश्वर्य की देवी बनाया गया! तो उन्होंने धन को बाँटने के लिए मैनेजर कुबेर को बनाया!

कुबेर कुछ कंजूस वृति के थे! वे धन बाँटते नहीं थे, सवयं धन के भंडारी बन कर बैठ गए!

माता लक्ष्मी परेशान हो गई! उनकी सन्तान को कृपा नहीं मिल रही थी!

उन्होंने अपनी व्यथा भगवान विष्णु को बताई! भगवान विष्णु ने उन्हें कहा, कि ₹तुम मैनेजर बदल लो!"

माँ लक्ष्मी बोली, ₹यक्षों के राजा कुबेर मेरे परम भक्त हैं! उन्हें बुरा लगेगा!"

तब भगवान विष्णु ने उन्हें श्री गणेश जी की दीर्घ और विशाल बुद्धि को प्रयोग करने की सलाह दी!

माँ लक्ष्मी ने श्री गणेश जी को "धन का डिस्ट्रीब्यूटर₹ बनने को कहा!

श्री गणेश जी ठहरे महा बुद्धिमान! वे बोले, ₹माँ, मैं जिसका भी नाम बताऊंगा, उस पर आप कृपा कर देना! कोई किंतु, परन्तु नहीं! माँ लक्ष्मी ने हाँ कर दी!

अब श्री गणेश जी लोगों के सौभाग्य के विघ्न/रुकावट को दूर कर उनके लिए धनागमन के द्वार खोलने लगे!

कुबेर भंडारी ही बनकर रह गए! श्री गणेश जी पैसा सैंक्शन करवाने वाले बन गए!

गणेश जी की दरियादिली देख, माँ लक्ष्मी ने अपने मानस पुत्र श्री गणेश को आशीर्वाद दिया, कि जहाँ वे अपने पति नारायण के सँग ना हों, वहाँ उनका पुत्रवत गणेश उनके साथ रहें!

दीपावली आती है कार्तिक अमावस्या को! भगवान विष्णु उस समय योगनिद्रा में होते हैं! वे जागते हैं ग्यारह दिन बाद, देव उठावनी एकादशी को!

माँ लक्ष्मी को पृथ्वी भ्रमण करने आना होता है शरद पूर्णिमा से दीवाली के बीच के पन्द्रह दिनों में, तो वे सँग ले आती हैं श्री गणेश जी को! इसलिए दीपावली को लक्ष्मी-गणेश की पूजा होती है!

3 वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित व्यायाम जो मस्तिष्क में 'नई कोशिकाओं' की वृद्धि में मदद करते हैं

पिछले कुछ दशकों में विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य का मस्तिष्क केवल बचपन तक ही नई कोशिकाएँ नहीं बनाता, बल्कि वयस्क अवस्था में भी नई मस्तिष्क कोशिकाएँ (Brain Cells) बनती हैं — इस प्रक्रिया को कहा जाता है हिप्पोकैम्पल न्यूरोजेनेसिस (Hippocampal Neurogenesis)।

मस्तिष्क का हिप्पोकैम्पस भाग — जो स्मृति, सीखने, भावनाओं और दिशा ज्ञान से जुड़ा है — नई कोशिकाओं के निर्माण का प्रमुख केंद्र है। शोध बताते हैं कि व्यायाम (Exercise) इस प्रक्रिया को सबसे प्रभावी ढंग से सक्रिय करता है।

हालांकि, हर प्रकार का व्यायाम समान प्रभाव नहीं डालता। उसकी प्रकार, तीव्रता, नियमितता और मानसिक संलग्नता (Cognitive engagement) से बहुत फर्क पड़ता है। यहाँ तीन ऐसे प्रमाणित व्यायाम बताए जा रहे हैं जो नई मस्तिष्क कोशिकाओं की वृद्धि में सहायक हैं।

1. ड्यूल-टास्क वॉकिंग — "शरीर और मस्तिष्क दोनों का अभ्यास"

क्या है:

ड्यूल-टास्क वॉकिंग का अर्थ है चलते हुए किसी मानसिक कार्य को भी करना — जैसे उल्टी गिनती करना, सरल गणना करना, या किसी श्रेणी के शब्द बोलना।

शोध क्या कहता है:

२०२० के एक अध्ययन में चार समूह बनाए गए —

एक समूह जिसने एरोबिक और मानसिक दोनों अभ्यास साथ किए,
एक केवल एरोबिक,
एक केवल मानसिक अभ्यास,
और एक नियंत्रण समूह।

परिणाम यह निकला कि दोनों प्रकार के अभ्यास करने वाले समूह की मानसिक क्षमता में दुगुना सुधार हुआ।

क्यों प्रभावी है:

यह व्यायाम मस्तिष्क के दोनों हिस्सों को सक्रिय करता है, जिससे ध्यान, स्मृति और समन्वय क्षमता में वृद्धि होती है।

२. रेज़िस्टेंस ट्रेनिंग — "शरीर की शक्ति, मस्तिष्क की सुरक्षा"

क्या है:

इसमें शरीर की मांसपेशियों को किसी प्रतिरोध (Resistance) के विरुद्ध काम कराया जाता है — जैसे डम्बल, रेज़िस्टेंस बैंड, बॉडीवेट एक्सरसाइज़ या मशीनों से व्यायाम।

शोध क्या कहता है:

'Effects of Resistance Exercise on Neuroprotective Factors' शीर्षक वाली एक समीक्षा में पाया गया कि यह व्यायाम BDNF और IGF-1 जैसे न्यूरो-प्रोटेक्टिव तत्वों को बढ़ाता है, जो मस्तिष्क की कोशिकाओं को पोषण और सुरक्षा प्रदान करते हैं।

क्यों प्रभावी है:

यह न केवल मांसपेशियों को मजबूत करता है बल्कि मस्तिष्क के कार्यों को तीव्र, केंद्रित और दीर्घकालिक रूप से स्वस्थ रखता है।

३. पैर के व्यायाम — "मस्तिष्क की शक्ति की नींव"

क्या है:

पैरों की मांसपेशियाँ शरीर की सबसे बड़ी होती हैं। इनके व्यायाम — जैसे चलना, सीढ़ियाँ चढ़ना, साइकिल चलाना या स्क्वैट्स करना — पूरे शरीर और मस्तिष्क दोनों को लाभ पहुंचाते हैं।

शोध क्या कहता है:

कई अध्ययनों ने दर्शाया कि पैरों से जुड़े सहनशक्ति वाले व्यायाम बुज़ुर्गों की स्मरण शक्ति और मानसिक कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं। इनसे रक्त संचार सुधरता है और मस्तिष्क को अधिक ऑक्सीजन व पोषण मिलता है।

क्यों प्रभावी है:

पैरों की गतिविधि से शरीर में ऐसे रसायन बनते हैं जो नई मस्तिष्क कोशिकाओं के निर्माण और मस्तिष्क की लचीलापन (Neuroplasticity) को बढ़ावा देते हैं।

व्यायाम कैसे बढ़ाता है मस्तिष्क कोशिकाएँ

व्यायाम से मस्तिष्क में निम्न कारक बढ़ते हैं —

BDNF (Brain-Derived Neurotrophic Factor)
IGF-1 (Insulin-Like Growth Factor 1)
VEGF (Vascular Endothelial Growth Factor)

ये तत्व नई कोशिकाओं के निर्माण, रक्त वाहिकाओं की वृद्धि और सूजन व ऑक्सीडेटिव तनाव को कम करने में मदद करते हैं — जिससे मस्तिष्क स्वस्थ और सक्रिय बना रहता है।

निष्कर्ष

मजबूत पैर, रेज़िस्टेंस ट्रेनिंग और ड्यूल-टास्क वॉकिंग — ये केवल शरीर को नहीं, बल्कि मस्तिष्क को भी सक्रिय और युवा रखते हैं। यदि आप इन्हें अपने साप्ताहिक रूटीन में शामिल करें, तो थोड़े-थोड़े समय का अभ्यास भी दीर्घकाल में आपकी स्मरण शक्ति, ध्यान और भावनात्मक संतुलन को मजबूत बना सकता है। शरीर को प्रशिक्षित करें — मस्तिष्क स्वयं प्रशिक्षित हो जाएगा।

अगर गले में हमेशा खराश बनी रहती है तो इसे हल्के में न लें.?

मौसम का बदलाव या सर्द-गर्म की वजह से इसे एक आम परेशानी न समझें।

गले की खराश टॉन्सिल या गले का गंभीर संक्रमण भी हो सकता है।

कैसे निबटें इस परेशानी से:-

मौसम बदलते ही गले में खराश होना आम बात है।

इसमें गले में कांटे जैसी चुभन, खिचखिच और बोलने में तकलीफ जैसी समस्याएं आती हैं।

ऐसा बैक्टीरिया और वायरस के कारण होता है।

कई बार गले में खराश की समस्या एलर्जी और धूम्रपान के कारण भी होती है।

गले के कुछ संक्रमण तो खुद-ब-खुद ही ठीक हो जाते हैं, लेकिन कुछ मामलों में इलाज की ही जरूरत पड़ती है।

आमतौर पर लोग गले की खराश को आम बात समझ कर इस समस्या को अनदेखा कर देते हैं।

लेकिन गले की किसी भी परेशानी को यूं ही नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

ये गंभीर बीमारी का रूप ले सकती है।

गले में खराश गले का इंफेक्शन है, जिसमें गले से कर्कश आवाज, हल्की खांसी, बुखार, सिरदर्द, थकान और गले में दर्द खासकर निगलने में परेशानी होती है।

हमारे गले में दोनों तरफ टॉन्सिल्स होते हैं, जो कीटाणुओं, बैक्टीरिया और वायरस को हमारे गले में जाने से रोकते हैं, लेकिन कई बार जब ये टॉन्सिल्स खुद ही संक्रमित हो जाते हैं, तो इन्हें टॉन्सिलाइटिस कहते हैं।

इसमें गले के अंदर के दोनों तरफ के टॉन्सिल्स गुलाबी व लाल रंग के दिखाई पडम्ते हैं।

ये थोड़े बड़े और ज्यादा लाल होते हैं।

कई बार इन पर सफेद चकत्ते या पस भी दिखाई देता है।

वैसे तो टॉन्सिलाइटिस का संक्रमण उचित देखभाल और एंटीबायोटिक से ठीक हो जाता है, लेकिन इसका खतरा तब अधिक बढ़ जाता है, जब यह संक्रमण स्ट्रेप्टोकॉक्कस हिमोलिटीकस नामक बैक्टीरिया से होता है।

तब यह संक्रमण हृदय एवं गुर्दे में फैलकर खतरनाक बीमारी को जन्म दे सकता है।

नमक के गुनगुने पानी से गरारे करें। इससे गले में आराम मिलेगा।

अदरक, इलायची और काली मिर्च वाली चाय गले की खराश में बेहद आराम पहुंचाती है। साथ ही इस चाय में जीवाणुरोधक गुण भी हैं। इस चाय को नियमित रूप से पीने से गले को आराम मिलता है और खराश दूर होती है।

धूम्रपान न करें और ज्यादा मिर्च-मसाले वाला भोजन न लें।

खान-पान में विशेष तौर पर परहेज बरतें। फ्रिज का ठंडा पानी न पिएं, न ही अन्य ठंडी चीजें खाएं। एहतियात ही इस परेशानी का हल है।

गले का संक्रमण आमतौर पर वायरस और बैक्टीरिया के कारण होता है।

इसके अलावा फंगल इंफेक्शन भी होता है, जिसे ओरल थ्रश कहते हैं।

किसी खाने की वस्तु, पेय पदार्थ या दवाइयों के विपरीत प्रभाव के कारण भी गले में संक्रमण हो सकता है।

इसके अलावा गले में खराश की समस्या अनुवांशिक भी हो सकती है।

खानपान में त्रुटियां जैसे ठंडे, खट्टे, तले हुए एवं प्रिजर्वेटिव खाद्य पदार्थों को खाने और मुंह व दांतों की साफ सफाई न रखने के कारण भी गले में सक्रमण की आशंका कई गुना बढ़ जाती है।

घाव जो दिखते नहीं, पर जीने नहीं देते

जब एक सामान्य सुबह अचानक खून और चीखों में डूब जाती है, जब हँसी की गूँज दहशत में बदल जाती है, और दुनिया का हर कोना युद्धक्षेत्र सा प्रतीत होता है, तब आघात अपना विकराल रूप प्रकट करता है। यह केवल शारीरिक चोट नहीं, बल्कि एक ऐसी आंधी है जो आत्मा को चीरती हुई मन की गहराइयों में उतर जाती है, जहाँ से निकलना लगभग असंभव सा लगता है। हर साल 17 अक्टूबर को विश्व आघात दिवस हमें इस कठोर सत्य से रूबरू कराता है कि आघात सिर्फ दुर्घटनाओं या हिंसा का परिणाम नहीं, बल्कि एक ऐसी अदृश्य महामारी है जो चुपके-चुपके लाखों ज़िंदगियों को निगल लेती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल लगभग 50 लाख लोग सड़क हादसों, युद्धों, प्राकृतिक आपदाओं और हिंसा की भेंट चढ़ते हैं। जो बच जाते हैं, वे अक्सर जीवित लाश बनकर रह जाते हैं—पोस्ट-ट्रॉमैटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (पीटीएसडी) की चपेट में, जहाँ हर रात पुराने ज़ख्म ताज़ा होकर तड़पाते हैं।

आघात की यह दुनिया इतनी गहन और जटिल है कि हम अक्सर इसके सतही रूपों—जैसे भारत में हर घंटे होने वाली सड़क दुर्घटनाओं या युद्ध के मैदानों से लौटे सैनिकों के मन में बसी बमों की गूँज—तक ही सीमित रह जाते हैं। मगर गहराई में झाँकें तो एक और अनदेखा सच सामने आता है: अंतर-पीढ़ीगत आघात, जो पीढ़ियों तक चुपचाप फैलता रहता है। विज्ञान बताता है कि आघात डीएनए स्तर पर भी असर डाल सकता है—एपिजेनेटिक बदलावों के ज़रिए, जहाँ माता-पिता के दर्दनाक अनुभव बच्चों के जीन एक्सप्रेशन को प्रभावित करते हैं, बिना किसी प्रत्यक्ष घटना के। यह वह अनसुनी सच्चाई है जो आघात को निजी पीड़ा से सामूहिक विरासत में बदल देती है। विश्व आघात दिवस हमें यही याद दिलाता है कि हमारा दर्द अकेला नहीं, बल्कि इतिहास की गहरी जड़ों से जुड़ा है, जो हमें न केवल समझने, बल्कि सामूहिक रूप से इससे उबरने की प्रेरणा देता है।

भारत में आघात की चुनौतियाँ न केवल गहरी, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जटिलताओं से घिरी हैं, जो इसे और भी विकराल बनाती हैं। सांस्कृतिक कलंक और मानसिक स्वास्थ्य संसाधनों की भयावह कमी मिलकर एक घातक संकट पैदा करते हैं। सड़क हादसों की मार से लेकर घरेलू हिंसा और दहेज हत्याओं तक, ये घटनाएँ सिर्फ़ शरीर को ही नहीं चोटिल करतीं, बल्कि मन को भी खंड-खंड कर देती हैं। एक अध्ययन के अनुसार, भारत में लगभग 30% महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार होती हैं। बच्चों पर पड़ने वाला आघात—स्कूलों में धमकियाँ, यौन शोषण या माता-पिता की अनुपस्थिति—एक ऐसा अनछुआ क्षेत्र है, जिसके दीर्घकालिक प्रभाव विनाशकारी हैं। बाल मनोविज्ञान विशेषज्ञ बताते हैं कि बचपन का ट्रॉमा वयस्कता में हृदय रोग, मधुमेह, और यहाँ तक कि कैंसर जैसी बीमारियों का जोखिम बढ़ाता है, क्योंकि तनाव हार्मोन कोर्टिसोल का अत्यधिक स्राव प्रतिरक्षा प्रणाली को कमज़ोर कर देता है।

चिकित्सा विज्ञान में आघात का उपचार अब सर्जरी तक सीमित नहीं है। न्यूरोसाइंस ने खुलासा किया है कि ट्रॉमा मस्तिष्क के अमिग्डाला (भय केंद्र) को अतिसक्रिय बनाता है और हिप्पोकैंपस (स्मृति केंद्र) को सिकोड़ देता है, जिससे पीड़ित बार-बार फ्लैशबैक और दर्दनाक यादों के चक्र में फँस जाते हैं। कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी (सीबीटी) जैसे पारंपरिक उपचारों के साथ-साथ, अब एमडीएमए-असिस्टेड साइकोथेरेपी जैसी नवाचारपूर्ण विधियाँ उभर रही हैं, जो नियंत्रित वातावरण में ट्रॉमा को फिर से प्रोसेस करने में मदद करती हैं। लेकिन भारत जैसे देश में ऐसी उन्नत सुविधाएँ गिने-चुने लोगों तक ही सीमित हैं। दूसरी ओर, हमारी सांस्कृतिक विरासत में योग और ध्यान जैसे प्राचीन उपाय आघात से उबरने में चमत्कारी सिद्ध हो रहे हैं। शोध बताते हैं कि प्राणायाम तनाव हार्मोन को कम करता है और मस्तिष्क की न्यूरोप्लास्टिसिटी को बढ़ाता है, जिससे दिमाग खुद को ठीक करने में सक्षम होता है। साथ ही, पशु-सहायता चिकित्सा—जैसे कुत्तों या घोड़ों के साथ इंटरैक्शन—ट्रॉमा सर्वाइवर्स में ऑक्सीटोसिन (बॉन्डिंग हार्मोन) का स्तर बढ़ाकर विश्वास और भावनात्मक स्थिरता को पुनर्जनन करती है, जैसा कि युद्धग्रस्त क्षेत्रों में देखा गया है।

समाज आघात रिकवरी में एक मूक लेकिन शक्तिशाली भूमिका निभाता है, जो अक्सर अनदेखी रह जाती है। ट्रॉमा-इन्फॉर्म्ड केयर का वैश्विक सिद्धांत सिखाता है कि शिक्षक, पुलिस, या पड़ोसी—हर सहायक को ट्रॉमा के संकेत पहचानने और बिना आलोचना के समर्थन देने की कला सिखानी होगी। भारत में, केरल की बाढ़ या उत्तराखंड के भूकंप जैसी आपदाओं के बाद, सामुदायिक पुनर्वास ने साबित किया कि समूह कला चिकित्सा—जैसे चित्रकारी, नृत्य या कथाकथन—शब्दों के बिना दर्द को व्यक्त करने का मार्ग खोलती है। मगर एक कटु सत्य यह भी है कि लैंगिक असमानता आघात को और गहरा करती है। पुरुषों में ट्रॉमा आक्रामकता बनकर उभरता है, जबकि महिलाएँ अवसाद में डूब जाती हैं। समाज पुरुषों पर ₹मजबूत₹ बने रहने का दबाव डालता है, जिससे वे मदद माँगने से कतराते हैं।

एक और अनछुआ पहलू है जलवायु परिवर्तन और आघात का गहरा नाता। बढ़ते चक्रवात, सूखा और बाढ़ सिर्फ़ भौतिक तबाही नहीं लाते, बल्कि ₹इको-ट्रॉमा₹ जन्म देते हैं—एक ऐसी पीड़ा, जहाँ लोग अपनी जमीन, संस्कृति और पहचान खो बैठते हैं। बांग्लादेश के तटों से लेकर भारत के आदिवासी क्षेत्रों तक, यह दर्द फैल रहा है, जहाँ विस्थापन पवित्र भूमि से जुड़ी सांस्कृतिक जड़ों को उखाड़ देता है। शोध बताते हैं कि जलवायु आपदाएँ पीटीएसडी के मामलों को 30-50% तक बढ़ा देती हैं, खासकर उन समुदायों में जो अपनी विरासत खो चुके हैं।

विश्व आघात दिवस हमें सिखाता है कि आघात टूटना नहीं, बल्कि पुनर्जनन का अवसर है। ट्रॉमा से गुजरने वाला व्यक्ति न केवल जीवित रहता है, बल्कि अधिक करुणामय और लचीला बनकर उभरता है—सच्ची रेजिलिएंस की मिसाल। हमें शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को शामिल करना होगा, अस्पतालों में मानसिक ट्रॉमा वार्ड्स स्थापित करने होंगे, और समाज से कलंक का उन्मूलन करना होगा। करुणा ही सबसे बड़ा उपचार है—जब हम किसी टूटे मन को गले लगाते हैं, तो हम अपनी समग्र मानवता को पुनर्जनन करते हैं। आघात हमें तोड़ सकता है, लेकिन समझ और समर्थन हमें और मजबूत बनाता है, एक ऐसी दुनिया की नींव रखते हुए जहाँ कोई दर्द अकेला न रहे। विश्व आघात दिवस यही वादा है: हम साथ हैं, और हम हर ज़ख्म को सहारा देंगे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत",

डीटीसी बचाओ अभियान का 11वां दिन

नई दिल्ली संवाददाता - पंकज शर्मा

डीटीसी बचाओ अभियान के ग्यारहवें दिन आज गुरुवार को भारतीय मजदूर संघ के नोएडा डिपो से पदाधिकारी विकास कुमार शर्मा व अन्य कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों ने दिल्ली के गांधीनगर विधानसभा से लोकप्रिय बीजेपी विधायक और जो पूर्व में दिल्ली के परिवहन मंत्री भी रहे श्री अरविंदर सिंह लवली जी को कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की मांगों का ज्ञापन पत्र सौंपा,विधायक जी की तरफ से कर्मचारियों को पूरी तरीके से आश्वासन मिला कि दिल्ली के परिवहन विभाग में कार्य कर रहे सभी कर्मचारियों की तरफ से पूरा सहयोग करने में मदद करूंगा, तथा विभाग में चल रही कमियों को दूर कराने में अवश्य सहयोग करूंगा साथ ही कहा कि मैं पूर्व में परिवहन मंत्री भी रहा हूं जिससे परिवहन विभाग की मुझे पूरी जानकारी भी है, DTC कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों की समस्याओं को मैं वर्तमान के परिवहन मंत्री पंकज कुमार जी से और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी से अवश्य दूर कराऊंगा और आश्वासन दिया कि दीपावली के बाद भारतीय मजदूर संघ और परिवहन मंत्री के साथ मुख्यमंत्री जी की त्रिपक्षीय बैठक कराकर समस्याओं को दूर कराया जाएगा, जिससे मजदूर संघ के पदाधिकारी और कर्मचारियों को थोड़ी तसल्ली मिली, DTC कांटेक्ट कर्मचारी पिछले 15 सालों से उम्मीद लगाए बैठे हैं कि उन्हें समान काम समान वेतन लाभ होगा विधायक जी के द्वारा आश्वासन दिया गया कि कर्मचारियों की समस्या का समाधान भारतीय जनता पार्टी के अलावा अन्य कोई सरकार नहीं कर सकती, ज्ञापन पत्र सौंपने के बाद विकास कुमार जी ने कहा अभियान में तेजी लाने के लिए सभी कर्मचारियों को अपने क्षेत्र के विधायक से मुलाकात करके जल्द से जल्द ज्ञापन देने में वे खुद भी सहयोग करेंगे, जिस प्रकार दिल्ली परिवहन निगम आज अपने अंतिम सांसे गिन रहा है इसको उभरने के लिए तथा कर्मचारियों को समानता का अधिकार दिलाने के लिए सभी को एकजुट होकर सरकार के समक्ष अपने बातों को रखना होगा,

DTC, दिल्ली की जनता एवं कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों को इन समस्याओं से बचाने के लिए भारतीय मजदूर संघ द्वारा यह अभियान चलाया गया है, जो लगातार पिछले 11 दिन जारी है संघ द्वारा परिवहन निगम तथा DTC कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारियों के लिए सराहनीय कार्य किया जा रहा है1

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ प्रदेश कार्यालय अजमेरी गेट दिल्ली 110006

1. अध्यक्षः गूगन सिंह
2. महामंत्रीः भानु भास्कर

खाद्य विभाग और अपराध शाखा ने फैक्ट्री पर छापा मारकर लगभग 5,000 किलो नकली मावा और खोया ज़ब्त किया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: खाद्य विभाग और अपराध शाखा ने गुरुवार शाम रघुवीर नगर स्थित एक फैक्ट्री पर छापा मारकर लगभग 5,000 किलो नकली मावा और खोया ज़ब्त किया। एक गुप्त सूचना के आधार पर, अधिकारियों ने नकली डेयरी उत्पाद बनाने वाली फैक्ट्री का पता लगाया। जाँच जारी है और फैक्ट्री का गहन निरीक्षण किया जा रहा है।

क्या अब भी आरक्षण की जरूरत है?

जब सरकार ने आरक्षण की नींव रखी थी, तब उसके पीछे भावना थी — सामाजिक न्याय की। उस समय "दलित" शब्द का अर्थ था कुचला हुआ, शोषित वर्ग, जिसे समाज ने कभी छुआ तक नहीं। लेकिन आज सवाल उठता है — क्या वही स्थिति अब भी है?

भारतीय समाज बदला है, समय बदला है, सोच बदली है, लेकिन राजनीति ने आरक्षण को "समानता का माध्यम" नहीं बल्कि "सत्ता का हथियार" बना दिया है। यही कारण है कि अब आरक्षण समानता का नहीं, असमानता का प्रतीक बनता जा रहा है।

आज सोशल मीडिया पर खुले आम वीडियो घूम रहे हैं — कुछ तथाकथित "दलित नेताओं" के, जो दूसरों को गालियां देते हैं, धमकियां देते हैं, और जातीय उकसावे की भाषा बोलते हैं। सवाल यह है — क्या ऐसे लोग अब भी शोषित हैं?

या फिर आरक्षण का उपयोग, अब "शक्ति प्रदर्शन" के लिए हो रहा है?

सच्चाई यह है कि सरकारों की नीतियों और SC/ST एक्ट के दुरुपयोग ने समाज में गहरी दरारें डाल दी हैं। हजारों मुकदमे अदालतों में टिक नहीं पाते — निर्दोष लोग वर्षों तक बदनामी झेलते हैं, लेकिन उनके खोए सम्मान का हिसाब कौन देगा?

आरक्षण का उद्देश्य था उत्थान, न कि प्रतिशोध।

आज सावर्ण समाज में भी असंतोष बढ़ रहा है। ऐसा लगने लगा है कि देश जातीय संघर्ष की ओर बढ़ रहा है — और अगर समय रहते सरकार ने इस पर निर्णय नहीं लिया तो आने वाले वक्त में स्थिति भयावह हो सकती है।

सरकारों को चाहिए कि आरक्षण नीति पर दोबारा विचार करे,

समाज के हर वर्ग को समान अवसर दे,

और सबसे अहम — फास्ट ट्रैक कोर्ट में ऐसे सभी विवादित मामलों की सुनवाई तुरंत हो।

क्योंकि अगर अब भी राजनीति ने इसे नज़रअंदाज़ किया, तो सत्ता तो बच जाएगी, पर समाज की एकता टूट जाएगी।

निष्कर्ष:

अब समय है — संवाद का, समाधान का, और संतुलन का।

आरक्षण की समीक्षा जरूरी है,

क्योंकि अब शोषित नहीं, व्यवस्था शोषित हो रही है।

दस दिवसीय दिवाली हाट का भव्य शुभारंभ, देशभर के शिल्पकार जुटे

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। अंबपाली द्वारा आयोजित "दिवाली हाट 2025 – परंपरा से रौशन प्रगति पथ" का भव्य शुभारंभ नाबार्ड के नई दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय के सहयोग से एम्पोरिया कॉम्प्लेक्स, बाबा खड़क सिंह मार्ग, कनॉट प्लेस में किया गया। इस अवसर पर जीएनसीटीडी के स्पेशल डेवलपमेंट कमिशनर (डीईवी), हेमंत कुमार, एक्जिम बैंक के मुख्य महाप्रबंधक लोकेश कुमार, एसएलबीसी के महाप्रबंधक एवं समन्वयक राजेश कुमार, साधन के कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ जीजी मेमन, एएफसी इंडिया लिमिटेड के मशर, नाबार्ड के क्षेत्रीय कार्यालय के महाप्रबंधक नबीन रॉय मौजूद थे। यह दस दिवसीय उत्सव 15 से 25 अक्टूबर तक चलेगा और इसमें देश के 15 राज्यों से आए 100 से अधिक शिल्पकार, स्वयं सहायता समूह और किसान उत्पादक संगठन भाग ले रहे हैं। आयोजक संस्था अंबपाली की अध्यक्षा अर्चना सिंह का कहना है कि "दिवाली हाट केवल प्रदर्शनी नहीं, बल्कि एक ऐसा पुल है जो शिल्प, परंपरा और नवाचार को आमजन से जोड़ता है। उन्होंने कहा कि यहाँ आकर लगता है कि भारत के हर कोने से आए ग्रामीण उत्पादक अपने हस्तनिर्मित उत्पादों के साथ-साथ अपने-अपने क्षेत्र की आत्मा को लेकर आए हैं। हमारी कोशिश है कि इस मंच से उन्हें वह पहचान मिले जिसकी वे लंबे समय से प्रतीक्षा कर रहे थे।"

नाबार्ड के क्षेत्रीय कार्यालय के महाप्रबंधक नबीन राय ने कहा कि इस पहल के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और शिल्पकारों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में मदद करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा, "जब शिल्पकार जगमगाते हैं, तभी भारत भी चमकता है। यह हाट न केवल परंपरा को संरक्षित करता है बल्कि ग्रामीण युवाओं और कारीगरों को रोजगार और सशक्तिकरण का मंच भी प्रदान करता है।"

इस हाट का उद्देश्य भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक शिल्पकला और भौगोलिक संकेतक उत्पादों को एक ही मंच पर प्रदर्शित करना है। दीपावली के इस पावन अवसर पर यह पहल ग्रामीण शिल्पकारों के जीवन में उजाला भरने का प्रयास है, जो अपनी कला से घरों को रंग, रोशनी और परंपरा से सजाते हैं। आयोजन के माध्यम से ग्रामीण उत्पादकों को अपने हस्तनिर्मित उत्पादों का विपणन करने और उपभोक्ताओं से सीधे जुड़ने का सशक्त अवसर मिलता है।

कार्यक्रम के दौरान विशेष सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया जाएगा, जिसमें विभिन्न राज्यों की लोक कलाएँ और नृत्य रूप प्रस्तुत किए जाएंगे। इस उत्सव की शोभा केंद्रीय और राज्य सरकारों के वरिष्ठ अधिकारियों, बैंक प्रतिनिधियों, शिल्पकारों, विशिष्ट अतिथियों और आमजन की उपस्थिति से और बढ़ गई।

आयोजन की विशेषता है कि यह ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच सेतु का काम करता है। उपभोक्ताओं को स्थानीय और पारंपरिक उत्पादों की गुणवत्ता और विविधता का अनुभव मिलता है, वहीं शिल्पकारों को अपने उत्पादों का प्रत्यक्ष मूल्यांकन और नए बाजार तलाशने का अवसर मिलता है।

नाबार्ड के क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी ने बताया कि इस पहल के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने और शिल्पकारों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान में मदद करने का प्रयास किया जा रहा है। इस दस दिवसीय हाट में आने वाले आगंतुकों को पारंपरिक व्यंजन, हस्तशिल्प वस्तुएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारत की विविधता का जीवंत अनुभव मिलेगा। नाबार्ड की यह पहल ग्रामीण भारत की समृद्ध परंपरा और नवाचार को उजागर करते हुए हर घर में समृद्धि और खुशहाली का दीप जलाने का संदेश देती है।

साहित्यकार डॉ. मुक्ता कौशिक को मिला "विहिसाश्री" सम्मान

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज द्वारा आयोजित 29वें अधिवेशन एवं 23वें साहित्यिक सम्मेलन के द्वितीय दिवस पर आयोजित अभिनंदन एवं सम्मान समारोह में छत्तीसगढ़ की शिक्षाविद्, साहित्यकार एवं कवयित्री डॉ. मुक्ता कान्हा कौशिक को "विहिसाश्री सम्मान" से सम्मानित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. सुरेंद्र कुमार पांडेय (आई.ए.एस. से.नि.), विशिष्ट अतिथि डॉ. नरसिंह बहादुर सिंह (प्रोफेसर, वनस्पति विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) एवं निलांबुज नवीन पांडेय (वरिष्ठ प्रबंधक, दैनिक जागरण आई-नेक्स्ट) थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. विजया लक्ष्मी रामटेके, अधिष्ठता, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, नागपुर (महाराष्ट्र) ने की, जबकि संयोजक सचिव डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी थे। समारोह में ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, अभनपुर (रायपुर) में प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक डॉ. मुक्ता कौशिक को साहित्य, शिक्षा और संस्था में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप उन्हें अंगवस्त्र, स्मृति-चिह्न एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। आपको बता दे कि डॉ. मुक्ता कौशिक को पूर्व में भी नागरी लिपि सम्मान (नई दिल्ली), श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान सम्मान मुंबई तथा शिक्षक सम्मान भोपाल जैसे प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है। विहिसाश्री सम्मान मिलने पर कान्हा कौशिक, प्रांतीय अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति, रायपुर, डॉ. हरिसिंह पाल, महामंत्री, नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली, डॉ. शंभू पंवार, अंतरराष्ट्रीय वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, राजस्थान, डॉ. शैलेंद्र कुमार शर्मा, कुलानुशासक, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, डॉ. आशीष नायक, व्याख्याता (राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त), धमतरी, डॉ. आशुतोष शुक्ला, संचालक तथा डॉ. रिया तिवारी, प्राचार्य, ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, सहित अनेक साहित्यकारों, कवियों एवं प्राध्यापकों ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत, लेकिन अगर दिवाली पर पटाखे जलाने से AQI बढ़ता हैं, तो इसकी जिम्मेदारी दिल्ली सरकार की होगी : दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली टैक्सी एंड टूरिस्ट ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन ने सुप्रीम कोर्ट के दिवाली फेस्टिवल पर जो आतिशबाजी के लिए परमिशन दी हैं दिल्ली टैक्सी टूरिस्ट ट्रांसपोर्ट उसका स्वागत करती है. लेकिन हम यह कहना चाहते हैं कि अगर दिवाली पर पटाखे जलाने से AQI बढ़ता हैं, तो इसकी जिम्मेदारी दिल्ली सरकार की होगी.

वास्तव में दिल्ली सरकार एक तीर से दो निशाने खेलने की कोशिश कर रही है एक तो वह चाहती है कि दिल्ली के लोग दिवाली पर पटाखे जलाये, और बीजेपी का धन्यवाद करें, और अपना वोट बैंक मजबूत करें.

लेकिन जब दिवाली के बाद AQI बढ़ेगा और पर्यावरण के लिए खतरा बढ़ जाएगा तब ये दिल्ली सरकार और CAQM कमिसन फॉर एयर क्वाल्टी मैनेजमेंट ग्रेप 3/4 लगा कर पूरे भारत के ट्रांसपोर्टर्स की डीजल BS 4 टैक्सी बसों को बंद करना शरू कर देंगे. और उन डीजल BS 4 टैक्सी बसों को पर्यावरण के नाम पर खतरा बता कर उन गाड़ियों पर 20 हजार के जुर्माने भी करेंगे.

दिल्ली सरकार दिवाली के बाद देश के ट्रांसपोर्टर्स की और आम जनता की भी काली दिवाली बनाने की तैयारी कर रही हैं, ऐसा हमें पूरा अंदेशा हैं,क्योंकि दिवाली पर पटाखे जलने के बाद AQI पक्का बढ़ेगा ही. और इसमें आम जनता की BS 3 पेट्रोल गाडी और डीजल की BS 4 गाड़ियाँ भी बंद होने की संभावना बद जाएगी डीजल टैक्सी बसों के अलावा.

हमारी यें मांग हैं दिल्ली सरकार से अगर दिल्ली में दिवाली के बाद पटाखों के जलाने के बाद AQI बढ़ता हैं तो हमारी टैक्सी बसें और प्राइवेट गाड़ियाँ बंद ना की जाए.

दिल्ली सरकार को इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि किसी भी प्रकार पर्यावरण खराब ना हो, क्योंकि इतनी जल्दी ग्रीन पटाखे कोई नहीं बना पाएंगे और यहां आम पटाखे चलेंगे और यह सुप्रीम कोर्ट के कानून की अवहेलना भी होगी और यह जिम्मेदारी दिल्ली सरकार की होगी.

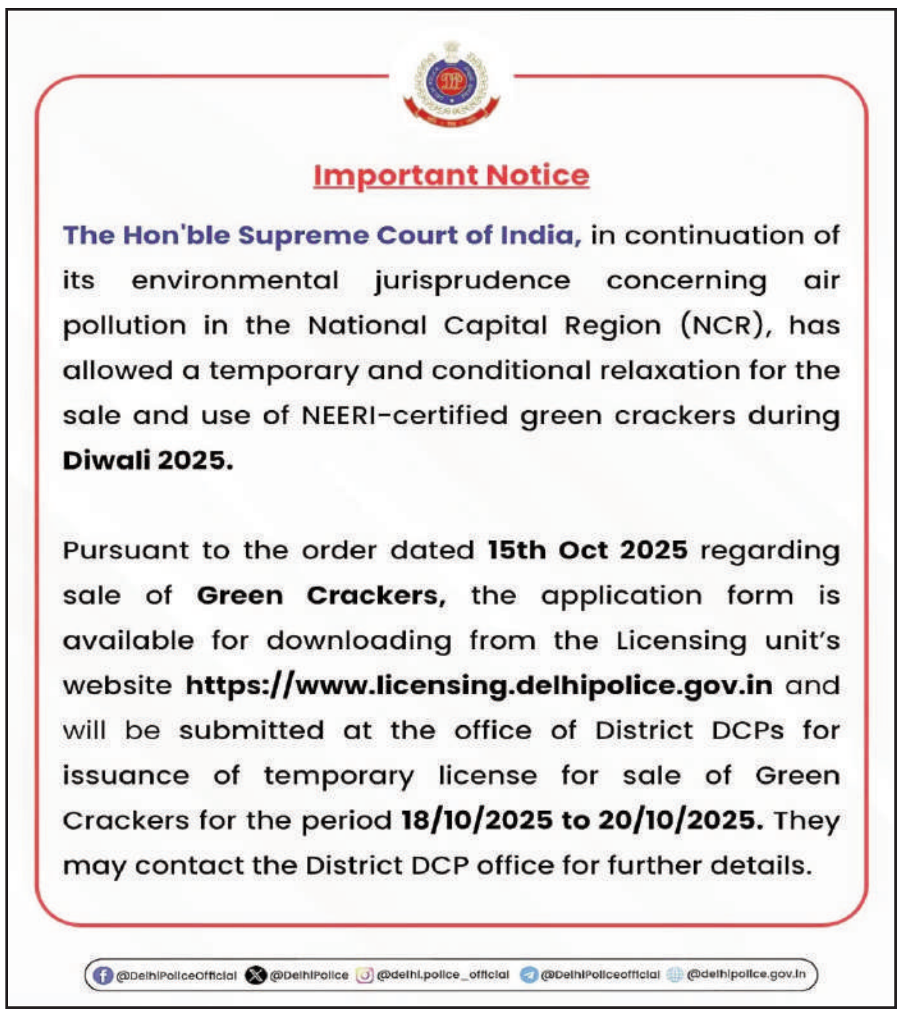

दीपोत्सव विशेष : धनतेरस 2025

स्वास्थ्य है पूँजी, धन है साधन : दोनों मिलें तो जीवन बने धनतेरस

उमेश कुमार साहू

दीपों की पंक्तियों से सजी दीपावली की पूर्व संध्या पर जब कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी आती है, तो केवल बाजारों में चहल-पहल नहीं बढ़ती बल्कि हमारे भीतर भी एक प्रकाश जल उठता है - स्वास्थ्य और समृद्धि के प्रति जागृति का। यह दिन केवल "खरीदारी" का नहीं, बल्कि "खुशहाली" और "निरोगता" का संदेश देता है। यही कारण है कि इसे धनतेरस कहा गया है। वह दिन जब धन का अर्थ केवल सिक्कों की खनक नहीं बल्कि स्वास्थ्य के अमृत से भरे जीवन का प्रतीक बन जाता है।

धनतेरसः अमृत का उद्गम दिवस

पौराणिक मान्यता के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान चौदह रत्न प्रकट हुए थे, जिनमें अंतिम और सर्वश्रेष्ठ रत्न थेभगवान धन्वंतरि। वे अपने हाथों में अमृतकलश लेकर प्रकट हुए थे, ताकि समस्त प्राणी जगत को रोगमुक्त कर सकें। इसीलिए धनतेरस के दिन उनका जन्मोत्सव मनाया जाता है। आयुर्वेद के आदि स्रोत माने जाने वाले भगवान धन्वंतरि ने हमें यह सिखाया कि ₹धन की नहीं, स्वास्थ्य की पूजा ही सच्चा सुख देती है।"

लक्ष्मी के आगमन का प्रथम संकेत

धनतेरस दिवाली के पाँच दिवसीय महाउत्सव की प्रथम सीढ़ी है। इस दिन को धन्वंतरि जयंती और यमदीपदान के नाम से भी जाना जाता है। गृहलक्ष्मियाँ इस दिन प्रातःकाल घर का कूड़ा-कचरा बाहर निकालकर उस पर दीप जलाती हैं। यह प्रतीकात्मक क्रिया दरिद्रता (अलक्ष्मी) को विदा कर समृद्धि (महालक्ष्मी) के स्वागत का संदेश देती है। कहा जाता है - "जहाँ स्वच्छता, वहाँ लक्ष्मी निवास करती हैं।" अतः यह दिन केवल धनार्जन का नहीं, बल्कि घर और मन को निर्मल करने का भी पर्व है।

धातुओं की खरीद : परंपरा में छिपा विज्ञान

धनतेरस पर लोग सोना, चांदी, तांबा, पीतल या नए बर्तन खरीदते हैं। यह केवल शुभता नहीं, बल्कि प्रकृति के तत्वों से जुड़ा विज्ञान भी है। हर धातु में ऊर्जा का एक विशिष्ट स्पंदन होता है।

तांबा शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है।

चांदी मानसिक शांति और शीतलता का प्रतीक है।

सोना सूर्य की तेजस्विता और जीवनशक्ति का प्रतिनिधि है।

धनतेरस पर लोग सोना, चांदी, तांबा, पीतल या नए बर्तन खरीदते हैं। यह केवल शुभता नहीं, बल्कि प्रकृति के तत्वों से जुड़ा विज्ञान भी है। हर धातु में ऊर्जा का एक विशिष्ट स्पंदन होता है।

इन धातुओं का प्रयोग हमें न केवल समृद्ध बनाता है, बल्कि शरीर और आत्मा दोनों को संतुलित भी रखता है।

धन का सही अर्थ केवल मुद्रा नहीं, स्वास्थ्य भी

आज के युग में हम "धन" को केवल बैंक बैलेंस या आभूषणों में मापने लगे हैं परंतु धर्मशास्त्र कहते हैं - "निरोगी काया ही सच्चा धन है।" भगवान धन्वंतरि का संदेश था - "यस्य देशस्य यो जन्तुः तज्जं तस्यौषधं हितम्।" अर्थात जिस भूमि पर मनुष्य जन्म लेता है, उसी भूमि की जड़ी-बूटियाँ और आहार उसके लिए हितकारी होते हैं। यह सूत्र आज भी हमें "लोकल फूड, लोकल क्योर" की दिशा दिखाता है। आयुर्वेद का यही मूल है कि प्रकृति में हर रोग का उपाय छिपा है बस उसे पहचानने की दृष्टि चाहिए।

भौतिक सुख बनाम मानसिक शांति

आज हमारे पास धन तो है, पर निद्रा नहीं; घर है, पर चैन नहीं; साधन हैं पर संतोष नहीं। ऐसे में क्या हम सच में धनवान हैं? लक्ष्मी वहीं टिकती हैं जहाँ मन शांत हो, शरीर स्वस्थ हो, और बुद्धि विवेकशील हो। जो व्यक्ति परिश्रम करता है, संयमित जीवन जीता है, वही स्थायी सुख का अधिकारी बनता है। जबकि आलस्य और अति-विलास से अर्जित धन अंततः रोग और असंतोष में बदल जाता है।

धनतेरस का यमदीपदान : जीवन रक्षा का प्रतीक

कथा है कि इस दिन यमराज ने घोषणा की थी -

"जो व्यक्ति धनतेरस की रात दीपदान करेगा, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होगी।" इसलिए इस दिन संध्या के समय घर के मुख्य द्वार पर दीपक जलाकर यमराज की आराधना की जाती है। यह दीप न केवल मृत्यु के भय को दूर करता है, बल्कि अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। यमदीपदान वास्तव में जीवन के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है - यह स्मरण कि हर साँस एक उपहार है।

स्वास्थ्य ही वास्तविक लक्ष्मी

धनतेरस हमें यह सिखाती है कि लक्ष्मी केवल मुद्रा नहीं, बल्कि मनोबल, स्वास्थ्य और संतुलित जीवनशैली का नाम है। जिनका शरीर रोगमुक्त है, जिनका मन प्रसन्न है वही वास्तव में संपन्न हैं। मनुष्य के पास कितना भी वैभव हो, वह उतना ही खा सकता है जितना पेट में स्थान है, उतना ही पहन सकता है जितना शरीर को आवश्यकता है। इसलिए धन का सच्चा मूल्य उस शरीर में है जो स्वस्थ, कर्मशील और आनंदमय हो।

धनतेरस का मर्म - अमृत भीतर है

भगवान धन्वंतरि हमें याद दिलाते हैं कि अमृत कहीं बाहर नहीं, हमारे भीतर ही है। स्वच्छ आहार में, सकारात्मक विचार में, और कृतज्ञता भरे व्यवहार में। धनतेरस के दीप हमें यही सिखाते हैं कि स्वास्थ्य ही सर्वोत्तम पूँजी है, और संतोष ही सबसे बड़ी संपत्ति।

"दीपक की लौ बाहर जगमगाए, पर अपने भीतर भी एक दीप्तिमान दीपक रखिए; वही दीप है जो अंधकार, रोग और चिंता को खदेड़ कर, लक्ष्मी के अनंत आशीर्वाद का मार्ग प्रशस्त करता है।"

निताई गौरांग कुटी में भागवत कथा के समापन पर हुआ सन्त-विद्वत सम्मेलन का आयोजन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। पानी घाट-परिक्रमा मार्ग स्थित निताई गौरांग कुटी में कार्तिक मास के अवसर पर महंत श्रीहरि चरण दास महाराज के पावन सानिध्य में चल रहा सप्त दिवसीय

श्रीमद्भागवत कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ महोत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।जिसमें प्रख्यात भागवताचार्य बाल शुक पुंडरीक कृष्ण महाराज ने अपनी सुमधुर वाणी के द्वारा समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को श्रीमद्भागवत की अमृतमयी कथा का रसास्वादन कराया।महोत्सव के समापन पर आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए चतुःसंप्रदाय के श्रीमहंत बाबा फूलडोल बिहारीदास महाराज एवं डॉ. रमेश चंद्राचार्य विधिशास्त्री महाराज ने कहा कि कार्तिक मास अत्यन्त महिमामयी है।इस माह में किए गए धर्म-पुण्य व दान इत्यादि का अन्य माह की अपेक्षा शतगुणा अधिक फल प्राप्त होता है।

संत श्रीदाम किंकर महाराज एवं महन्त रामस्वरूप दास महाराज ने कहा कि निताई गौरांग कुटी गौडीय संप्रदाय का प्रमुख केन्द्र है। यहां के महंत श्रीहरि चरण दास महाराज परम भजनानंदी व वीतरागी संत हैं।

यूपी रत्न डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं पण्डित वनविहारी पाठक ने कहा कि कलयुग में सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाला ग्रंथ यदि कोई है,तो वो श्रीमद्भागवत महापुराण है।इसका आश्रय लेने वाले व्यक्ति के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।साथ ही उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इस अवसर पर पंडित बिहारी लाल वशिष्ठ, महन्त रामदास महाराज, महन्त गोपीरमण दास महाराज, सन्त सेवानंद ब्रह्मचारी, राधाचरण दास महाराज, मदन मोहन बाबा, ब्रज बिहारी दास शास्त्री, महामंडलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री महाराज, प्रेमदास शास्त्री, महंत राम कल्याण दास महाराज, महंत राम सेवक बाबा, आचार्य रमाकांत शास्त्री, डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य ईश्वरचन्द्र रावत आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन पण्डित वन बिहारी पाठक ने किया।महोत्सव में पधारे समस्त सन्तों-विद्वानों व धर्माचार्यों को निताई गौरांग कुटी के महंत श्रीहरि चरण दास महाराज ने माल्यार्पण कर व पटुका-प्रसादी आदि भेंट कर सम्मानित किया।

गिरफ्तार DIG के घर से करोड़ो रुपया कैश बरामद हुआ है

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

नई दिल्ली। घर मे नोटों की गिनती की जा रही है। चंडीगढ़ सेक्टर 40 में घर है DIG का, ट्राइसिटी से गिरफ्तारी हुई है कल कोर्ट में पेश किया जाएगा सीबीआई सूत्रों के मुताबिक एक कारोबारी ने 11 अक्टूबर को चंडीगढ़ सीबीआई दफ्तर में शिकायत दी थी। कारोबारी की शिकायत थी कि DIG हरचरण भुल्लर जो रोपड़ में तैनात है वो उसको धमकी दे रहा है और रिश्वत मांग रहा है

फतेहगढ़ साहिब के मंडी - गोबिंदगढ़ का है स्क्रैप कारोबारी

कारोबारी की शिकायत के मुताबिक DIG ने उसके खिलाफ एक फर्जी मुकदमा दर्ज किया था और उसको निपटाने के लिए उससे 8 लाख रुपए की रिश्वत की डिमांड की। इसके बाद तंग आकर कारोबारी ने चंडीगढ़ सीबीआई दफ्तर को ये जानकारी दी। सीबीआई ने 10 दिन से इस अफसर पर ट्रेप लगाया और आज 8 लाख में से 5 लाख रुपए की पहली instalment जब दी जा रही थी तो चंडीगढ़ सीबीआई टीम ने इस अधिकारी को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया। जांच में ये बात भी सामने आई है इस 8 लाख की रिश्वत के अलावा ये अधिकारी कारोबारी से हर महीने 5 लाख की रिश्वत की डिमांड भी कर रहा था जिससे कारोबारी तंग आ गया और सीबीआई के पास चला गया। फिलहाल चंडीगढ़ और रोपड़ में डीआईजी के घर और ठिकानों पर सीबीआई की रेड्स चल रही है। रेड़ के बाद क्या रिकवरी होती है इसपर कोई आधिकारिक जानकारी दी जाएगी।

घरों की चौखटों पर मुस्कान सजी है,

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज

दिलों में रौशनी के दिए
जलाना है,
अँधेरों को मन के अब मिटाना है,
ज़माने की गुजरती धूल में यारों,
उम्मीदों के रंगों को सजाना है।
रात भले ही हो ये काली काली,
रूह में रौशनी का राग जमाना है,
घरों की चौखटों पर मुस्कान
सजी है,
हर सीढ़ी रंगों से महक उठी है,
आतिश बाजी का शोर बहुत है ।
फ़िज़ाओं में कुंदन सी सूरतें
चमक रही हैं,
दीपावली, अब सिर्फ़ एक रस्म
नहीं है,
हमारी तहज़ीब की ये पहचान बनी है,
हर दिया जो जलता है सच्चे दिल से,
अमन और ख़ुलूस की खुशबू
आए,
मुखड़ों पर अपने पन की
छटा लहराए

गाज़ियाबाद में STF की टीम ने नकली खाद गोदाम पर मारा छापा

रिपोर्ट अंकित गुप्ता दिल्ली

गाजियाबाद के मुरादनगर में कृषि विभाग और एसटीएफ ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए एक गोदाम पर छापा मारा। इस दौरान नकली खाद के एक हजार से अधिक कट्टे बरामद किए गए, जिन्हें मुरादनगर और मोदीनगर में बेचने के लिए जमा किया गया था। पुलिस ने गोदाम को सील कर दिया है और खाद को जांच के लिए भेज दिया है। नकली खाद को कम दाम पर खरीदकर ऊंचे दामों पर बेचा जाता था।

गाजियाबाद। एसटीएफ ,कृषि विभाग और मुरादनगर पुलिस की संयुक्त टीम ने बृहस्पतिवार को BSNL चौक स्थित बंबा रोड पर नकली खाद बनाने और बेचने वाले गिरोह का भंडाफोड़ किया। मौके से नकली खाद और डीएपी के 900 कट्टे बरामद हुए। गोदाम मालिक राहुल सिंघल को टीम ने

हिरासत में लिया है।

बड़ी खेप बरामद, गोदाम सील

एसटीएफ की टीम कई दिनों से इस गिरोह की गतिविधियों पर नजर रखे हुए थी। गुरुवार सुबह गोपनीय सूचना पर बंबा रोड स्थित एक गोदाम में छापा मारा गया। जांच में पता चला कि यहां डीएपी और अन्य खाद के नाम पर नकली सामग्री की पैकिंग कर सप्लाई की जा रही थी। कार्रवाई के दौरान लगभग 900 कट्टे नकली खाद बरामद किए गए। जिला कृषि अधिकारी और तहसीलदार की मौजूदगी में पूरा गोदाम सील कर दिया गया।

सूत्रों के मुताबिक, राहुल सिंघल का यह नेटवर्क न सिर्फ गाजियाबाद बल्कि आगरा, राजस्थान और हरियाणा तक फैला हुआ था। लंबे समय से यह गिरोह किसानों को सस्ते दामों पर खाद का झांसा देकर नकली माल सप्लाई कर रहा था। इससे न केवल किसानों को भारी नुकसान हो रहा था बल्कि कृषि उत्पादकता पर भी असर पड़ रहा था।

कानूनी कार्रवाई शुरू

नायब तहसीलदार प्रशांत कुमार ने बताया कि गोदाम से जब्त खाद के नमूनों को जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा गया है। मुरादनगर थाने में आरोपी के खिलाफ आवश्यक वस्तु अधिनियम समेत संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज किया जा रहा है। एसटीएफ अब इस रैकेट के अन्य सदस्यों की तलाश में जुट गई है।

धनतेरस से भाई दूज तक पंचदिवसीय महापर्व- समृद्धि पवित्रता भक्ति और प्रेम की सांस्कृतिक सरगम

दुनियाँ के हर देश में बसे भारतवंशी धनतेरस से भाई दूज तक फिर छठ महात्योहार में खुशियों से सरोबार होंगे - एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर अगर हम गहराई से देखें तो भारत में करीब करीब हर दिन किसी न किसी पर्व को मनाने का होता है। कभीसामाजिक,जातीय,धार्मिक, राष्ट्रीय तो कभी चुनावी महापर्व जैसे 6 व 11 नवंबर 2025 को बिहार विधानसभा का चुनावी महापर्व तथा 14 नवंबर 2025 को परिणाम आने का महापर्व मनाने का दिन है,दूसरी ओर 15 अक्टूबर 2025 को 4 वर्षो के बाद दीवाली से पहले सुप्रीम कोर्ट ने पटाखा प्रेमियों के लिए राहत भरा फैसला दिया है।कोर्ट ने दिल्ली-एनसीआर में ग्रीन पटाखों की बिक्री और उपयोग की अनुमति दे दी है।मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि यह निर्णय संतुलित दृष्टिकोण के साथ लिया गया है, जिससे उत्सव की भावना और पर्यावरण दोनों की रक्षा हो सके।इन त्योहारों का एक महत्वपूर्ण भाव अनेकता में एकता है,इसके कारण ही भारत एक विशालकाय जनसंख्या वाला देश विभिन्न धर्मो जातियों उपजातियों के बीच सर्वधर्म सद्भाव के प्रेमसे संजोया हुआ एक खूबसूरत गुलदस्ता है, इसीलिए ही हर धर्म समाज का पर्व हर दिन आना स्वाभाविक है। परंतु उन कुछ पर्वों में से धनतेरस से दीपावली और फिर छठ महापर्व एक ऐसा खूबसूरत त्यौहार पर्व है जिसे भारत में ही नहीं पूरी दुनियाँ में बसे भारतवंशियों द्वारा बड़े धूमधाम से मनाया जाता है, जिसकी शुरुआत 18 अक्टूबर 2025 से हो रही है जो 5 दिन तक बड़ी सौहार्दपूर्ण के साथ और खुशियों के साथ मनाया जायेगा, फिर अब दीपावली के छठवें दिन से छठ पर्व मनाया जाएगा, जो धार्मिक आस्था का खूबसूरत प्रतीक है। चूंकि दीप जले दीपावली आई, धनतेरस से दीपावली का आगाज़ होगा और पांच दिवसीय दीपावली पर्व का धनतेरस के भावपूर्ण स्वागत से शुरू हो जायेगा,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे दुनियां के हर देश में बसे भारतवंशी धनतेरस से भाई दूज तक फिर छठ के महात्योहार में खुशियों से सराबोर होंगे।

साथियों बात अगर हम दीपावली महापर्व की शुरुआत धनतेरस शनिवार 18 अक्टूबर 2025 से शुरू होने की करें तो, दीपावली का शुभारंभ धनतेरस के दिन से ही हो जाता है और भाई दूज तक यह 5 दिवसीय उत्सव मनाया जाता है। सबसे पहले धनतेरस, फिर नरक चतुर्दशी, उसके बाद बड़ी दिवाली, फिर गोवर्द्धन पूजा और सबसे आखिर में भाई दूज पर इस पर्व की समाप्ति होती है।धनतेरस इस बार 18 अक्टूबर 2025 को मनाई जा रही है, वैसे बता दे कुछ लोग 19 तारीख को भी मना रहे हैं कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को धनतेरस मनाई जाती हैपौराणिक मान्यताओं में यह बताया गया है कि कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को समुद्र मंथन से भगवान धनवंतरी प्रकट हुए थे और उनके हाथ में अमृत से भरा कलश था। उन्हें विष्णु भगवान का अवतार माना जाता है। धनतेरस को उनके प्राकट्योत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। इस दिन धन के देवता कुबेरजी और धन की देवी मां लक्ष्मी की पूजा की जाती है और सोने-चांदी के अलावा बर्तनों की खरीद करते हैं। धनतेरस को लेकर ऐसी मान्यता है कि इस दिन खरीदी गई वस्तुओं में 13 गुना वृद्धि होती है और हमको धन की कमी नहीं होती।मृत जीवित हो आता था। विधाता के कार्य में यह बहुत बड़ा व्यवधान पड़ गया। सृष्टि में भयंकर अव्यवस्था उत्पन्न होने की आशंका के भय से देवताओं ने इन्हें छल से लोप कर दिया। वैद्यगण इस दिन धन्वंतरी जी का पूजन करते हैं और वर मांगते हैं कि उनकी औषधि व उपचार में ऐसी शक्ति आ जाए जिससे रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो। सद्गृहस्थ इस दिन अमृत पात्र को स्मरण कर नए बर्तन घर में लाकर धनतेरस मनाते हैं। आज के दिन ही बहुत समय से चले आ रहे मनो मालिन्य को त्याग कर यमराज ने अपनी बहिन यमुना से मिलने हेतु स्वर्ग से पृथ्वी की ओर प्रस्थान किया था। गृहणियां इस दिन से अपनी देहरी पर दीपक दान

करती हैं, जिससे यमराज मार्ग में प्रकाश देखकर प्रसन्न हों और उनके गृह जनों के प्रति विशेष करुणा रखें। इस वर्ष यह पर्व 18 अक्टूबर 2025 ई० शनिवार को मनाया जा रहा है, इसी दिन प्रातः सूर्यादय से ही त्रयोदशी तिथि का आगाज़ हुआ।अतः उदय व्यापिनी त्रयोदशी होने के कारण प्रदोष व्रत के साथ-साथ प्रदोष काल में दीपदान का विशेष महत्व रहेगा।

साथियों बात अगर हम पांच दिवसीय दीपावली महापर्व की करें तो (1) पहला दिन - पहले दिन को धनतेरस कहते हैं। दीपावली महोत्सव की शुरुआत धनतेरस से होती है। इसे धन त्रयोदशी भी कहते हैं। धनतेरस के दिन मृत्यु के देवता यमराज, धन के देवता कुबेर और आयुर्वेदाचार्य धन्वंतरि की पूजा का महत्व है। इसी दिन समुद्र मंथन में भगवान धन्वंतरि अमृत कलश के साथ प्रकट हुए थे और उनके साथ आभूषण व बहुमूल्य रत्न भी समुद्र मंथन से प्राप्त हुए थे। तभी से इस दिन का नाम 'धनतेरस' पड़ा और इस दिन बर्तन, धातु व आभूषण खरीदने की परंपरा शुरू हुई। इसे रूप चतुर्दशी भी कहते हैं।(2) दूसरा दिन - दूसरे दिन को नरक चतुर्दशी रूप चौदस और काली चौदस कहते हैं। इसी दिन नरकासुर का वध कर भगवान श्रीकृष्ण ने 16,100 कन्याओं को नरकासुर के बंदीगृह से मुक्त कर उन्हें सम्मान प्रदान किया था। इस उपलक्ष्य में दीयों की बारात सजाई जाती है। इस दिन को लेकर मान्यता है कि इस दिन सूर्योदय से पूर्व उबटन एवं स्नान करने से समस्त पाप समाप्त हो जाते हैं और पुण्य की प्राप्ति होती है। वहीं इस दिन से एक ओर मान्यता जुड़ी हुई है जिसके अनुसार इस दिन उबटन करने से रूप व सौंदर्य में वृद्धि होती है। इस दिन पांच या सात दीये जलाने की परंपरा है। इस बार यह पर्व 19 अक्टूबर 2025 रविवार को मनाया जाएगा।(3) तीसरा दिन-अब आता है इस लड़ी के मध्य दैदीप्यमान मंजूषा का उल्लास और उत्साह से भरा महान पर्व दीपावली और महालक्ष्मी पूजन तीसरे दिन को दीपावली कहते हैं। यही मुख्य पर्व होता है। दीपावली का पर्व विशेष रूप से मां लक्ष्मी के पूजन का पर्व होता है। कार्तिक माह की अमावस्या को ही समुद्र मंथन से मां लक्ष्मी प्रकट हुई थीं जिन्हें धन, वैभव, ऐश्वर्य और सुख- समृद्धि की देवी माना जाता है। अतः इस दिन मां लक्ष्मी के स्वागत के लिए दीप जलाए जाते हैं ताकि अमावस्या की रात के अंधकार में दीपों से वातावरण रोशन हो जाए।दूसरी मान्यता के अनुसार इस दिन भगवान रामचन्द्रजी माता सीता और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्षों का वनवास समाप्त कर घर लौटे थे। श्रीराम के स्वागत हेतु अयोध्या वासियों ने घर-घर दीप जलाए थे और नगरभर को आभायुक्त कर दिया था। तभी से दीपावली के दिन दीप जलाने की परंपरा है। 5 दिवसीय इस पर्व का प्रमुख दिन लक्ष्मी पूजन अथवा दीपावली होता है।इस दिन रात्रि को धन की देवी लक्ष्मी माता का पूजन विधिपूर्वक करना चाहिए एवं घर के प्रत्येक स्थान को स्वच्छ करके वहां दीपक लगाना चाहिए जिससे घर में लक्ष्मी का वास एवं दरिद्रता का नाश होता है। इस दिन देवी लक्ष्मी, भगवान गणेश तथा द्रव्य, आभूषण आदि का पूजन करके 13 अथवा 26 दीपकों के मध्य 1 तेल का दीपक रखकर उसकी चारों बातियों को प्रज्वलित करना चाहिए एवं दीपमालिका का पूजन करके उन दीपों को घर में प्रत्येक स्थान पर रखें एवं 4 बातियों वाला दीपक रातभर जलता रहे, ऐसा प्रयास करें।(4)चौथा दिन - इस लड़ी का चौथा माणिक है कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा। यह पर्व भारत की कृषि-प्रधानता,पशुधन उद्योग व व्यवसाय का प्रतीक है। इसी दिन श्री कृष्ण ने अंगुली पर गोवर्धन पर्वत को छत्र की तरह धारण करके वनस्पति तथा लोगों की इंद्र के प्रकोप से रक्षा की थी। यह गोवर्धन पर्व अन्नकूट के नाम से विख्यात है। इस दिन नाना प्रकार के खाद्यान्न बनाए जाते हैंघी, दूध, दही से युक्त इनका भोग भगवान को लगाया जाता है। शिल्पकार व श्रमिक वर्ग आज के दिन विश्वकर्मा का पूजन भी श्रद्धा भक्तिपूर्वक करते हैं। आज चहुंमुखी विकास और वृद्धि की कामना से दीप जलाए जाते हैं। इस वर्ष यह पर्व 21 आक्टोबर 2025, मंगलवार को मनाया जाएगा।कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा एवं अन्नकूट उत्सव मनाना जाता है। इसे पड़वा या प्रतिपदा भी कहते हैं। खासकर इस दिन घर के पालतू बैल, गाय, बकरी आदि को अच्छे से स्नान कराकर उन्हें सजाया जाता है। फिर इस दिन घर के आंगन में गोबर से गोवर्धन बनाए जाते हैं और उनका पूजन कर पकवानों का भोग अर्पित किया जाता है। इस दिन को लेकर मान्यता है कि त्रेतायुग में जब इन्द्रदेव ने गोकुलवासियों से नाराज होकर मूसलधार बारिश शुरू कर दी थी, तब भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी छोटी अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाकर गांववासियों को गोवर्धन की छांव में सुरक्षित किया। तभी से इस दिन गोवर्धन पूजन की परंपरा भी चली आ रही है। (5) पांचवां दिन - माला का पांचवा चमकता पर्व आता है- स्नेह, सौहार्द व प्रीति का प्रतीक यम द्वितीया अथवा भैया-दूज। इस दिन कार्तिक शुक्ल को यमराज अपने दिव्य स्वरूप में अपनी भगिनि यमुना से भेंट करने पहुंचते हैं।इस दिन को भाई दूज और यम द्वितीया कहते हैं। भाई दूज, पांच दिवसीय दीपावली महापर्व का अंतिम दिन होता है। भाई दूज का पर्व भाई-बहन के रिश्ते को प्रगाढ़ बनाने और भाई की लंबी उम्र के लिए मनाया जाता है। रक्षाबंधन के दिन भाई अपनी बहन को अपने घर बुलाता है जबकि भाई दूज पर बहन अपने भाई को अपने घर बुलाकर उसे तिलक कर भोजन कराती है और उसकी लंबी उम्र की कामना करती है।इस दिन को लेकर मान्यता है कि यमराज अपनी बहन यमुनाजी से मिलने के लिए उनके घर आए थे और यमुनाजी ने उन्हें प्रेमपूर्वक भोजन कराया एवं यह वचन लिया कि इस दिन हर साल वे अपनी बहन के घर भोजन के लिए पधारेंगे। साथ ही जो बहन इस दिन अपने भाई को आमंत्रित कर तिलक करके भोजन कराएगी, उसके भाई की उम्र लंबी होगी। तभी से भाई दूज पर यह परंपरा बन गई।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि धनतेरस से भाई दूज तक पंचदिवसीय महापर्व-समृद्धि पवित्रता भक्ति और प्रेम की सांस्कृतिक सरगम,दीप जले दीपावली आई-धनतेरस से दीपावली पर्व का आगाज़-5 दिवसीय महापर्व ।दुनियां के हर देश में बसे भारतवंशी धनतेरस से भाईदूज तक फिर छठ महात्योहार में खुशियों से सरोबार होंगे।

जैसलमेर बस अग्निकांड: आग नहीं, लापरवाही ने ली 21 जिंदगियाँ

राजस्थान के जैसलमेर जिले में एक चलती हुई एसी स्लीपर बस अचानक आग का गोला बन जाती है, तो वह केवल एक हादसा नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम की लापरवाही का आईना है। 14 अक्टूबर को जैसलमेर से जोधपुर की ओर दौड़ रही यह बस—जो महज पांच दिन पहले नई खरीदी गई थी और स्लीपर में तब्दील की गई—अचानक धधक उठी। चालक को रोकने का मौका न मिला, मुख्य दरवाजा जाम हो गया, खिड़कियां तोड़ने की हताश कोशिशें विफल रहीं, और नतीजा? 21 लोग, जिनमें तीन मासूम बच्चे शामिल, जिंदा जलकर प्राण त्याग बैठे। बाकी यात्री 70% तक झुलस चुके थे, इलाज के दौरान कई और दम तोड़ गए। यह कोई फिल्मी सीन नहीं, बल्कि क्रूर हकीकत है जो सिस्टम की कमियों को उजागर करती है—क्या नई बसों की सुरक्षा जांच, इमरजेंसी एग्जिट और अग्निरोधी सामग्री पर कोई सख्ती है? यह सवाल पीड़ित परिवारों को तो तोड़ रहा है, पूरे देश को झकझोर रहा है। ऐसे कांड बार-बार दोहरा रहे हैं: 2023 में महाराष्ट्र के समृद्धि एक्सप्रेसवे पर 25 यात्रियों की जलमृत्यु, 2013 में तेलंगाना के महबूबनगर का वोल्वो बस अग्निकांड जहां 45 जिंदगियां खाक हो गईं, या 2023 में दिल्ली-जयपुर हाईवे की बस फायर। इनसे क्या हमने सबक लिया? या लापरवाही की यह खतरनाक चेन अनंत तक चलेगी, और नई-नई जानें दांव पर लगती रहेंगी?

जैसलमेर हादसे की शुरुआत एक मामूली चिंगारी से हुई—एसी सिस्टम में शॉर्ट सर्किट की आशंका—मगर यह क्षणभर में मौत का भयावह तांडव बन खड़ा हुआ। बस के पिछले हिस्से से धुआं उमड़ पड़ा, चालक ने इमरजेंसी ब्रेक लगाया, किंतु आग ने कुछ ही सेकंडों में वाहन को लपटों में समेट लिया। पुलिस जांच से साफ है कि एकमात्र मुख्य दरवाजा तपिश से जाम पड़ गया, यात्री फंसकर चीखते-चिल्लाते रहे। आइल में ढेर मिले शव—भागने की व्यर्थ कोशिशों के जीवंत साक्ष्य। स्थानीय लोग, राहगीर और सेना के जवान बचाव में कूद पड़े, लेकिन फायर ब्रिगेड की 45 मिनट की घातक विलंब ने बहुमूल्य सेकंड्स में अनगिनत जानें निगल लीं। कुल 57 यात्री—परिवारों समेत पर्यटक—मौत के जबड़ों में; डीएनए टेस्टिंग से ही शवों की पहचान, क्योंकि भयंकर जलन ने चेहरों तक को मिटा डाला। पीएमएनआरएफ से मृतकों को 2 लाख, घायलों को 50 हजार रुपये—ये रकम दर्द की गहराई में बौनी। राज्य सरकार ने फिटनेस सर्टिफिकेट की लापरवाही के लिए दो अधिकारियों को निलंबित किया, जबकि जांच समिति कन्वर्शन, मेंटेनेंस और इलेक्ट्रिकल खामियों की परतें उघाड़ रही है। किंतु ये कदम अपर्याप्त हैं—यह सिस्टम की जड़ों तक फैली सड़न का खुला प्रमाण है।

ऐसी विपत्तिपूर्ण घटनाओं से प्राप्त सबक हृदयस्पर्शी और बहुआयामी होते हैं, जो मानव जीवन की नाजुकता को उजागर करते हैं। सर्वोपरि शिक्षा यह है कि सुरक्षा कभी प्रतिबंधित नहीं होनी चाहिए—यह जीवनरक्षा का अटल कवच है। भारत के सड़क परिवहन मंत्रालय के अनुसार, 2023 में 4.8 लाख भयावह सड़क हादसों ने 1.73 लाख प्राण हर लिए, जिनमें वाहन अग्निकांड एक क्रूर हत्यारा सिद्ध हुए। जैसलमेर जैसी त्रासदीपूर्ण घटनाएँ चीख-चीख कर चेतावनी देती हैं कि अनटेस्टेड नई तकनीकें, जैसे एसी कन्वर्शन, घातक जाल बुन सकती हैं। प्रथम सबक, वाहन डिजाइन में फायर-सेफ्टी को सर्वोच्च प्राथमिकता दें—यह मृत्यु के दाँतों से बचाव का हथियार है। बसों में एकमात्र दरवाजा होना तो मृत्यु को स्वयं आमंत्रित करना है! यूरोपीय बस नियमों की भाँति, कम से कम दो इमरजेंसी एग्जिट—एक अग्रभाग में, एक पश्च में—अनिवार्य हैं। भारत का एआईएस-135 मानक विद्यमान है, किंतु उसका पालन ढीला-ढाला, जिससे विपदा निर्मंत्रित होती है। महाराष्ट्र के 2024 बस अग्निकांड के बाद एआरएआई (ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया) ने स्लीपर कोच डिजाइन की कठोर समीक्षा की, जिसमें फ्लेम रिटार्डेंट सामग्रियों (जैसे ब्रोमिनेटेड कंपाउंड्स) का बाध्यकारी उपयोग सिफारिश किया गया। द्वितीय सबक, मेंटेनेंस की उपेक्षा घातक विषैली साँप की तरह प्रहार करती है। वह बस मात्र चार यात्राओं पुरानी थी, तथापि शॉर्ट सर्किट ने ज्वाला का तांडव रच दिया—कारण? दोषपूर्ण वायरिंग या अप्रूव्ड एसी स्थापना। पुरानी त्रासदियों से प्रेरित होकर, 2013 महबूबनगर हादसे के पश्चात तेलंगाना सरकार ने प्राइवेट बसों हेतु मासिक इलेक्ट्रिकल जाँच अनिवार्य की, जिससे अग्निकांड 20% तक ठहर गए—यह है सतर्कता की विजय!

जैसलमेर के इस भयानक हादसे ने साफ उजागर किया कि सुरक्षा के नाम पर खिलवाड़ कितना घातक साबित हो सकता है। सबसे बड़ी कमी थी इमरजेंसी एग्जिट की पूर्ण अनुपस्थिति। बस में ब्रेकेबल विंडोज तो थे, मगर यात्रियों के पास तोड़ने का न तो समय था और न ही कोई टूल। नतीजा? आग ने महज मिनटों में सब कुछ लील लिया। दूसरी घातक चूक फायर एक्सटिंग्विशर की अनुपलब्धता रही। जांच रिपोर्ट्स से पता चला कि जो एक्सटिंग्विशर थे, वे केवल ड्राइवर तक सीमित थे—यात्रियों की सीटों पर एक भी नहीं। आग लगते ही कोई त्वरित कार्रवाई असंभव हो गई। तीसरी समस्या, ड्राइवर और कंडक्टर के अपर्याप्त प्रशिक्षण की। कंडक्टर ने वीरतापूर्वक कई यात्रियों को दरवाजा खोलकर बचाया, लेकिन सामान्य ट्रेनिंग में फायर ड्रिल जैसी बुनियादी तैयारी का अभाव था। चौथी कमी, इलेक्ट्रिकल सिस्टम की खराबी से जुड़ी। नई कन्वर्टेड बस में एसी गैस लीक होने से आग ने रफ्तार पकड़ी, क्योंकि कोई सेफ्टी ऑडिट ही नहीं हुआ था। पांचवीं, इमरजेंसी रिस्पॉन्स सिस्टम की कमजोरी—फायर ब्रिगेड की देरी ग्रामीण इलाकों की पुरानी समस्या है, जहां स्टेशन दूर होने से बचाव में घंटों लग जाते हैं। छठी, ओवरलोडिंग और अनियमित परमिट ने हालात बिगाड़े; 57 यात्री सवार थे, जबकि स्लीपर कोच की क्षमता सिर्फ 40 की थी। सातवीं, कमी यात्रियों में जागरूकता की कमी—कोई फायर अलार्म या एग्जिट का सही इस्तेमाल नहीं जानता था। आठवीं, कानूनी ढील—मोटर व्हीकल एक्ट 1988 में फायर सेफ्टी के प्रावधान हैं, लेकिन उनका पालन और एनफोर्समेंट नाममात्र का। नौवीं, मैन्युफैक्चरिंग फॉल्ट—नई बस में चाइनीज पार्ट्स की क्वालिटी चेक ही नहीं हुई। दसवीं चूक पोस्ट-हादसा मैनेजमेंट की—शवों की पहचान में देरी ने पीड़ित परिवारों का दर्द दोगुना कर दिया।

इन कमियों को जड़ से मिटाने के लिए हर स्तर पर कड़े कदम उठाने होंगे। वाहन मालिकों को बस खरीदते समय एआईएस-152 फायर सेफ्टी सर्टिफिकेशन अनिवार्य रूप से जांचना चाहिए। एसी या कोई मॉडिफिकेशन तभी करें जब एआरएआई-अप्रूव्ड हो, वरना आग का खतरा बढ़ जाता है। हर बस में कम से कम दो ब्रेकेबल इमरजेंसी एग्जिट लगाएं—विंडोज पर हैमर या लिवर हमेशा उपलब्ध रखें। फ्लोर, सीट कवर फ्लेम-रिटार्डेंट मटेरियल से बने हों, इलेक्ट्रिकल वायरिंग हाई-टेम्परेचर रेसिस्टेंट हो और शॉर्ट सर्किट प्रिवेंटर इंस्टॉल हो। मेंटेनेंस में लापरवाही न बरतें: मासिक चेकलिस्ट से बैटरी, वायरिंग और एसी गैस लेवल की जांच करें। एक्सटिंग्विशर हर 10 सीटों पर एबीसी टाइप (ड्राई केमिकल) रखें, जो इलेक्ट्रिकल फायर पर सबसे प्रभावी है। ड्राइवर-कंडक्टर को आरटीओ द्वारा सालाना फायर ड्रिल सेशन अनिवार्य करें, जिसमें सिमुलेटेड आग में एग्जिट प्रैक्टिस शामिल हो। यात्री भी सजग रहें, बस में चढ़ते ही एग्जिट लोकेशन नोट करें, फायर अलार्म का सही इस्तेमाल सीखें। लंबी यात्रा में इमरजेंसी नंबर (100, 101) सेव रखें। धुआं दिखे तो घुटनों के बल रेंगकर निकलें—धुआं ऊपर चढ़ता है। बच्चों और बुजुर्गों को प्राथमिकता दें, ताकि जानें बच सकें। सरकार सड़क परिवहन मंत्रालय के माध्यम से जीपीएस-ट्रैकिंग सभी बसों में अनिवार्य करे, जिससे हादसे पर लोकेशन तुरंत मिले। ग्रामीण इलाकों में फायर ब्रिगेड नेटवर्क विस्तार करें—हर 50 किमी पर स्टेशन स्थापित करें। प्राइवेट बस परमिट में फायर ऑडिट क्लॉज जोड़ें। लापरवाही पर सजा कड़ी हो - 5-10 साल जेल और भारी जुर्माना। जागरूकता अभियान चलाएं—स्कूलों, स्टेशनों पर पोस्टर, वीडियो से फायर सेफ्टी सिखाएं।

ऐसे प्रयास पहले भी हुए, लेकिन अपर्याप्त। 2022 में इलेक्ट्रिक व्हीकल फायर के बाद एसएमईवी (सोसाइटी ऑफ मैन्युफैक्चरर्स ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल्स) को नोटिस जारी कर रिकॉल अनिवार्य किए गए। महाराष्ट्र ने समृद्धि हादसे पर एक्सप्रेसवे में स्पीड कैमरा और फायर पॉइंट्स लगाए, तेलंगाना ने 2013 हादसे के बाद ड्राइवर ट्रेनिंग एकेडमी खोली। जैसलमेर से सीख लें: कार्रवाई हेडलाइंस के बाद न हो, तुरंत हो। जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करें, ताकि सबक सभी को मिले। जैसलमेर हादसा चेतावनी है—सुरक्षा खर्चा नहीं, निवेश है। 2017-2023 में भारत में 27,000 से अधिक फायर मौतें हुईं, यह शर्मनाक आंकड़ा है। डिजाइन से ड्रिल तक हर कदम पर सबक लें, तो आने वाली पीढ़ियां सुरक्षित यात्रा करेंगी। पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सुनिश्चित करें कि उनकी मौत व्यर्थ न जाए। सरकार, ऑपरेटर और नागरिक—सभी की यह साझा जिम्मेदारी है। आग की लपटें ठंडी हों और जिंदगियां गर्म रहें—यही सच्ची प्रगति है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

चार मोर्चों पर घिर गया पाकिस्तान

राजेश कुमार पासी

कहा जाता है कि जब आप शेर को काबू नहीं कर सकते तो उसकी सवारी नहीं करनी चाहिए। मौका मिलने पर वही शेर आपको खा जाता है जिसके ऊपर आप बैठे होते हो। पाकिस्तान की आज ऐसी ही हालत है. उसने जिस तालिबान को पाल-पोस कर बड़ा किया ताकि उस पर सवारी कर सके, वहीं तालिबान उसे निगल जाने की कोशिश कर रहा है। 2001 से पहले पाकिस्तान ने इस तालिबान का मनचाहा इस्तेमाल किया लेकिन 2021 वाला तालिबान उसके लिए घातक साबित हो रहा है। जब यह तालिबान सत्ता में आया, तो पाकिस्तान के कुछ नेताओं का कहना था कि तालिबान उनको भारत से कश्मीर लाकर देगा। दूसरी बात सत्ता में आए तालिबान की सहायता से पाकिस्तान भारत में बड़े पैमाने पर आतंकवादी कार्यवाही करने की साजिश कर रहा था। पाकिस्तान तालिबान को इस्तेमाल करके अफगानिस्तान की धरती को आतंक का गढ़ बनाना चाहता था। वास्तव में पिछली बार तालिबान के राज में अफगानिस्तान आतंकवादियों का स्वर्ग बन गया था। पाकिस्तान की कोशिश थी कि वो इस बार भी तालिबान का ऐसा ही इस्तेमाल करेगा।

पाकिस्तान अपने जन्म से ही भारत को अपना दुश्मन मान चुका है और उसे तबाह करने की कोशिश में लगा रहता है। भारत के साथ वो चार युद्ध लड़ चुका है, लेकिन उसकी दुश्मनी की भावना में कोई कमी नहीं आई है। 1971 का युद्ध हारने के बाद पाकिस्तान को अहसास हो गया था कि वो भारत से युद्ध में कभी नहीं जीत सकता। इसके बाद उसने भारत को आतंकवाद के जरिए बर्बाद करने की साजिश शुरू कर दी। भारत को बर्बाद करने के लिए पहले वो अमेरिका की गोद में बैठा हुआ था और बाद में उसने चीन को भी अपना नया मालिक बना लिया। पाकिस्तान ने भारत को बर्बाद करने के लिए कट्टरवाद को जबरदस्त बढ़ावा दिया ताकि युवाओं का ब्रेनवाश करके उन्हें आतंकवादी बनाया जा सके। इसके लिए उसने अपने देश के साथ-साथ कश्मीर के युवाओं का इस्तेमाल किया। पाकिस्तान ने आतंक की एक बड़ी फैक्ट्री खोल दी, जिसने लाखों आतंकवादी पैदा किये और पूरे पाकिस्तान को आतंकवादियों का घर बना दिया। आज वही आतंकवादी उसके लिए बड़ी समस्या बन गए हैं।

पाकिस्तान अपनी नीतियों के कारण आज चार मोर्चों पर लड़ने को मजबूर है। सबसे बड़ा मोर्चा उसके खिलाफ भारत ने खोला हुआ है, जो ऑपरेशन सिंदूर के बाद दोबारा कभी भी हमला कर सकता है। भारत ने घोषणा की हुई है कि ऑपरेशन सिंदूर खत्म नहीं हुआ है, सिर्फ उसे रोका गया है, यह जरूरत पड़ने पर कभी भी शुरू हो सकता है। दूसरा मोर्चा उसके खिलाफ बलूचिस्तान में खुला हुआ है, बलोच विद्रोही उसकी सेना पर लगातार हमले कर रहे हैं। बलूच विद्रोही पाकिस्तानी सेना पर आत्मघाती हमले कर रहे हैं, जिनसे बचना पाकिस्तानी सेना के लिए बहुत मुश्किल हो रहा है। तीसरा मोर्चा उसके खिलाफ पीओके में खुल गया है। उसने आजाद कश्मीर का शोर मचाकर वहां जनता को बहुत मूर्ख बनाया है। उसने पीओके के संसाधनों का इस्तेमाल पंजाब सूबे के लिए किया, लेकिन कश्मीरियों को कुछ नहीं दिया।

दुश्मनी से दोस्ती तक: भारत–तालिबान रिश्तों का नया अध्याय

जब भू-राजनीति के जटिल ताने-बाने में पुराने ज़ख्म सहजता से भरने लगें और दुश्मनी की कड़वाहट मधुर सहयोग में ढल जाए, तो विश्व मंच का चक्र कितना विस्मयकारी हो उठता है। भारत और तालिबान के उभरते रिश्ते इस चमत्कार की जीवंत मिसाल हैं, जहां वैचारिक खाइयों को व्यावहारिक हितों की मज़बूत डोर ने पाट दिया है। सोचिए, दो दशक पूर्व पाकिस्तान के छद्म हथियार के रूप में कुख्यात तालिबान आज भारत के रणनीतिक साझेदार की दहलीज पर खड़ा है, अफगानिस्तान की धरती से उठकर क्षेत्रीय समीकरणों को नया रंग दे रहा है। तालिबान विदेश मंत्री का हालिया भारत दौरा—जहां गर्मजोशी भरे स्वागत के बीच दूतावास स्तर की बहाली की घोषणा हुई—न केवल तल्ख इतिहास के अंतिम पन्ने को पलटता है, बल्कि भारत की कूटनीतिक प्रौढ़ता का सशक्त प्रमाण भी है। यह एक ऐसी नीति है, जो सत्ता की कठोर सच्चाइयों को अपनाकर राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, अतीत की जंजीरों से मुक्त, भविष्य की ओर दृढ़ कदम बढ़ाती हुई।

इस परिवर्तन की जड़ें गहरी और बहुआयामी हैं, जो भारत-अफगानिस्तान संबंधों को नई ऊंचाइयों पर ले जा रही हैं। सुरक्षा मोर्चे पर भारत की चिंताएं—कश्मीर-केंद्रित चरमपंथ, आईएसआईएस-के और अल-कायदा की साजिशें—अफगान मिट्टी से पनपने के खतरे से हमेशा सताई रहीं, लेकिन तालिबान के स्पष्ट आश्वासन, कि उनकी धरती कभी भारत-विरोधी हमलों का अड्डा नहीं बनेगी, ने विश्वास की मजबूत नींव रखी। अब खुफिया सूचनाओं का साझा आदान-प्रदान, संयुक्त निगरानी तंत्र और आईएस जैसे साझा दुश्मनों के खिलाफ सहयोग इस साझेदारी को अटल बना रहा है, क्योंकि तालिबान खुद इन चरमपंथियों से जंग लड़ रहा है।

आर्थिक पटल पर यह गठबंधन चमकदार अवसरों से भरा है: अफगानिस्तान के रसीले अनार, किशमिश, पिस्ता और जड़ी-बूटियां भारत के विशाल बाजारों में प्रवेश कर रही हैं, जहां पाकिस्तान की वाघा-कराची सीमाओं की रुकावटें अब इतिहास का हिस्सा बनने वाली हैं। चाबहार बंदरगाह के जरिए मध्य एशियाई गलियारों से जुड़ाव, खनिज संसाधनों में भारतीय निवेश, और पुरानी परियोजनाओं का पुनरारंभ—सलमा बांध की जीवनदायिनी धाराओं से लेकर काबुल संसद भवन की भव्यता तक—अफगान अर्थव्यवस्था को नई सांस देगा। बदले में भारत को ऊर्जा सुरक्षा, व्यापारिक लाभ और क्षेत्रीय वर्चस्व मिलेगा। हवाई गलियारों की स्थापना और ईरानी बंदरगाहों का प्रभावी उपयोग इस आर्थिक पुल को और मजबूत करेगा, अफगान गरीबी को जड़ से मिटाने में सहायक सिद्ध होगा।

तालिबान के लिए यह रिश्ता वैधता का अमृतकलश है—पाकिस्तानी आईएसआई की कठपुतली की छवि से मुक्ति, स्वतंत्र शक्ति के रूप में उभरना, और पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच वैकल्पिक समर्थन की ताकत। मानवीय सहायता के तहत भोजन-दवाओं का वितरण, व्यापारियों-छात्रों-मरीजों के लिए आसान वीजा, कंप्यूटर प्रशिक्षण से प्रशासनिक कौशल हस्तांतरण तक—ये कदम तालिबान शासन को आंतरिक स्थिरता देंगे, अफगान नागरिकों की आकांक्षाओं को साकार करेंगे। इस प्रकार, यह साझेदारी न केवल द्विपक्षीय लाभ का स्रोत है, बल्कि क्षेत्रीय शांति और समृद्धि की कुंजी भी।

पाकिस्तान इस भू-राजनीतिक नाटक का सबसे बड़ा हारी है, जहां उसका तालिबान प्रेम सीमा पर गोलाबारी, टीटीपी के खूनी हमलों और आपसी कटुता में तब्दील हो चुका है। पाकिस्तानी रक्षा मंत्री का 'शत्रु देश' बयान दरार को और गहराता है, जबकि अफगान हवाई हमलों में नागरिक हत्याओं के आरोप तालिबान को भारत की ओर धकेल रहे हैं। काबुल पर दबदबा कायम करने का इस्लामाबाद का दशकों पुराना सपना अब भारत के बढ़ते प्रभाव से चूर-चूर है। भारत की अफगानिस्तान में सक्रियता न केवल पाकिस्तानी रणनीति को ध्वस्त करती है, बल्कि बलूच विद्रोह और टीटीपी समर्थन के आरोपों को हवा देती है, जिनका भारत लगातार खंडन करता रहा है। यह बदलाव क्षेत्रीय शक्ति-संतुलन को नया आयाम देता है—चीन की बेल्ट एंड रोड महत्त्वाकांक्षाएं, रूस की पारंपरिक पैठ, और ईरान की सीमाई चिंताएं—सब अफगानिस्तान को दांव पर लगाए हुए हैं। भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति यहां चमकती है, जो सतर्क लेकिन साहसी कदमों से प्रभाव क्षेत्र का विस्तार कर रही है, युद्ध की छाया से परे। तालिबान की स्वतंत्र विदेश नीति का ऐलान—पाकिस्तान की मांगों से मुक्त होना—भारत को आकर्षित करता है, जबकि अफगान नागरिकों की शिकायतें पाकिस्तानी रुकावटों पर केंद्रित हैं, जो इस नई दोस्ती को स्वाभाविक बनाती हैं।

फिर भी, यह साझेदारी सावधानी की मांग करती है, क्योंकि शांति का भ्रम घातक हो सकता है। भारत ने तालिबान को औपचारिक मान्यता देने से परहेज किया है, महिलाओं पर अमानवीय पाबंदियों, अल्पसंख्यकों की दशा, और मानवाधिकार उल्लंघनों पर गहरी चिंताएं बरकरार हैं। 2021 में दूतावास बंदी और वीजा रद्दीकरण को पूर्व अफगान नेताओं ने विश्वासघात करार दिया, जो आज भी हवा में तैरते जख्म हैं। सुरक्षा जोखिम साये की तरह लिपटे हैं—चरमपंथी समूहों की साजिशें, अल-कायदा के अवशेष, और आईएस की उभरती ताकत सतर्कता की घंटी बजाते हैं। दोनों पक्ष धीमे मगर ठोस कदम उठा रहे हैं: तकनीकी टीमों से राजनयिक मिशनों तक, वाणिज्य दूतावासों का हस्तांतरण, उच्च-स्तरीय वार्ताएं—ये सतर्क प्रगति के प्रतीक हैं। व्यावहारिकता यहाँ सिद्धांतों पर भारी पड़ रही है; जैसा कि कूटनीति की भाषा में कहा जाता है, सत्ता में जो है, उसके साथ जुड़ना अनिवार्य है, चाहे वह कितना ही विवादास्पद हो।

यह 'दुश्मन से मित्र' की गाथा भारत की दूरदर्शी कूटनीति का उत्सव है, जो अतीत की कटुता को भुलाकर भविष्य की संभावनाओं को गढ़ रही है। यदि यह गठजोड़ गहराता है, तो दक्षिण एशिया में शांति की लहर दौड़ेगी—व्यापारिक कारवां सड़कों पर लहराएंगे, विकास की धारा अफगान घाटियों को सींचेगी, और क्षेत्रीय स्थिरता नई ऊंचाइयों को छुएगी। पाकिस्तान को सबक मिलेगा कि छद्म युद्धों की होड़ में दोस्त खोना महंगा पड़ता है, जबकि भारत एक जिम्मेदार शक्ति के रूप में उभरेगा। लेकिन सफलता की कुंजी है सतत संवाद, पारस्परिक सम्मान, और सुधारों की प्रतिबद्धता—तालिबान को मानवाधिकारों की राह अपनानी होगी, और भारत को विश्वास का निर्माण जारी रखना होगा। यह नया दौर महज आहट नहीं, बल्कि एक क्रांति है, जहां पुराने शत्रु मिलकर समृद्धि का सपना बुन रहे हैं। भारत की यह कूटनीतिक विजय न केवल अफगानिस्तान को जोड़ेगी, बल्कि पूरे उपमहाद्वीप को नई दिशा देगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

घुसपैठियों के खतरे का सच

(आलेख : राजेन्द्र शर्मा)

भाजपा के सर्वोच्च रणनीतिकार माने जाने वाले, अमित शाह ऐलान कर चुके थे कि उनका गठजोड़ बिहार का चुनाव और उससे अगले चरण में कम से कम असम तथा प. बंगाल का चुनाव भी, किस मुद्दे के आसरे लड़ने जा रहा है। यह मुद्दा है -- 'घुसपैठियों का खतरा'। दैनिक जागरण के एक आयोजन में अपने सार्वजनिक व्याख्यान में अमित शाह ने यह ऐलान किया। और इसी व्याख्यान में अमित शाह ने यह भी स्पष्ट कर दिया कि 'घुसपैठियों' से उनका आशय, पड़ोसी देशों से आए मुसलमान प्रवासियों से ही है, जो 'आर्थिक कारणों' से आते हैं। बंगलादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि, पड़ोसी देशों में कथित रूप से धार्मिक-उत्पीड़न के कारण आने वाले—जाहिर है कि हिंदू—तो घुसपैठिये नहीं, प्रवासी हैं! बहरहाल अमित शाह सिर्फ पड़ोसी देशों से आए प्रवासियों को इस तरह हिंदू और मुसलमान में विभाजित करने और प्रवासी मुसलमानों को 'खतरा' और प्रवासी हिंदुओं को 'अपना' बताने पर ही नहीं रुके। उन्होंने इस खतरे को बेहिसाब बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने का हथकंडा आजमाया, ताकि चुनाव प्रचार के लिए 'हिंदू खतरे में हैं' का जोर-शोर से ढोल पीटा जा सके। यह दूसरी बात है कि भाजपा के चाणक्य ने यह ढोल कुछ ऐसे अनाड़ीपन से और इतने जोर से पीटा कि ढोल ही फट गया। और इस विशाल देश के गृहमंत्री को, ट्वीट को डिलीट करना पड़ा और बाद में एक संशोधित ट्वीट जारी करना पड़ा, जिसमें से असली पंच लाइन ही गायब हो चुकी थी।

लेकिन, ऐसा होना संयोग हर्गिज नहीं है। बेशक, अमित शाह भारत के गृहमंत्री हैं, लेकिन शाह आरएसएस के परखे हुए स्वयंसेवक पहले हैं। और आरएसएस के शीर्ष हलके अब हिटलर की विचार तथा आचार की परंपरा से अपने रिश्तों को छुपाने की चाहे जितनी कोशिश क्यों न करें, लेकिन खुद को हिटलर के प्रचार मंत्री, गोयबल्स का सच्चा चेला साबित करने में हमेशा लगे रहते हैं। शाह ने अपने व्याख्यान में और उस पर आधारित ट्वीट में भी दावा किया था कि आजादी के बाद से भारत में मुसलमानों का अनुपात बढ़ता ही गया है और हिंदुओं का अनुपात तेजी से घटता जा रहा है, जो कि खतरनाक है। इस क्रम में शाह ने 1951 की जनगणना से लगाकर हिंदुओं और मुसलमानों के आबादी अनुपात के आंकड़े पेश करते हुए, बताया कि जहां हिंदुओं की आबादी, जो 1951 में 84 फीसद थी, २011 में 79 फीसद रह गयी है और इसी दौरान मुसलमानों की आबादी 9.8 से बढ़कर 14.२ फीसद हो गयी है।

फिर भी यहां तक तो हिंदुओं के लिए बहुत विचलित होने का कारण नहीं बनता है। बेशक, देश की कुल आबादी में हिंदुओं का अनुपात घटा है और मुसलमानों का अनुपात बढ़ा है, लेकिन दोनों की जनसंख्याओं में अंतर इतना बड़ा है कि ये आंकड़े शायद ही खास चिंता पैदा करेंगे। आखिरकार, साठ साल में आबादी में मुसलमानों का अनुपात कुल 4.4 फीसद बढ़ा है और हिंदुओं का अनुपात इससे कुछ कम ही घटा है। और साठ साल की कमी और बढ़ोतरी के बावजूद, हिंदू आबादी 80 फीसद के करीब है, जबकि मुस्लिम आबादी 14 फीसद से थोड़ी-सी ही ज्यादा है। अगर हिंदुओं की आबादी घटने और मुसलमानों की आबादी बढ़ने की यही रफ्तार रहती है, जो कि होना, असंभव है और जैसा कि हम आगे देखेंगे, तब भी सरल गणित के हिसाब से भारत में मुसलमानों की आबादी को हिंदुओं की आबादी के बराबर होने में कम से कम साढ़े पांच सौ साल तो जरूर लग जाएंगे। जाहिर है कि इतनी दूर का खतरा दिखाकर, अगले ही महीने होने वाले चुनाव में वोट हासिल करने की, बहुत उम्मीद नहीं की जा सकती है।

वास्तव में न पांच सौ साल में, न हजार साल में, तार्किक रूप से आबादी में मुसलमानों का हिस्सा कभी भी हिंदुओं से ज्यादा नहीं होने वाला है। और इसकी सीधी सी वजह यह है कि कुल आबादी में मुसलमानों का हिस्सा आजादी के बाद से बढ़ता जरूर रहा है, लेकिन यह रुझान गिरावट पर है। यह इसलिए है कि जहां भारत में सभी समुदायों की प्रजनन दर घट रही है, फिर भी मुस्लिम आबादी में प्रजनन दर में गिरावट, हिंदू आबादी की प्रजनन दर की तुलना में कहीं ज्यादा है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे के अनुसार, 199२-93 में मुस्लिम समुदाय के मामले में प्रजनन दर, प्रति महिला 4.4 बच्चे थी, जो २019-२1 में घटकर २.3 फीसद हो गयी, जबकि इसी दौरान हिंदू समुदाय में प्रजनन दर 3.3 फीसद से घटकर 1.9 पर आ गयी। इस तरह, मुस्लिम समुदाय में प्रति महिला २.1 बच्चों के जन्म की कमी दर्ज की गयी, जबकि हिंदुओं के मामले में यही कमी 1.4 प्रति महिला थी। इसलिए, वह दिन ज्यादा दूर नहीं है, जब हिंदू और मुस्लिम आबादी की वृद्धि दर बराबर हो जाएगी और आबादी अनुपात में किसी उल्लेखनीय घटत-बढ़त का किस्सा ही खत्म हो जाएगा।

बहरहाल, शाह तो धड़ से यह दावा कर देते हैं कि 'भारत में मुस्लिम आबादी २4.6 फीसद पर पहुंच गयी है। यह बढ़ोतरी घुसपैठ की वजह से हुई है।' देश के गृहमंत्री उस समुदाय की आबादी में पिछले डेढ़ दशक में 10 फीसद से ज्यादा की बढ़ोतरी का दावा कर रहे थे, जिसकी आबादी साठ साल में कुल 4 फीसद बढ़ी थी! बेशक, शाह ने इसमें यह और जोड़ा था कि यह बढ़ोतरी घुसपैठ का नतीजा है। फिर भी यह बढ़ोतरी भारत की आबादी का 10 फीसद यानी 14 करोड़ होती है पर बंगलादेश की तो कुल आबादी ही 17 करोड़ है। क्या बंगलादेश की सारी आबादी घुसपैठ कर के भारत में आ गयी है? यह तो बंगलादेश और पाकिस्तान की कुल आबादी के करीब तिहाई के बराबर होता है। और तो और, संघ परिवार के अफवाही प्रचार में भी कभी घुसपैठियों का करोड़-दो करोड़ से ज्यादा का आंकड़ा नहीं सुना गया, पर यहां 14 करोड़ घुसपैठियों का दावा किया जा रहा था। झूठ पकड़े जाने पर शाह को शर्मिंदगी से बचने के लिए ट्वीट का संबंधित हिस्सा छुपाकर भागना पड़ा। लेकिन, इस सब के बीच एक जरूरी सवाल और उठ गया है, जिसका जवाब शाह और मोदी कभी नहीं देंगे। २011 के बाद यानी जिन कुल 14 सालों में घुसपैठियों की संख्या में करीब 14 करोड़ की बढ़ोतरी का अमित शाह दावा कर रहे थे, उनमें से 11 साल से ज्यादा से तो देश में भाजपा के नेतृत्व वाली मोदी सरकार ही है। और सभी जानते हैं कि सीमाओं की सुरक्षा, खासतौर पर घुसपैठ के खिलाफ सीमाओं की सुरक्षा, केंद्र सरकार की और उसमें भी खासतौर पर उस गृह मंत्रालय की ही जिम्मेदारी है, जिसके मुखिया छः साल से ज्यादा से खुद अमित शाह ही हैं। उनकी नाक के नीचे इतने बड़े पैमाने पर घुसपैठ कैसे चलती रही? अगर इस पैमाने की घुसपैठ का दावा वाकई सच है, तो क्या मोदी सरकार को और खासतौर पर शाह को, इस कथित घुसपैठ की जिम्मेदारी कबूल कर इस्तीफा नहीं दे देना चाहिए।

लेकिन, गंभीरता से जिम्मेदारी संभालने के अर्थ में, जिस अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ का इतना शोर मचाया जाता है, उसके मोर्चे पर भी मोदी सरकार का प्रदर्शन, उसके सांप्रदायिक प्रचार के विपरीत, काफी निराशाजनक ही रहा है। सिर्फ एक आंकड़ा इसे साफ कर देगा। २003 से २013 तक यानी 9 साल में, पूर्ववर्ती सरकार ने 88,79२ अवैध बंग्लादेशी प्रवासियों का प्रत्यार्पण किया था। लेकिन, मोदी राज में २014 से २019 तक, 6 साल में इसके तिहाई से भी कम, कुल २,566 अवैध बांग्लादेशी प्रवासियों का ही प्रत्यार्पण किया गया था। प्रत्यार्पण की दर में यह कमी, अगर मोदी सरकार की अक्षमता को नहीं, तो जरूर कथित घुसपैठ में कमी को दिखाती है।

बेशक, देश के मौजूदा शासकों को जवाब तो इसका भी देना चाहिए कि क्या वजह है कि २011 के बाद, जो दशकीय जनगणना २011 में पूरी हो जानी चाहिए थी, २0२6 में ही कहीं जाकर शुरू होने वाली है? बेशक, २0२0 में कोरोना के विस्फोट के चलते जनगणना का काम रुक गया था। लेकिन, उसके बाद तो पूरा आधा दशक गुजर चुका है। सच्चाई यह है कि हमारे अड़ोस-पड़ोस के छोटे-छोटे देशों ने भी इस बीच जनगणना कराई है और भारत संभवत: ऐसे बहुत थोड़े से अपवादों में से है, जहां जनगणना अब तक कोरोना की बाधा से उबर नहीं पाई है। यह कहने में भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आपदा में अवसर खोजने की आदी भाजपा सरकार ने, अपने जनगणना को अकारण टालने को भी अपने सांप्रदायिक प्रचार के लिए 'अवसर' बना लिया है। जाहिर है कि अगर २0२0-२1 की जनगणना हो गयी होती, तो अमित शाह मुसलमानों की आबादी घुसपैठ की वजह से अब २4.6 फीसद हो जाने जैसा अंधाधुंध दावा तो नहीं ही कर सकते थे। आखिरकार, जनगणना के आंकड़ों ने ही उन्हें इस सच्चाई को कबूल करने के लिए मजबूर किया है कि आजादी के बाद साठ साल में मुस्लिम आबादी के अनुपात में कुल 4 फीसद की बढ़ोतरी हुई है।

बेशक, इन सारे तथ्यों से संघ-भाजपा के 'घुसपैठ से हिंदू खतरे में' के झूठ को भुनाने के प्रयासों में कोई कमी नहीं आने जा रही है। उन्होंने अपने सांप्रदायिक घोड़े पर, घुसपैठ के अनाप-शनाप दावों की जीन को कस दिया है। फिर भी, बिहार की जागरूक जनता इस झूठे प्रचार के सामने, अपने अनुभव से जुड़ा एक सवाल तो जरूर पूछेगी। बिहार में हुए मतदाता सूचियों विशेष सघन पुनरीक्षण या एसआईआर के पीछे अवैध घुसपैठ को एक प्रमुख कारण बताने के बाद, अब चुनाव आयोग इस पर चुप्पी क्यों साध गया है कि कितने घुसपैठिए मिले हैं? वास्तव में, पौने आठ करोड़ मतदाताओं को छानने के बाद, कुल 3.75 लाख नामों पर आपत्ति आई है, जिसमें विदेशी होने की शिकायत के कुल 1087 मामले थे। इनमें से आपत्ति सही मानकर डिलीट किए गए 390 और इनमें मुसलमान कुल 76 थे। जिस सीमांचल में घुसपैठ का इतना शोर था, वहां विदेशी के नाम पर सिर्फ 4 लोग निकले हैं। हिंदू तो खतरे में नहीं हैं, तब खतरे में कौन है — क्या घुसपैठ का झूठा हौवा खड़ा कर के हिंदुओं को ठगने की राजनीति ही खतरे में नहीं है?

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और साप्ताहिक पत्रिका 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

सिनेमा को मनोरंजन का सशक्त माध्यम माना जाता है। फिल्म जीवन के यथार्थ, लोगों की पीड़ा और सच्चाई...

संपादकीय

चिंतन-मनन

विजय गर्ग

समानांतर सिनेमा जीवन का यथार्थ बहुत गहराई से दिखाता रहा है। यह हिंदी सिनेमा का वह पक्ष है, जिसमें आम आदमी के जीवन की जद्दोजहद, असमानता और बदलाव को सही ढंग से दर्शाया जाता है। ऐसे सिनेमा को 'आर्ट सिनेमा' या 'नया सिनेमा' नाम भी दिया गया। फिल्मों के कथानक का यह चलन 1950 के दशक में पश्चिम बंगाल से शुरू हुआ और बाद में इसे हिंदी समेत हर भाषा के सिनेमा ने अपनाया।

सिनेमा को मनोरंजन का सशक्त माध्यम माना जाता है। लेकिन, मनोरंजन का आशय सिर्फ मन बहलाव नहीं होता। प्रेम कहानियों, नाच-गाने और मारधाड़ के बाद फिल्म का सुखांत ही मनोरंजन नहीं होता। जीवन के यथार्थ, लोगों की पीड़ा और सच्चाई से रूबरू होना भी मनोरंजन का अहम हिस्सा है। सच दिखाने वाली फिल्मों की कहानियां ख़ास इसीलिए होती हैं, साथ ही ये अपनी या अपने आसपास की लगती हैं। इन फिल्मों में शोषण, अंधविश्वास और पाखंड पर चोट, महिलाओं पर अत्याचार, भेदभाव जैसे सामाजिक मुद्दे दिखाई देते हैं। लेकिन, धीरे-धीरे सच दिखाने वाली ये फ़ल्मिें परदे से लोप हो गईं।

समानांतर सिनेमा जीवन का यथार्थ बहुत गहराई से दिखाता रहा है। यह हिंदी सिनेमा का वह पक्ष है, जिसमें आम आदमी के जीवन की जद्दोजहद, असमानता और बदलाव को सही ढंग से दर्शाया जाता है। ऐसे सिनेमा को 'आर्ट सिनेमा' या 'नया सिनेमा' नाम भी दिया गया। फिल्मों के कथानक का यह चलन 1950 के दशक में पश्चिम बंगाल से शुरू हुआ और बाद में इसे हिंदी समेत हर भाषा के सिनेमा ने अपनाया। इसका मकसद जीवन के कठोर यथार्थ, समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों, महिलाओं और गरीबों की समस्याओं को सामने लाना रहा, जिससे दर्शक खुद को जुड़ा महसूस करे। इसकी यथार्थ परक कहानियां आम लोगों की जिंदगी से जुड़ी होती हैं। मसलन गरीबी, बेरोजगारी, जातिगत भेदभाव, और स्त्री-पुरुष संबंध। ये फिल्में वास्तविक लोकेशनों पर शूट की जाती हैं और संवाद व किरदार स्वाभाविक होते हैं। ऐसी फिल्मों का निर्माण भी वास्तविक होता है। श्याम बेनेगल की फ़ल्मिें अंकुर, मंथन और भूमिका, मणि कौल की 'उसकी रोटी' और 'दुविधा' के अलावा सत्यजीत रे की 'पाथेर पांचाली' के साथ मृणाल सेन, ऋत्विक घटक जैसे निर्देशक इस आंदोलन के अग्रणी रहे। इनकी फिल्मों में व्यावसायिकता की बजाय कलात्मकता, गहराई और सामाजिक प्रतिरोध देखने को मिलता है। पर, आज ऐसा सिनेमा लुप्त होने लगा। बरसों से ऐसी कोई फिल्म नजर ही नहीं आई।

ऐसी फ़ल्मिें जीवन का यथार्थ दिखाती है जैसे 'अंकुर' खेतिहरों और गरीब तबके की ज़िंदगी की सच्चाई दिखाती है। 'उसकी रोटी' और 'माया दर्पण' ग्रामीण भारत की समस्याओं को संवेदनशीलता से प्रस्तुत करती हैं। वास्तव में समानांतर सिनेमा ने ही गंभीर दर्शकों को फिल्मों के ज़रिए आम आदमी की पीड़ा को लेकर सोचने पर मजबूर किया। महिलाओं और वंचित वर्गों की भूमिका, विद्रोह और स्वतंत्र पहचान को संवेदनशील तरीके से उजागर किया गया। समानांतर सिनेमा का मकसद दर्शक को यथार्थ के करीब लाना और सांस्कृतिक-सामाजिक बदलाव की चेतना को जगाना रहा है।

इन फिल्मों के किरदार और कथानक वास्तविक

इन फिल्मों में किरदार और कथानक बहुत वास्तविक व स्वाभाविक होते हैं। इसमें गैर-पेशेवर कलाकार होते हैं। समाज की सच्चाइयों को विषय वस्तु बनाकर, बदलाव और सवाल उठाए जाते हैं। नारी सशक्तिकरण, जातिवाद, अशिक्षा, शहरी-ग्रामीण भेद, आर्थिक विषमताएं ऐसे मुद्दे समानांतर सिनेमा की पहचान रहे हैं। सादगीपूर्ण कला निर्देशन, प्राकृतिक प्रकाश, लंबे शॉट्स, और धीमी गति की कहानी। सत्यजीत रे, मृणाल सेन, ऋत्विक घटक, श्याम बेनेगल जैसे निर्माता-निर्देशकों ने इस धारा को स्थापित किया।

दमित और शोषित वर्ग पर फोकस

समानांतर सिनेमा ने फिल्म को सामाजिक बदलाव और जागरूकता का माध्यम बनाया। यथार्थ दिखाने की शैली ने भारतीय दर्शकों के साथ साथ ही अंतरराष्ट्रीय मंच तक वास्तविकता की गूंज पहुंचाई। इस प्रकार, समानांतर सिनेमा जीवन के यथार्थ को बिना बनावटीपन प्रस्तुत करता है। समानांतर सिनेमा को जीवन का यथार्थ कहा जरूर गया, लेकिन माना नहीं गया। क्योंकि, समानांतर सिनेमा का कैमरा हमेशा दमित और शोषित वर्ग पर ही फोकस करता रहा है। जबकि समाज के यथार्थ में खुशी और गम दोनों शामिल होते हैं। यदि इसमें 'अंकुर' शामिल है, तो 'हम साथ साथ हैं' को भी शामिल किया जा सकता है। समझा जाता है कि हमारा समानांतर सिनेमा इटैलियन न्यू रियलिज्म, फ्रांस के फ्रेंच न्यू वेव और जापान के न्यू वेव सिनेमा से प्रभावित रहा।

ऐसी फिल्मों की नींव सौ साल पुरानी

भारतीय सिनेमा में यथार्थवादी फिल्मों की नींव 1920 से 30 के दशक में ही पड़ गई थी। साल 1925 में बाबूराव पेंटर ने अपनी मूक फिल्म 'सावकारी पाश' बनाई, जिसमें वी शांताराम ने गरीब किसान का किरदार निभाया था। इसे भारत की पहली समानांतर फिल्म माना जाता है। महिलाओं की दुर्दशा पर बनी फिल्म 'दुनिया ना माने' भी ऐसी ही फिल्म थी। लेकिन, ये परंपरा तब आगे नहीं बढ़ सकी। बता दें, 40 से 60 के दशक में उसे सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल राय, मृणाल सेन, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद और वी शांताराम ने पल्लवित किया। चेतन आनंद ने 1946 में 'नीचा नगर' बनाई। इस परम्परा को ही बाद में श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, अदूर गोपालकृष्णन तथा गिरीश कासरवल्ली ने बढ़ाया।

ऐसी फ़ल्मिें बनाने वाले फिल्मकारों में गुरुदत्त भी थे, जिन्होंने कला और फार्मूला सिनेमा को जोड़ने का काम किया। उनकी फिल्म 'प्यासा' को हिंदी सिनेमा की कालजयी फिल्म माना जाता है। लेकिन, कला फिल्मों से व्यावसायिक सफलता पाने में ऋषिकेश मुखर्जी की भी कोई बराबरी नहीं कर सकता। इस तरह की फिल्मों के दर्शकों का दायरा सीमित होने के कारण इन फिल्मों की व्यावसायिक सफलता संदिग्ध मानी गई। लेकिन, कई कला फिल्में ऐसी हैं, जिन्हें बॉक्स ऑफिस पर अच्छी सफलता मिली। आजादी के बाद 50 और 60 के दशक में सिनेमा दो धाराओं में बंट गया। एक धारा में सामाजिक सरोकार के चिंतन को स्थान दिया गया। दूसरी धारा में मुख्य तौर पर मनोरंजन प्रधान सिनेमा बढ़ा!

'भुवन सोम' से हिंदी में यथार्थ सिनेमा जन्मा

हिंदी में समानांतर सिनेमा की नई शुरुआत 1969 में मृणाल सेन की फिल्म 'भुवन सोम' को माना जाता है। 1976 में मृणाल ने 'मृगया' बनाई, जो मिथुन चक्रवर्ती की पहली फिल्म थी। जिसमें मिथुन ने एक आदिवासी क्रांतिकारी का किरदार निभाया था। बाद में सत्यजीत रे ने हिंदी में पहले 'शतरंज के खिलाड़ी' और बाद में 'सद्गति' बनाई। साल 1953 में आई बिमल रॉय की 'दो बीघा जमीन' ने समीक्षकों की प्रशंसा के साथ व्यावसायिक सफलता भी प्राप्त की थी। इसे कॉन फेस्टिवल (1954) में भी अंतर्राष्ट्रीय सम्मान भी मिला। इसके बाद बिमल रॉय ने बिराज बहू, देवदास, सुजाता और 'बंदिनी' फिल्में बनाई। 1970 और 1980 के दौरान समानांतर सिनेमा ने जमकर विकास किया। इसी दौर में शबाना आजमी, स्मिता पाटिल, अमोल पालेकर, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, अनुपम खेर, कुलभूषण खरबंदा, पंकज कपूर, गिरीश कर्नाड के साथ समय-समय पर रेखा और हेमा मालिनी का भी सानिध्य मिला।

बेनेगल और निहलानी बने सारथी

श्याम बेनेगल समानांतर सिनेमा के नवसृजन के प्रमुख हस्ताक्षर बने। उन्होंने 1973 में पहली फिल्म 'अंकुर' बनाई। गांवों में शहरी घुसपैठ के परिणामों पर बनी यह फिल्म सफल रही। साल 1975 में बेनेगल ने 'निशांत' और 1976 में 'मंथन' बनाई। 'मंथन' को भी राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। उनकी मंडी, कलयुग और 'जुनून' भी बेहद चर्चित रही। गोविंद निहलानी भी इसी रास्ते पर आगे बढ़े। निहलानी की 1981 में आई 'आक्रोश' को दर्शकों के साथ समीक्षकों ने भी सराहा। अर्धसत्य, विजेता, आघात, 'पार्टी' और 'द्रोहकाल' बनाई। मणि कौल ने गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना पर 'सतह से उठता आदमी' बनाई। 1983 में कुंदन शाह ने कालजयी फिल्म 'जाने भी दो यारो' बनाई। 1984 में सईद अख्तर मिर्जा ने 'मोहन जोशी हाजिर हो' और 'अलबर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है' बनाकर नए रास्ते खोले। 1986 में केतन मेहता ने स्मिता पाटिल को लेकर 'मिर्च मसाला' बनाई। लेकिन, 2000 के बाद फिर यथार्थवादी सिनेमा के घोड़े बदले अंदाज में परदे पर दौड़े। इस दौर में प्रायोगिक फिल्मों के नाम से नए प्रयोग हुए। मणिरत्नम ने 'दिल से' और 'युवा' बनाई तो नागेश कुकुनूर ने 'तीन दीवारें' और 'डोर' परदे पर उतारी। सुधीर मिश्रा की हजारों ख्वाहिशें ऐसी, जानू बरूआ की मैने गांधी को नहीं मारा, नंदिता दास की फिराक, ओनिर की 'माय ब्रदर निखिल' और 'बस एक पल' ने माहौल बदलना शुरू किया।

भुगतान किए गए वृद्धावस्था वाले घर का उदय: वरिष्ठ जीवन के लिए एक नया आदर्श

विजय गर्ग

वरिष्ठ जीवन की अवधारणा एक महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजर रही है, क्योंकि आधुनिक जीवन बहु-पीढ़ियों के परिवारों को नई चुनौतियां प्रस्तुत करता है। बुजुर्गों के लिए भुगतान किए गए, या निजी, वृद्धावस्था वाले घर (जिसे अक्सर सेवानिवृत्ति गृह या सहायता प्राप्त रहने की सुविधाओं के रूप में जाना जाता है) विशेषकर तेजी से बूढ़ी आबादी वाले देशों में एक सभ्य, सुरक्षित और पेशेवर विकल्प बन रहे हैं। पेड ओल्ड एज होम क्या है? एक भुगतान किया गया वृद्धावस्था का घर एक आवासीय सुविधा है जहां वरिष्ठ नागरिक व्यापक देखभाल, आराम, सुरक्षा और समुदाय के लिए भुगतान करते हैं। चैरिटी घरों के विपरीत, ये निजी सुविधाएं वाणिज्यिक मॉडल पर काम करती हैं, जो पूरी तरह से स्वतंत्र रहने से लेकर सहायक जीवन और विशेष स्मृति देखभाल तक विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सेवा प्रदान करती हैं। मूलभूत परिवर्तन इन निवासों को अंतिम उपाय के रूप में नहीं, बल्कि एक जानबूझकर जीवनशैली विकल्प के रूप में देखना है - घर का प्रबंधन करने या अलगाव से डरने के बोझ के बिना स्वर्ण वर्षों का आनंद लेने की जगह। ट्रेंड के ड्राइवर भुगतान किए गए वृद्धावस्था के लिए बढ़ती मांग को कई कारक बढ़ावा दे रहे हैं

पारिवारिक संरचनाएं बदल रही हैं: परमाणु परिवारों का उदय, पेशेवर गतिशीलता में वृद्धि और विदेश जाने वाले बच्चे अक्सर बुजुर्ग माता-पिता को उनके पास प्राथमिक देखभाल करने वाला नहीं छोड़ते।

पेशेवर देखभाल की आवश्यकता: गतिशीलता में कमी, मनोभ्रंश या पुरानी बीमारियों जैसे आयु-संबंधित मुद्दों के लिए अक्सर व्यावसायिक चिकित्सा पर्यवेक्षण और दैनिक सहायता की आवश्यकता होती है जो परिवार के सदस्यों को प्रदान करने के लिए उपलब्ध नहीं हो सकती।

समुदाय और सुरक्षा की खोज करें: कई वरिष्ठ लोग ऐसे वातावरण की तलाश करते हैं जहां साथ आसानी से उपलब्ध हो, जिससे अकेलापन और अवसाद कम हो जाता है। ये घर आपातकालीन प्रणालियों और 24/7 सुरक्षा के साथ एक सुरक्षित, वरिष्ठ-अनुकूल वातावरण भी प्रदान करते हैं। सेवाएं और सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं भुगतान किए गए घरों में सेवाओं की सीमा व्यापक है, जिसे अक्सर बुनियादी, मध्यवर्ती और उन्नत देखभाल के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जिसकी लागत तदनुसार भिन्न होती है। उच्च-स्तरीय या विलासिता सुविधाएं व्यापक रूप से उपलब्ध हैं। मुख्य सेवाएं आमतौर पर शामिल होती हैं

आवास: वरिष्ठ आराम और सुरक्षा के लिए डिज़ाइन किए गए निजी या साझा कमरे/सूइट (जैसे, गैर-स्लिप फर्श, पकड़ बार)।

भोजन: विशिष्ट आहार संबंधी आवश्यकताओं के अनुरूप पौष्टिक, अक्सर अनुकूलित भोजन

घर की देखभाल और कपड़े धोना: नियमित सफाई और रखरखाव सेवाएं।

चिकित्सा और कल्याण:

24/7 आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणाली।

साइट पर या कॉल पर नर्सें और डॉक्टर

नियमित स्वास्थ्य जांच और दवा प्रबंधन।

फिजियोथेरेपी और कल्याण कार्यक्रम (जैसे योग, ध्यान)। अतिरिक्त सुविधाएं (विशेषकर प्रीमियम होम में

मनोरंजन और सामाजिक गतिविधियाँ (खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, समूह यात्राएं)।

विशेष देखभाल इकाइयां (उदाहरण के लिए, मनोभ्रंश या उपचारात्मक देखभाल)।

लक्जरी सुविधाएं (उदाहरण के लिए, परिदृश्य उद्यान, पुस्तकालय, जिम, स्पा सुविधाएँ, चालक सेवाएं) लागत को समझना भुगतान किए गए वृद्ध गृह की लागत अत्यधिक भिन्न होती है और यह इस तरह के कारकों पर निर्भर करती है

स्थान: मेट्रोपॉलिटन क्षेत्रों में आमतौर पर Tier-II या Tier-III शहरों की तुलना में काफी अधिक लागत होती है।

आवास का प्रकार: एकल रहने वाले कमरे या सुइट की लागत साझा कमरों से अधिक है।

देखभाल का स्तर: बुनियादी देखभाल (खाद्य, आवास, मामूली सहायता) सहायक जीवन या निरंतर निगरानी की आवश्यकता वाले उन्नत देखभाल से कम महंगी है।

सुविधाएं: प्रीमियम सुविधाओं और सेवाओं तक पहुंच मासिक शुल्क में वृद्धि होगी। एक सामान्य अनुमान के रूप में, मासिक लागत व्यापक हो सकती है। उदाहरण के लिए, बड़े शहरों में बुनियादी साझा कमरे प्रति माह लगभग $240-$420 से शुरू हो सकते हैं, जबकि व्यापक सेवाएं प्रदान करने वाली विलासिता सुविधाएँ प्रति महीने $1,200 से अधिक हो सकती हैं। कई सुविधाओं में एक बार की, कभी-कभी वापसी योग्य सुरक्षा जमा या प्रवेश शुल्क भी आवश्यक होता है। एक सूचित विकल्प बनाना सही भुगतान वृद्ध गृह का चयन करना एक महत्वपूर्ण निर्णय है। संभावित निवासियों और उनके परिवारों को सलाह दी जाती है

व्यक्तिगत यात्राएं करें: स्वच्छता, वेंटिलेशन, भोजन की गुणवत्ता और समग्र वातावरण का आकलन करें।

चिकित्सा तैयारी का आकलन करें: मेडिकल स्टाफ की उपलब्धता, आपातकालीन प्रोटोकॉल और अस्पतालों के निकटता की पुष्टि करें।

स्टाफ अनुपात और प्रशिक्षण की जांच करें: एक अच्छा कर्मचारी-निवासी अनुपात व्यक्तिगत और शीघ्र ध्यान सुनिश्चित करता है।

समीक्षा अनुबंध: चिकित्सा उपचार, परिवहन या एक बार की जमा राशि के लिए किसी भी छिपे हुए या अतिरिक्त शुल्क को समझें। अंत में, बुजुर्गों की देखभाल के लिए भुगतान किए गए वृद्ध गृह एक नया मानक स्थापित कर रहे हैं, जिसमें वरिष्ठ नागरिक अपनी गरिमा, सुरक्षा और स्वतंत्रता बनाए रख सकते हैं। वे आधुनिक सामाजिक गतिशीलता के लिए आवश्यक अनुकूलन को प्रतिबिंबित करते हैं,

वृद्ध और उनके परिवार दोनों।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार
प्रतिष्ठित शिक्षाविद् सड़क कुर चंद
एमएचआर मलोट पंजाब - 152107

पंजाब की महिलाएं बच्चे पैदा करने से परहेज करती हैं!

विजय गर्ग

पंजाब की महिलाएं अब बच्चे पैदा करने से बच रही हैं। यही वजह है कि राज्य में जन्म दर घट रही है। पिछले 10 सालों में पंजाब की कुल जन्म दर में 11.8 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई है। केंद्र सरकार की सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम सांख्यिकी रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार, लोगों की बदलती जीवनशैली के कारण यह बड़ा बदलाव आया है। पंजाब में वर्ष 2011-13 के दौरान कुल जन्म दर 1.7 थी, जो 2021-23 में घटकर 1.5 रह गई है। यह राष्ट्रीय दर से भी कम है। अगर ग्रामीण क्षेत्रों की बात करें, तो 2011-13 में जन्म दर 1.8 थी, जो 2023 में घटकर 1.6 रह गई है, जिसमें 11.1 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई है। इसी तरह, शहरी क्षेत्रों में यह दर 1.6 से घटकर 1.4 हो गई है, जो 12.5 प्रतिशत की कमी दर्शाती है। आदर्श जन्म दर 2.1 मानी जाती है, जो जनसंख्या को स्थिर रखने के लिए पर्याप्त है। हालाँकि, कुछ विकसित देशों में यह दर 2.1 से कम है और उनकी जनसंख्या घट रही है। वहीं दूसरी ओर, कुछ देशों में जन्म दर अधिक होने के कारण जनसंख्या बढ़ रही है। राष्ट्रीय स्तर पर भी जन्म दर पहले से कम हुई है। वर्ष 2011-13 में यह 2.4 थी, जो 2021-23 में 2.4 हो गई है। कामकाजी महिलाओं की बढ़ती संख्या: पंजाब में अब कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ रही है, जिसका असर जन्म दर पर भी पड़ रहा है। अब 14 वर्ष तक की लड़कियों/महिलाओं की जनसंख्या का प्रतिशत घट रहा है। वर्ष 2013 में यह 22.1 प्रतिशत था, जो 2023 में घटकर 19.1 प्रतिशत हो गया। इसके साथ ही, 15 से 59 वर्ष की आयु वर्ग की महिला जनसंख्या का प्रतिशत भी तेज़ी से बढ़ रहा है। वर्ष 2013 में इस आयु वर्ग में महिलाओं का प्रतिशत 66.4 था, जो 2023 में बढ़कर 68.8 प्रतिशत हो गया। इसी आयु वर्ग में कामकाजी महिलाएं भी इसमें शामिल हैं। महिलाएं शिक्षा और कार्यशील जीवन में वृद्धि में भागीदारी वे का ज़िम्मेदारियाँ और पहल बदल गई हैं। बहुत सभी महिलाएं अब अपने करियर पर ध्यान केंद्रित करना पसंद करती हैं, जिसके कारण वे शादी और बच्चे पैदा करने का फैसला टाल रही हैं। साथ ही, सामाजिक और आर्थिक बदलावों के कारण, महिलाएं अपने जीवन की प्राथमिकताओं पर भी ध्यान केंद्रित कर रही हैं। बुजुर्ग आबादी में वृद्धि: पंजाब में बुजुर्ग आबादी बढ़ रही है। वर्ष 2013 में राज्य की कुल जनसंख्या 60 वर्ष और उससे अधिक थी। 10 वर्ष से अधिक आयु के लोगों की हिस्सेदारी 10.6 प्रतिशत थी, जो 2023 में बढ़कर 11.6 प्रतिशत हो गई। यदि महिलाओं के बारे में बात की इस आयु वर्ग में बुजुर्ग आबादी का प्रतिशत देखें तो 2013 में यह 11.5 प्रतिशत था, जो 2023 में बढ़कर 12.1 प्रतिशत हो गया। इसी तरह पुरुषों में भी बुजुर्ग आबादी का प्रतिशत बढ़ा है। 1.3 प्रतिशत इसमें वृद्धि हुई है, जो 9.8 से बढ़कर 11.1 प्रतिशत हो गई है। गया। बढ़ती वृद्ध आबादी का कारण बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ, लंबी जीवन प्रत्याशा और बेहतर जीवन स्तर है। हालाँकि, कम जन्म दर ने राज्य की जनसांख्यिकीय संरचना को बदल दिया है। बढ़ती वृद्ध आबादी और कम जन्म दर के परिणामस्वरूप, राज्य को भविष्य में स्वास्थ्य जैसी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। देखभाल और पेंशन योजनाओं पर बढ़ता बोझ कुल जन्म दर में गिरावट के मुख्य कारण हैं ₹शहरीकरण, शिक्षा और कार्य में भागीदारी: शहरीकरण के साथ, शिक्षा और कार्य जीवन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। इससे महिलाओं की ज़िम्मेदारियाँ और प्राथमिकताएँ बदल गई हैं। दिया गया। शिक्षा और बच्चों के पालन-पोषण की बढ़ती लागत: शिक्षा, स्वास्थ्य और बच्चों के पालन-पोषण की बढ़ती लागत ने परिवारों को कम बच्चे पैदा करने के लिए प्रेरित किया है। ₹परिवार नियोजन और छोटे परिवारों की प्रवृत्ति: परिवार नियोजन कार्यक्रमों की उपलब्धता और छोटे परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति ने भी प्रजनन दर को कम कर दिया है। ₹बदलती जीवनशैली और सोच: पंजाब₹ पंजाब के लोगों की जीवनशैली और सोच में भी बदलाव आ रहा है। पहले लोग सोचते थे कि ज़्यादा बच्चे पैदा करने से उनकी आमदनी बढ़ेगी, लेकिन अब यह सोच बदल गई है। बच्चों पर बढ़ते खर्चों के कारण लोग अब छोटे परिवारों को तरजीह दे रहे हैं। स्त्री रोग विशेषज्ञ मनीसा मैनी के अनुसार, पंजाब में लोगों की सोच में बदलाव आया है। अब लोग ज़्यादा बच्चों को आर्थिक बोझ समझते हैं, जो जन्म दर में गिरावट का एक बड़ा कारण है। कम जन्म दर और बढ़ती वृद्ध जनसंख्या ने पंजाब के सामने कई चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। इस बदलती जनसंख्या संरचना के कारण, राज्य को स्वास्थ्य सेवा, सामाजिक सुरक्षा और कार्यबल की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सरकार को इस दिशा में ऐसी नीतियाँ बनाने की ज़रूरत है जो युवा पीढ़ी और वृद्धों की ज़रूरतों में संतुलन बना सकें। पंजाब में घटती जन्म दर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बदलावों का परिणाम है। महिलाओं की बढ़ती शिक्षा, कार्यबल में उनकी भागीदारी और बदलती जीवनशैली ने इस प्रवृत्ति को और मज़बूत किया है। सरकार और समाज को इस बदलती जनसंख्या संरचना को समझना होगा और इसके भविष्य के प्रभावों से निपटने के लिए तैयार रहना होगा।

सेवानिवृत्तप्रधानाचार्यशैक्षिक
स्तंभकारमलोटपंजाब

इंटर्नशिप: डिजिटल भारत के लिए भविष्य तैयार युवाओं का निर्माण : विजय गर्ग

21वीं सदी में, भारत का मार्गदर्शक मंत्र - ₹डिजिटल फर्स्ट₹ एक तकनीकी आकांक्षा से कहीं अधिक हो गया है। यह एक परिवर्तनकारी दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है जो देश के युवाओं को सशक्त बनाने के लिए शिक्षा, नवाचार और शासन को एकीकृत करती है। इस परिवर्तन के केंद्र में एक महत्वपूर्ण उपकरण है - इंटर्नशिप। एक बार संक्षिप्त कार्य अनुभव के रूप में देखा जाता था, इंटर्नशिप आज रोजगार क्षमता, रचनात्मकता और अनुकूलनशीलता को विकसित करने के लिए संरचित मंचों के रूप में खड़ी होती हैं, जो छात्रों को तेजी से बढ़ रही वैश्विक अर्थव्यवस्था में पनपने की तैयारी करती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 [धारा 4.26, 11.8 और 17.8] में स्थापित, इंटर्नशिप अब शैक्षणिक सीखने के परिधीय अतिरिक्त नहीं हैं; वे भारत की शिक्षा ढांचे का एक अभिन्न हिस्सा हैं। वे सैद्धांतिक शिक्षा को व्यावहारिक प्रदर्शन के साथ मिलाते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि स्नातक न केवल ज्ञान के साथ बल्कि इसे सार्थक तरीके से लागू करने की कौशल, आत्मविश्वास और मानसिकता के साथ कार्यबल में प्रवेश करें। प्रभावी इंटर्नशिप की तैयारी स्नातक शिक्षा के पहले वर्ष से शुरू होती है। देश भर में संस्थानों ने एआईसीटीई आईडीईए लैब्स जैसे नवाचार केंद्र स्थापित किए हैं, जो छात्रों को उभरती प्रौद्योगिकियों का अनुभव करने की अनुमति देते हैं। यहां वे प्रयोग करना, डिजाइन करना और प्रोटोटाइप बनाना सीखते हैं।

छात्र स्मार्ट इंडिया हैकाथन, एमएसएमई हैकाथॉन और स्टार्टअप इंडिया चैलेंज जैसी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी भाग लेते हैं जहां वे वास्तविक दुनिया की समस्याओं के व्यावहारिक समाधान विकसित करते हैं। ये अनुभव न केवल उनके तकनीकी कौशल को परिष्कृत करते हैं बल्कि टीमवर्क, संचार और नेतृत्व क्षमताओं को भी बढ़ावा देते हैं।

इनका पूरक कार्यशालाएं, सेमिनार और अनुसंधान आधारित परियोजनाएँ हैं जो समझ को गहरा करती हैं। छात्र क्लबों, आईईईई, आईएसटीई, और आईईटीई जैसे पेशेवर समाजों तथा उद्यमशीलता कोशिकाओं के माध्यम से शिक्षार्थियों को बहु-अनुशासनात्मक संपर्क प्राप्त होता है। उद्योगों, ग्रामीण समुदायों और अनुसंधान संगठनों की फील्ड यात्राएं उनके दृष्टिकोण को आगे बढ़ाती हैं, जिससे उन्हें कक्षाओं के अवधारणाओं को वास्तविक जीवन की चुनौतियों से जोड़ने में मदद मिलती है।

जब तक छात्र औपचारिक इंटर्नशिप में प्रवेश करते हैं, तब तक वे ज्ञान को सक्षम बनाने के लिए तैयार होते हैं। स्टार्टअप, कॉर्पोरेशन, अनुसंधान

संस्थान या गैर-सरकारी संगठनों के साथ काम करते हुए, वे संगठनात्मक संस्कृति, परियोजना प्रबंधन और सहयोग के मूल्य के बारे में सीखते हैं। उन्हें अपनी ताकतों का विश्लेषण करने, उद्देश्य कथन (एसओपी) के माध्यम से प्रतिबिंबित करने और जटिल समस्याओं पर डिजाइन सोच लागू करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

तकनीकी विकास के अलावा, इंटर्नशिप में नरम कौशल और नैतिकता विकसित होती है - सहानुभूति, अखंडता, टीमवर्क और व्यावसायिकता। ये ऐसे गुण हैं जिन्हें आज के नियोक्ता अकादमिक योग्यता की तरह ही महत्व देते हैं। इस प्रकार इंटर्नशिप का अनुभव समग्र सीखने की प्रक्रिया बन जाता है - न केवल काम करने के लिए बल्कि सोचने, संवाद करने और नेतृत्व करने के लिए भी।

उद्देश्य और व्यापक प्रभाव

इंटर्नशिप का मुख्य उद्देश्य कक्षा की दीवारों से परे सीखने का विस्तार करना है। वे अनुभवजन्य और हाइब्रिड सीखने को बढ़ावा देते हैं, जिससे छात्र औद्योगिक, अनुसंधान और सामुदायिक पारिस्थितिकी प्रणालियों से जुड़ सकें। ऐसा करने से वे शिक्षार्थियों को उद्यमितापूर्ण मानसिकता विकसित करने में मदद करते हैं और भविष्य की व्यवधानों के अनुकूल रहने में सक्षम जीवन भर सीखने वाले बन जाते हैं। इंटर्नशिप देश की स्टीम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित) क्षमताओं को भी मजबूत करती हैं। छात्र तकनीकी प्रस्तुतियों, समूह चर्चाओं और व्यावहारिक प्रयोगों में संलग्न होते हैं, जिससे विश्लेषणात्मक और रचनात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है। कई इंटर्नशिप संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) से भी मेल खाती हैं, जिससे छात्रों को टिकाऊ नवाचारों और सामाजिक जिम्मेदारी में योगदान देने के लिए प्रेरित किया जाता है। डिजाइन सोच, सिमुलेशन उपकरण और वास्तविक समय डेटा के संपर्क में आने से छात्र सैद्धांतिक अभ्यासों से प्रोटोटाइप विकसित करने और परीक्षण करने तक आगे बढ़ते हैं। वे देखते हैं कि विभिन्न विभाग - अनुसंधान एवं विकास, विपणन, उत्पादन और गुणवत्ता आश्वासन - संगठन के भीतर कैसे बातचीत करते हैं।

चिकित्सा के देवता माने जाते हैं भगवान धन्वन्तरि

रमेश सर्राफ धमोरा

धन्वन्तरि को हिन्दू धर्म में देवताओं के वैद्य माना जाता है। ये एक महान चिकित्सक थे जिन्हें देव पद प्राप्त हुआ। हिन्दू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ये भगवान विष्णु के अवतार समझे जाते हैं। इनका पृथ्वी लोक में अवतरण त्रयोदशी के दिन हुआ था। इसीलिये दीपावली के दो दिन पूर्व धनतेरस को भगवान धन्वन्तरि का जन्म धनतेरस के रूप में मनाया जाता है। इसी दिन इन्होंने आयुर्वेद का भी प्रादुर्भाव किया था। इन्हें भगवान विष्णु का रूप कहते हैं जिनकी चार भुजायें हैं। उपर की दोंनों भुजाओं में शंख और चक्र धारण किये हुये हैं। जबकि दो अन्य भुजाओं मे से एक में औषध तथा दूसरे मे अमृत कलश लिये हुये हैं।

आयुर्वेद चिकित्सा करनें वाले वैद्य इन्हे आरोग्य का देवता कहते हैं। इन्होंने ही अमृतमय औषधियों की खोज की थी। इनके वंश में दिवोदास हुए जिन्होंने शल्य चिकित्सा का विश्व का पहला विद्यालय काशी में स्थापित किया था। जिसके प्रधानाचार्य सुश्रुत बनाये गए थे। सुश्रुत दिवोदास के ही शिष्य और ॠषि विश्वामित्र के पुत्र थे। उन्होंने ही सुश्रुत संहिता लिखी थी। सुश्रुत विश्व के पहले शल्य चिकित्सक थे। दीपावली के अवसर पर कार्तिक त्रयोदशी-धनतेरस को भगवान धन्वंतरि की पूजा करते हैं। कहते हैं कि शंकर ने विषपान किया। धन्वंतरि ने अमृत प्रदान किया और इस प्रकार काशी कालजयी नगरी बन गयी।

आयुर्वेद के सम्बन्ध में सुश्रुत का मत था कि ब्रह्माजी ने पहली बार एक लाख श्लोक के आयुर्वेद का प्रकाशन किया था। जिसमें एक सहस्त्र अध्याय थे। उनसे प्रजापति ने पढ़ा तदुपरांत उनसे अश्विनी कुमारों ने पढ़ा और उनसे इन्द्र ने पढ़ा। इन्द्रदेव से धन्वंतरि ने पढ़ा और उन्हें सुन कर सुश्रुत मुनि ने आयुर्वेद की रचना की। इसके उपरान्त अग्निवेश तथा अन्य शिष्यों के तन्त्रों को संकलित तथा प्रतिसंस्कृत कर चरक द्वारा चरक संहिता के निर्माण का भी आख्यान है।

धन्वन्तरि देवताओं के वैद्य और चिकित्सा के देवता माने जाते हैं। इसलिए चिकित्सकों के लिए धनतेरस का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। धनतेरस के संदर्भ में एक लोक कथा प्रचलित है कि एक बार यमराज ने यमदूतों से पूछा कि प्राणियों को मृत्यु की गोद में सुलाते समय तुम्हारे मन में कभी दया का भाव नहीं आता क्या। दूतों ने यमदेवता के भय से पहले तो कहा कि वह अपना कर्तव्य निभाते है और उनकी आज्ञा का पालन करते हैं। परन्तु जब यमराज ने दूतों के मन का भय दूर कर दिया तो उन्होंने कहा कि एक बार राजा हेमा के ब्रह्मचारी पुत्र का प्राण लेते समय उसकी नवविवाहिता पत्नी का विलाप सुनकर हमारा हृदय भी पसीज गया था। लेकिन विधि के विधान के अनुसार हम चाह कर भी कुछ न कर सके।

हमारे देश में सर्वाधिक धूमधाम से मनाए जाने वाले त्योहार दीपावली का प्रारम्भ धनतेरस से हो जाता है। इसी दिन से घरों की लिपाई-पुताई प्रारम्भ कर देते हैं। कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी के दिन ही भगवान धन्वन्तरि का जन्म हुआ था। इसलिए इस तिथि को धनतेरस के नाम से जाना जाता है। धन्वन्तरि जब प्रकट हुए थे तो उनके हाथो में अमृत से भरा कलश था। भगवान धन्वन्तरि पीतल का कलश लेकर प्रकट हुए थे। इसलिए ही इस अवसर पर बर्तन खरीदने की परम्परा है। इस अवसर पर धनिया के बीज खरीद कर भी लोग घर में रखते हैं। दीपावली के बाद इन बीजों को लोग अपने बाग-बगीचों में या खेतों में बोते हैं।

एक दूत ने बातों ही बातों में तब यमराज से प्रश्न किया कि अकाल मृत्यु से बचने का कोई उपाय है क्या। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यम देवता ने कहा कि जो प्राणी धनतेरस की शाम यम के नाम पर दक्षिण दिशा में दीया जलाकर रखता है उसकी अकाल मृत्यु नहीं होती है। इस मान्यता के अनुसार धनतेरस की शाम लोग आंगन में यम देवता के नाम पर दीप जलाकर रखते हैं।

महाभारत तथा पुराणों में विष्णु के अंश के रुप में उनका उल्लेख प्राप्त होता है। उनका प्रादुर्भाव समुद्रमंथन के बाद निर्गत कलश से अण्ड के रुप मे हुआ। समुद्र के निकलने के बाद उन्होंने भगवान विष्णु से कहा कि लोक में मेरा स्थान और भाग निश्चित कर दें। इस पर विष्णु ने कहा कि यज्ञ का विभाग तो देवताओं में पहले ही हो चुका है। अतः यह अब संभव नहीं है। देवों के बाद आने के कारण तुम (देव) ईश्वर नहीं हो। अतः तुम्हें अगले जन्म में सिद्धियां प्राप्त होंगी और तुम लोक में प्रसिद्ध होगे। तुम्हें उसी शरीर से देवत्व प्राप्त होगा और द्विजातिगण तुम्हारी सभी तरह से पूजा करेंगे। तुम आयुर्वेद का अष्टांग विभाजन भी करोगे। द्वितीय द्वापर युग में तुम पुनः जन्म लोगे इसमें कोई सन्देह नहीं है।

इस वर के अनुसार पुत्रकाम काशीराज धन्व की तपस्या से प्रसन्न हो कर जब भगवान ने उसके पुत्र के रुप में जन्म लिया और धन्वंतरि नाम धारण किया। धन्व काशी नगरी के संस्थापक काश के पुत्र थे। वे सभी रोगों के निवराण में निष्णात थे। उन्होंने भरद्वाज से आयुर्वेद ग्रहण कर उसे अष्टांग में विभक्त कर अपने शिष्यों में बांट दिया। वैदिक काल में जो महत्व और स्थान अश्विनी को प्राप्त था वही पौराणिक काल में धन्वंतरि को प्राप्त हुआ। जहां अश्विनी के हाथ में मधुकलश था वहां धन्वंतरि को अमृत कलश मिला, क्योंकि विष्णु संसार की रक्षा करते हैं। इसीलिये रोगों से रक्षा करने वाले धन्वंतरि को विष्णु का अंश माना गया है।

रांची के सीटी डीएसपी के रीडर चढ़ा एसीबी हत्थे, दस हजार लेते धराया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने गुरुवार को बड़ी कार्रवाई की है. रांची एसीबी की टीम ने रांची के सिटी डीएसपी के रीडर सुनील पासवान को 10 हजार रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है.

जानकारी के मुताबिक, केस से जुड़े किसी मामले में रीडर ने एक व्यक्ति से रिश्वत मांगी थी. जबकि व्यक्ति रिश्वत देने को तैयार नहीं था. इसके बाद संबंधित व्यक्ति ने इसकी शिकायत एसीबी से की. शिकायत मिलने के बाद एसीबी ने पूरे मामले का सत्यापन कराया. सत्यापन में रिश्वत मांगे जाने के बाद सही पाये जाने पर एसीबी ने कारवाई आरंभ कर दी । जिसमें रीडर सुनील पासवान को घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया.

अंधेरे पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है दीपक

-संदीप सृजन

दीपावली भारत का सबसे महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से मनाया जाने वाला त्योहार है. यह न केवल रोशनी, उत्सव और एकता का प्रतीक है बल्कि इसका गहरा आध्यात्मिक महत्व भी है। दीपावली का अर्थ है दीपों की पंक्ति जो बाहरी और आंतरिक दोनों स्तरों पर अंधेरे पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। यह त्योहार केवल बाहरी उत्सव तक सीमित नहीं है बल्कि यह आत्म-जागरूकता, आत्म-शुद्धि और आध्यात्मिक विकास का अवसर प्रदान करता है।

दीपावली का आध्यात्मिक दृष्टिकोण हमें अपने भीतर की नकारात्मक प्रवृत्तियों—जैसे क्रोध, लालच, ईर्ष्या, और अहंकार—पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। दीपावली हमें आत्म-निरीक्षण का अवसर देती है ताकि हम अपने मन और आत्मा को शुद्ध करें और सकारात्मक गुणों जैसे प्रेम, करुणा और धैर्य को अपनाएं। यह एक आध्यात्मिक यात्रा है जिसमें हम अपने भीतर के रावण को परास्त कर राम के गुणों को अपनाते हैं।

दीपावली का केंद्रीय प्रतीक है दीपक जो अंधेरे पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। यह प्रकाश केवल बाहरी अंधेरे को दूर करने तक सीमित नहीं है बल्कि यह हमारे भीतर के अज्ञान, भय और भ्रम को भी दूर करता है। आध्यात्मिक रूप से, यह प्रकाश ज्ञान, सत्य और आत्म-जागरूकता का प्रतीक है। सनातन दर्शन में, अज्ञान को आत्मा के सबसे बड़े शत्रु के रूप में देखा जाता है। यह अज्ञान हमें हमारी वास्तविक प्रकृति—जो कि शुद्ध चेतना है—से दूर रखता है। दीपावली हमें अपने भीतर के इस अंधेरे को पहचानने और उसे ज्ञान की रोशनी से दूर करने का अवसर देती है। यह वह समय है जब हम ध्यान, प्रार्थना और आत्म-चिंतन के माध्यम से अपने मन को शुद्ध करते हैं और अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ने का प्रयास करते हैं।

दीपावली के दौरान माता लक्ष्मी की पूजा का विशेष महत्व है। लक्ष्मी को धन, समृद्धि और सौभाग्य की देवी माना जाता है लेकिन आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, लक्ष्मी केवल भौतिक धन की प्रतीक नहीं हैं। वे आंतरिक समृद्धि, शांति और आत्मिक पूर्णता का भी प्रतीक हैं। लक्ष्मी पूजा हमें यह सिखाती है कि सच्ची समृद्धि तभी प्राप्त होती है जब हम अपने जीवन को संतुलन, नैतिकता और उदारता के साथ जीते हैं। यह पूजा हमें लोभ और स्वार्थ से मुक्त होने की प्रेरणा देती है। जब हम अपने मन को स्वच्छ और अपने कर्मों को शुद्ध रखते हैं, तो माता लक्ष्मी का आशीर्वाद हमें न केवल भौतिक समृद्धि देता है, बल्कि आंतरिक शांति और संतुष्टि भी प्रदान करता है। इसके साथ ही, गणेश पूजा, जो कि दीपावली का एक अभिन्न हिस्सा है, हमें बुद्धि, विवेक और नई शुरुआत की प्रेरणा देती है। गणेश जी विघ्नहर्ता हैं जो हमारे जीवन की बाधाओं को दूर करते हैं और हमें आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने में सहायता करते हैं।

दीपावली का समय आत्म-शुद्धि और नवीकरण का समय है। यह वह अवसर है जब लोग अपने घरों को साफ करते हैं, नई चीजें खरीदते हैं, और अपने जीवन को नए सिरे से शुरू करने की तैयारी करते हैं। आध्यात्मिक रूप से, यह बाहरी सफाई हमारे मन और आत्मा की सफाई का प्रतीक है। सनातन परंपरा में, घर की सफाई को मन की शुद्धि से जोड़ा जाता है। जैसे हम अपने घर से धूल और गंदगी हटाते हैं, वैसे ही हमें अपने मन से नकारात्मक विचारों, पुरानी शिकायतों और अनावश्यक बोझ को हटाना चाहिए। यह वह समय है जब हम ध्यान, योग और प्रार्थना के माध्यम से अपने मन को शांत करते हैं और अपने जीवन के उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं। दीपावली का यह नवीकरण हमें अपने लक्ष्यों को फिर से परिभाषित करने, पुरानी आदतों को छोड़ने और सकारात्मक बदलावों को अपनाने का अवसर देता है। यह एक आध्यात्मिक पुनर्जनन है, जो हमें अपने जीवन को अधिक अर्थपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनाने की प्रेरणा देता है।

दीपावली का आध्यात्मिक महत्व केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, यह सामूहिक एकता और करुणा का भी प्रतीक है। यह त्योहार हमें दूसरों के साथ अपनी खुशियां बांटने की प्रेरणा देता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, यह हमें यह सिखाता है कि सच्ची खुशी तभी मिलती है जब हम दूसरों के लिए भी खुशी का कारण बनते हैं। इस दौरान, लोग अपने परिवार, दोस्तों और पड़ोसियों के साथ मिलकर उत्सव मनाते हैं। लेकिन आध्यात्मिक रूप से, यह हमें उन लोगों तक पहुंचने की प्रेरणा देता है जो समाज के हाशिए पर हैं। जरूरतमंदों की मदद करना, गरीबों को दान देना, और अपने समुदाय के साथ एकता का भाव स्थापित करना दीपावली के आध्यात्मिक मूल्यों का हिस्सा है। जब हम दूसरों के लिए करुणा और प्रेम दिखाते हैं, तो हम अपनी आत्मा को और अधिक शुद्ध करते हैं।

दीपावली के दौरान की जाने वाली पूजा और प्रार्थनाएं हमें आध्यात्मिक रूप से परमात्मा के करीब लाती हैं। यह वह समय है जब लोग अपने घरों में दीप जलाते हैं, मंत्रों का जाप करते हैं, और भगवान के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। यह प्रार्थना और ध्यान हमें अपने जीवन के उद्देश्य को समझने में मदद करता है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से, यह वह समय है जब हम अपने भीतर की शांति को खोजते हैं। ध्यान और प्रार्थना के माध्यम से हम अपने मन को स्थिर करते हैं और अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। यह प्रक्रिया हमें न केवल आंतरिक शांति देती है, बल्कि हमें यह भी याद दिलाती है कि हम इस विशाल ब्रह्मांड का हिस्सा हैं।

दीपावली का आध्यात्मिक महत्व प्रकृति के साथ हमारे संबंध को भी दर्शाता है। सनातन दर्शन में, प्रकृति को ईश्वर का एक रूप माना जाता है। दीये जलाने की परंपरा हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने की प्रेरणा देती है। हालांकि, आधुनिक समय में, आतिशबाजी और अन्य गतिविधियों के कारण पर्यावरण को नुकसान पहुंच रहा है। आध्यात्मिक रूप से, हमें यह समझना चाहिए कि प्रकृति की रक्षा करना भी एक आध्यात्मिक कर्तव्य है। इस दीपावली, हम पर्यावरण-अनुकूल तरीके अपनाकर—जैसे मिट्टी के दीये जलाना, प्राकृतिक सामग्री से सजावट करना, और आतिशबाजी से बचना—प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभा सकते हैं। यह एक आध्यात्मिक कार्य है, जो हमें प्रकृति और परमात्मा के साथ सामंजस्य में जीने की प्रेरणा देता है।

दीपावली का आध्यात्मिक महत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है; यह एक गहरी आंतरिक यात्रा है जो हमें आत्म-जागरूकता, शुद्धि और एकता की ओर ले जाती है। यह वह समय है जब हम अपने भीतर के अंधेरे को दूर करते हैं, अपने मन को सकारात्मकता और ज्ञान से भरते हैं, और दूसरों के साथ प्रेम और करुणा का रिश्ता बनाते हैं। दीपावली हमें यह सिखाती है कि सच्ची रोशनी वही है जो हमारे दिल में जलती है। जब हम अपने मन को शुद्ध करते हैं, अपने कर्मों को धर्म के साथ जोड़ते हैं, और अपने जीवन को दूसरों के लिए उपयोगी बनाते हैं, तभी हम इस त्योहार का सही आध्यात्मिक अर्थ समझ पाते हैं। इस दीपावली, आइए हम न केवल अपने घरों को, बल्कि अपनी आत्मा को भी रोशनी से जगमग करें, और इस आध्यात्मिक यात्रा को एक नए स्तर पर ले जाएं।

रांची के सीटी डीएसपी के रीडर चढ़ा एसीबी हत्थे, दस हजार लेते गिरफ्तार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की टीम ने गुरुवार को बड़ी कार्रवाई की है. रांची एसीबी की टीम ने रांची के सिटी डीएसपी के रीडर सुनील पासवान को 10 हजार रिश्वत लेते गिरफ्तार किया है. जानकारी के मुताबिक, केस से जुड़े किसी मामले में रीडर ने एक व्यक्ति से रिश्वत मांगी थी. जबकि व्यक्ति रिश्वत देने को तैयार नहीं था. इसके बाद संबंधित व्यक्ति ने इसकी शिकायत एसीबी से की. शिकायत मिलने के बाद एसीबी ने पूरे मामले का सत्यापन कराया. सत्यापन में रिश्वत मांगे जाने के बाद सही पाये जाने पर एसीबी ने कारवाई आरंभ कर दी । जिसमें रीडर सुनील पासवान को घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया।

रौशनी बाँटो, मोहब्बत की क्योंकि यही हमारी असली दीवाली है...

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़, हरदा मध्य प्रदेश.

दीपावली का नाम आते ही आँखों में रौशनी उतर आती है, दिल में अपनापन और ज़ुबान पर दुआएँ सज जाती हैं। यह वह पर्व है जहाँ हर चिराग़ की लौ ज़मीर को जगमगा देती है, जहाँ अँधेरा पीछे हटता है और इंसानियत आगे बढ़ आती है। यह सिर्फ़ त्योहार नहीं, हमारी तहज़ीब का आईना और परम्पराओं का नग़मा है जो पीढ़ियों से हमारी रगों में बहता आया है। जब मिट्टी का दिया जलता है तो उसमें केवल तेल नहीं, हमारी उम्मीदें, आस्था और पुरखों की यादें भी झिलमिलाती हैं। वो छोटी-सी लौ बताती है कि अँधेरा कितना भी गहरा क्यों न हो, एक चिराग़ उसे मिटा सकता है। यही असल संदेश है, हर इंसान अपने भीतर का दीया जलाए, ईमान, मोहब्बत और ख़ुलूस का। दीपावली हमें संस्कृति का वह सबक देती है जो किताबों से नहीं, एहसास से सीखा जाता है। यह बताती है कि सफ़ाई सिर्फ़ घर की नहीं, रूह की भी ज़रूरत होती है। जब हम अपने आँगन को धो-पोंछकर चमकाते हैं, तो दरअसल हम दिल के कोनों से रंजिशें और ग़लत क़दमियाँ भी बुहारते हैं। यह पर्व केवल उत्सव ही नहीं, इंतज़ाम, इंसानियत और इबादत का संगम है। आज के ज़माने में जब चमक-दमक ने सादगी को ओझल कर दिया है, दीपावली हमें याद दिलाती है कि असली रौशनियाँ बिजली की नहीं, दिल की होती हैं। वो मुस्कान जो बच्चे के चेहरे पर सजी हो, वो सुकून जो बुजुर्ग की आँखों में झलके, वही असल दीया है जो समाज में उजाला फैलाता है। दीपावली का मतलब है हर उदासी में उमंग जगाना, हर मन में उम्मीद जलाना। यह पर्व हमें जोड़ता है, हमारी जड़ों की याद दिलाता है और कहता है "रौशनी बाँटो, मोहब्बत बाँटो, क्योंकि यही हमारी असली विरासत है।" इसलिए दीपावली सिर्फ़ त्योहार नहीं, एक तर्जुबा है उस रूहानी सफ़र का जहाँ हर दिया एक दुआ बन जाता है, अँधेरे से उजाले और स्वार्थ से सद्भाव की ओर। यही परम्परा है, यही अभिमान है, यही हमारी असली संस्कृति का आलोक है।

झारखंड व ओडिशा मे धार्मिक आस्था का प्रतिक हाथियों की संख्या अब चिंताजनक

कभी ओड़िया साधब ईशा पूर्व 350ई0 विदेशों मे बेचते थे प्रशिक्षित हाथी। आज भी उनके राजा गजपति महाराज, जहां जगन्नाथ अर्धांगिनी लक्ष्मी गज लक्ष्मी रूप में पूजी जाती

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

मनोहरपुर, यह वही भूखंड रहा है जहां गंगा से गोदाबारी तक कभी कलिंग कहलाता था। यानी समुचा झारखंड कभी कलिंग रहा .कलिंग के सामुद्रिक व्यापार जो ईसा पूर्व 350ई से आरंभ होता है उसका ऐतिहासिक प्रमाण अटा पड़ा है . उत्कल का व्यापार काफी उन्नत रहा .जावा, वाली , सुमात्रा आदि देशों में ये ओड़िया अनेक सामनों के साथ युद्ध हेतु प्रशिक्षित हाथी भी बेचते थे . आज हमें चीन ललकार रहा तो राफाल खरीद रहे हैं पर कभी भारत के निकट सामुद्रिक द्विपों के बाजार से अपनी सैन्य कार्य हेतु हाथी हमसे खरीदता था चीन . तब जब एक एक पोत में उत्कल के नौ वाणिज्यिक व्यापारी जिन्हें साधव कहते, वे 20-20 हाथी लेकर बेचने जाते थे सात समंदर पार .पर घोर आश्चर्य व अफसोस की बात मौजूदा समय में झारखंड के जंगलों में महज 227 हाथी रह गये है , वही ओडिशा में 912 तथा अधिकांश भाग कलिंग रहा छत्तीसगढ़ में 451 बचे हैं .यह खुलासा डीएन ए आधारित हाथी गणना में हुआ है .आज झारखंड ओडिशा सीमा पर स्थित सारंडा जंगल को बचाने हेतु स्वयं सर्वेंच्च न्यायालय ने अभयारण्य घोषित करने अन्यथा मुख्यसचिव को जेल भेजने पर ऊतारु है .जो निश्चय ही पर्यावरण एवं वन्यजीव अभयारण्य हेतु महत्त्वपूर्ण कार्य है .

झारखंड में जंगली हाथियों की संख्या 678 से घटकर केवल 217 रह गई है. यह जानकारी देश में पहली बार डीएनए आधारित हाथी गणना में सामने आई है. वन्यजीव विशेषज्ञ इसे चिंताजनक बता रहे हैं और मानव और हाथियों के बीच हो रहे संघर्ष, आवागमन गलियारों का अतिक्रमण और उनके प्राकृतिक आवास में कमी को इसका मुख्य कारण मान रहे हैं. अखिल भारतीय तुल्यकालिक हाथी अनुमान (एसएआईईई 2025) के अनुसार, राज्य में हाथियों की संख्या 149 से 286 के बीच है, जिसका औसत 217 है. केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय ने 2021 में सर्वेक्षण शुरू करने के लगभग चार साल बाद मंगलवार को रिपोर्ट जारी की.

झारखंड वन्यजीव बोर्ड के पूर्व सदस्य डी.एस. श्रीवास्तव ने कहा, "झारखंड अब हाथियों के लिए सुरक्षित निवास स्थान नहीं रहा. खनन, सड़क निर्माण और अन्य गतिविधियों ने उनके प्राकृतिक आवास को नष्ट कर दिया है. आवागमन मार्ग या तो अतिक्रमित हैं या नष्ट कर दिए गए हैं. जंगलों के बड़े पैमाने पर विनाश के कारण हाथियों को भोजन, विशेष रूप से बांस की कमी का सामना करना पड़ रहा है. उनके पास राज्य से बाहर जाने के अलावा कोई ऑप्शन नहीं है." उन्होंने यह भी कहा कि राज्य का राजकीय पशु होने के बावजूद सरकार ने हाथियों के संरक्षण के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाये हैं.

झारखंड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 25,118 वर्गकिमी है, जिसमें 31.51 प्रतिशत क्षेत्र वन है. राज्य खनिज और वन संपदा से समृद्ध है और इसकी सीमा पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और बिहार से मिलती है. वन अधिकारियों के अनुसार, पलामू बाघ अभयारण्य और कोल्हान प्रमंडल राज्य में हाथियों के प्रमुख पर्यावास रहे हैं. कोल्हान में तीन जिले- सरायकेला-खरसावां, पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम हाथियों के लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं.

रिपोर्ट में कहा गया है कि आवास स्थल नष्ट होने के कारण हाथी अब हजारीबाग और रांची जैसे नए क्षेत्रों में पलायन कर रहे हैं, जिससे मानव-हाथी संघर्ष की घटनाएं बढ़ रही हैं. 2004 से 2017 के बीच लगभग 30 हाथियों की मौत हुई, जिनमें अधिकतर बीमारी, जहरीले पदार्थ, अवैध शिकार, रेल दुर्घटनाएं और बिजली का झटका प्रमुख कारण रहा. एक वन अधिकारी ने बताया कि हाल के वर्षों में पश्चिमी सिंहभूम जिले में आईईडी विस्फोटों में कम से कम पांच हाथियों की मौत हुई. वहीं, वित्त वर्ष 2019-20 से पांच साल की अवधि में झारखंड में मानव और हाथियों के बीच हुए संघर्ष में 474 लोगों की जान गई

मुख्य वन संरक्षक (वन्यजीव) एस. आर. नटेश ने कहा, "हम हाथियों की अनुमानित संख्या रिपोर्ट का अध्ययन कर रहे हैं. रिपोर्ट में दिखाया गया आंकड़ा हमारे अनुमान से काफी कम है."

आखिर देशवासियों के अंदर कैसे जगाया जाएगा स्वदेशी के संकल्प का भाव! यक्ष प्रश्न

कमलेश पांडेय

भारतवासियों के लिए, खासकर यहां के सत्ता प्रतिष्ठान के लिए, स्वदेशी या विदेशी वस्तुओं को उपयोग में लाए जाने या फिर उसका बहिष्कार किये जाने का सियासी आह्वान कोई नई बात नहीं है क्योंकि सर्वप्रथम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ही आजादी की लड़ाई को धार देने के लिए और अंग्रेजों की आर्थिक कमर तोड़ने के लिए ऐसा प्रासंगिक आह्वान किये जाने की शुरुआत की थी। बाद में यह आह्वान भी एक सियासी हथकंडा बन गया।

वहीं, 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और भूमंडलीकरण के बाद आरएसएस-भाजपा के स्वदेशी आंदोलन का जो हश्र हुआ और इनकी ही बाजपेयी-मोदी सरकारों के द्वारा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से जो प्रेम दिखाया गया, वह भी कोई पुरानी बात नहीं है लेकिन मौजूदा दौर में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब बार-बार 'लोकल फ़ॉर वोकल' की बात करते हैं तो थोड़ा गम्भीर होना स्वाभाविक है।

इसलिए सवाल उठता है कि आखिर देशवासियों के अंदर कैसे स्वदेशी के संकल्प का भाव जगाया जाएगा, यक्ष प्रश्न है। देखा जाए तो डोकलाम और गलवान में चीनी सैनिकों के साथ हुए भारतीय सैनिकों के संघर्ष के बाद कभी भारत में चीनी वस्तुओं के बहिष्कार की मुहिम चलाई-चलवाई जाती है तो कभी पहलगाम आतंकी हमले के बाद चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान का साथ देने पर तुर्किये की वस्तुओं के बहिष्कार की मुहिम चलाई-चलवाई जाती है।

लेकिन जब अमेरिकी राष्ट्रपति भारत के खिलाफ मर्यादा विहीन आर्थिक टिप्पणी करते हैं, यहां की दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था को डेड इकॉनमी बताते हैं, भारत के ऊपर सबसे ज्यादा 50 प्रतिशत टैरिफ लगाते हैं, भारत को पिछाड़ने के लिए ओछी वैश्विक बातें करते हैं तो हमलोग अमेरिकी वस्तुओं के बहिष्कार की मुहिम न चलाकर सिर्फ इतना कहते हैं कि भारत के लोग सिर्फ उन्हीं वस्तुओं का उपयोग करें जो भारतीयों के पसीने से बनी हो। यहां के दुकानदार भी देशी वस्तुएं ही बेचें।

इसलिए यहां पर सवाल उठाना स्वाभाविक है कि ऐसा दोहरा मापदंड क्यों? आखिर क्या है इसके पीछे की लाचारी? देशवासियों को जानने-समझने का हक है।

वहीं, स्वदेशी या विदेशी वस्तुओं के उपयोग करने या फिर उसका बहिष्कार करने का यह चक्कर-घमचक्कर तो यहां के गरीबों-निम्न मध्यमवर्ग की समझ से परे है लेकिन सत्ता प्रतिष्ठान से जुड़े अभिजात्य वर्गों या उच्च मध्यम वर्ग की इस बाबत पसंद-नापसंद देश के लिए बहुत मायने रखती है क्योंकि उनकी क्रयशक्ति औसत से बहुत ज्यादा होती है।

सच कहूं तो देश और समाज का यही वह तबका है जो देशी वस्तुओं का उत्पादन करता है और विदेशी वस्तुओं का आयात करता है। यह वर्ग हर चीज में अपना लाभ देखता है। यही वर्ग विदेशी कनेक्शन भी रखता है। ब्रांडेड और उच्च गुणवत्ता वाली कीमती विदेशी वस्तुओं का असली उपभोक्ता भी यही होता है, क्योंकि उसे ही अपना स्टेटस सिंबल समझता है। क्या यह वर्ग प्रधानमंत्री के आह्वान की कद्र करेगा?

इसलिए सवाल यही उठता है कि हमारे देश के नेताओं, नौकरशाहों, उद्योगपतियों और सफल पेशेवरों के बीच प्रधानमंत्री की अपील अपनी कितनी जगह बना पाती है, देखना दिलचस्प होगा। जब आप इनकी कोठियों पर नजर दौड़ाएंगे, वाहनों को देखेंगे, लाइफ स्टाइल पर नजर डालेंगे, तो इनका विदेशी वस्तुप्रेम सहज ही उभर आएगा।

इसलिए यह बेहद जरूरी है कि ब्रेक के बाद होने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान के मर्म को समझना होगा, इसके आर्थिक व रणनीतिक मायने समझने होंगे। हमारी आर्थिक प्रगति और सैन्य सुरक्षा पर आपकी प्रवृत्ति का कितना असर पड़ेगा, यह समझना होगा। वहीं, जो लोग जानबूझकर नहीं समझ पा रहे, उन्हें कानून बनाकर समझाने के प्रयास करने होंगे।

दरअसल, विश्व की अस्थिर अर्थव्यवस्था के प्रति चिंता जताते हुये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि दुनिया के देश अपने- अपने हितों पर ध्यान दे रहे हैं। भारत भी अगले एक-डेढ़ साल में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकॉनमी बनने जा रहा है। इसलिए भारत को भी अपने आर्थिक हितों को लेकर सजग रहना ही होगा। उन्होंने यह भी कहा कि, हमारे किसान, हमारे लघु उदयोग, हमारे नौजवानों के रोजगार और इनका हित हमारे लिये सबसे ऊपर है। सरकार इस दिशा में हर प्रयास कर रही है।

उन्होंने आगे फिर कहा कि इसलिए ठान लें कि अब हम उन चीजों को, वस्तुओं को खरीदेंगे जिसे बनाने में किसी न किसी भारतीय का पसीना बहा है। वह वस्तु भारत के लोगों ने बनाई है। भारत के लोगों के कौशल, पसीने से बनी है। यह जिम्मेदारी हर देशवासी को लेनी होगी कि घर में जो भी सामान आएगा, वह स्वदेशी ही होगा। वहीं, पीएम मोदी ने दुकानदारों से भी कहा कि आपलोग तय कीजिए कि सिर्फ स्वदेशी माल ही बेचेंगे।

मोदी ने एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, "आज जब हम आर्थिक प्रगति की बात कर रहे है, तो मैं आपका ध्यान वैश्विक हालात पर ले जाना चाहता हूं। आज दुनिया की अर्थव्यवस्था कई आशंकाओं से गुजर रही हैं। अस्थिरता का माहौल है। ऐसे में दुनिया के देश अपने-अपने हितों पर ध्यान दे रहे है।" मोदी ने आगे कहा, "भारत भी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। इसलिये भारत को भी अपने आर्थिक हितों को लेकर सजग रहना ही है। हमारे किसान, हमारे लघु उदयोग, हमारे नौजवानों के रोजगार, इनका हित हमारे लिए सर्वोपरि हैं। सरकार इस दिशा में हर प्रयास कर रही है लेकिन देश के नागरिक के रूप में भी हमारे कुछ दायित्व है। यह बात सिर्फ मोदी नहीं, हिंदुस्तान के हर व्यक्ति को दिन में हर पल बोलते रहना चाहिये।"

उन्होंने यहां तक कहा, "कोई भी राजनीतिक दल हो, कोई भी राजनेता हो, उसे अपने संकोच को छोड़कर के देशहित में देशवासियों के अंदर स्वदेशी के संकल्प का भाव जगाना होगा।" प्रधानमंत्री ने कहा, "हम उन वस्तुओं को खरीदेंगे जिसे बनाने में किसी न किसी भारतीय का पसीना बहा है। वह वस्तु भारत के लोगों ने बनाई है, भारत के लोगों के कौशल से बनी है। भारत के लोगों के पसीने से बनी है। हमें 'वोकल फार लोकल' मंत्र को अपनाना होगा।" मोदी ने कहा, "हमारे घर में जो भी नया सामान आयेगा, वह स्वदेशी ही होगा। यह जिम्मेदारी हर देशवासी को लेनी होगी।"

उन्होंने व्यापारियों से स्वदेशी माल ही बेचने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा, "स्वदेशी माल बेचने का संकल्प भी देश की सच्ची सेवा है। त्योहारों के महीने आने वाले हैं। उसके बाद शादियों का सीजन है। इस दौरान स्वदेशी वस्तुओं को ही खरीदना चाहिए।" आपको याद होगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ही मेक इन इंडिया का नारा दिया और बाद में उसी में जोड़ दिया मेक फ़ॉर द वर्ल्ड। कोरोना महामारी के समय जिस तरह से उन्होंने डिजिटलीकरण को प्रश्रय दिलवाया, इससे अमेरिकी कम्पनियां लाभान्वित हुईं।

यदि आप अपने आसपास देखेंगे तो पाएंगे कि जीवन के हर क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियां दस्तक दे चुकी हैं। वो हमसे भारी लाभ कमा चुकी हैं। हमारा प्रशासन इतना निकम्मा है कि वह भारतीय उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने में भी असमर्थ है। उसने विदेशी कम्पनियों/उद्यमियों को विभिन्न छूटें दे रखी हैं क्योंकि उसे अपनी सुविधा शुल्क से मतलब है, अन्य बातें तो रोजमर्रा की बातें हैं। आया राम, गया राम, सब चलता है। सबको पता है कि कोई भी सरकार प्रशासनिक सहयोग से ही चल पाती है। इसलिए भारत के प्रधानमंत्री की चिंता मायने रखती है।

हमें यह समझना होगा कि भारत से चीन की शत्रुता जगजाहिर है। उसपर हमारी कारोबारी निर्भरता भी किसी से छिपी हुई नहीं है। चीन भारत से भारी मुनाफा कमा रहा है और उन लाभों से सीमा पर हमारे सैनिकों की परेशानियों का सबब बना हुआ है। वहीं, अमेरिका से भारत को कारोबारी मुनाफा है। लेकिन उसकी उलजुलूल शर्तें भारत के दूरगामी वैश्विक हितों के खिलाफ हैं। यूरोपीय देशों से हमारे रिश्ते बेहतर हो सकते हैं, लेकिन अमेरिका-रूस की प्रतिद्वंद्विता इस मार्ग में सबसे बाधक है। चूंकि रूस भारत का भरोसेमंद वैश्विक पार्टनर है। इसलिए उसकी कीमत पर कोई समझौता हो नहीं सकता।

ऐसे में यदि भारत को अमेरिका और चीन की क्षुद्र नीतियों से निपटना है, पड़ोसी पाकिस्तान-बंगलादेश के चक्कर में भारत से रार ठानने वाले इस्लामिक देशों की क्रूर नीतियों से निपटना है तो आर्थिक और सैन्य शक्ति के रूप में भारत को निरंतर मजबूती हासिल करनी होगी। यह तभी सम्भव होगा जब हमारी अर्थव्यवस्था अमेरिका, चीन व जर्मनी से निरंतर होड़ करेगी। इसलिए भारतीयों का अपनी सरकार के साथ खड़ा होना जरूरी है।

भारत के साथ सबसे बड़ी दिक्कत यहां की लोकतांत्रिक मूर्खता है जिसकी नींव पश्चिमी देशों की देखा देखी डाली गई थी। यहां के राजनीतिक दल जाति, सम्प्रदाय व क्षेत्र के नाम पर एक-दूसरे के खिलाफ विषबमन करते हैं जिससे राष्ट्रीय भावना कुंद होती है। विदेशी ताकतें इन्हें ही अपना हथियार बनाती हैं। ये लोग हमारी अर्थव्यवस्था के भी दुश्मन हैं क्योंकि भारतीयों को परस्पर भड़काते हैं और अशांति फैलाते हैं। सकारात्मक विपक्ष की भूमिका यहां नदारत है। इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह आह्वान मायने रखता है। हम सभी को उस पर चलने का प्रयत्न करना चाहिए। देशवासियों के अंदर स्वदेशी के संकल्प का भाव कैसे जगाया जाएगा, इस बारे में समवेत प्रयत्न करना चाहिए। इससे भारत सुखी और सशक्त होगा।

बिहार चुनाव में गठबंधन की रोजाना बनती-बिगड़ती गणित राज्य के विकास में सबसे बड़ा बाधकः डॉ. राजकुमार यादव

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ही चुनावी नैया को मझधार से पार लगाएगी, स्थिरता और विकास का नया अध्याय लिखेगी

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के बीच राज्य की राजनीति में गठबंधनों की अस्थिरता ने विकास की रफ्तार को पटकनी दे दी है। रोजाना बदलते समीकरण, अंतहीन सीट बंटवारे की खींचतान और दलों के बीच आपसी अविश्वास ने न केवल चुनावी माहौल को जहरा दिया है, बल्कि बिहार के करोड़ों नागरिकों के भविष्य को भी दांव पर लगा दिया है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के केंद्रीय चुनाव पर्यवेक्षक एवं ओडिशा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज यहां जारी बयान में चेतावनी दी है कि यह 'गठबंधन की बाजारबाजी' राज्य के विकास को लील जाएगी, यदि समय रहते स्थिर और विकास-केंद्रित वैकल्पिक राजनीति न अपनाई गई।

डॉ. यादव ने कहा, "बिहार की राजनीति गठबंधनों के चक्रव्यूह में फंस चुकी है। एक दिन महागठबंधन की एकता की तारीफ, दूसरे दिन सीटों पर मारपीट; एक तरफ एनडीए का दिखावा, दूसरी तरफ आंतरिक कलह। यह नाटकबाजी राज्य के विकास को बर्बाद कर रही है। एनसीपी ही वह ताकत है जो चुनावी नैया को मझधार से निकालकर किनारे लगाएगी। हमारा एजेंडा स्पष्ट है—स्थिर सरकार, बहुमुखी विकास, समृद्धि की बौछार और बिहार के हर कोने तक न्याय।"

घटनाक्रम के तहत बिहार गठबंधनों का काला अध्याय—एक तहलका

बिहार की राजनीति हमेशा से गठबंधनों की लहरों पर तिरती रही है, लेकिन पिछले दशक में यह अस्थिरता चरम पर पहुंच चुकी है। आइए, एक नजर डालें प्रमुख घटनाक्रमों पर, जो स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि कैसे ये बदलते समीकरण राज्य को पीछे धकेल रहे हैं- जहां 2015 विधानसभा चुनावः महागठबंधन का जन्म और NDA की हार

RJD, JD(U) और कांग्रेस के महागठबंधन ने नीतीश कुमार के नेतृत्व में BJP-नीत NDA को करारी शिकस्त दी। सीट बंटवाराः RJD-80, JD(U)-70, कांग्रेस-27।

लेकिन यह 'एकता' महज 18 महीने चली। 2017 में नीतीश कुमार ने महागठबंधन तोड़कर BJP के साथ हाथ मिला लिया। परिणाम? विकास योजनाएं ठप, किसानों का कर्ज माफ करने का वादा

अधर में लटका। राज्य का GDP ग्रोथ रेट गिरकर 2.9% रह गया (2017-18)।

2020 विधानसभा चुनावः NDA की वापसी, लेकिन पटरी से उतरी स्थिरता

NDA (JD(U)-43, BJP-74, अन्य) ने महागठबंधन (RJD-75, कांग्रेस-19, वामपंथी) को हराया। नीतीश कुमार फिर CM बने।

लेकिन 2022 में फिर ड्रामाः नीतीश ने BJP को

छोड़कर RJD के साथ महागठबंधन बनाया। तीन बार CM बदले, चार गठबंधन! परिणामस्वरूप, बिहार में निवेश 30% गिरा (2022-24), बेरोजगारी दर 7.6% (CMIE डेटा), और बुनियादी ढांचे परियोजनाएं (जैसे पटना मेट्रो) अधर में।

2025 चुनाव की वर्तमान तस्वीर का मतलब मझधार में डूबती नैया

6 और 11 नवंबर को होने वाले चुनावों से ठीक पहले, महागठबंधन (RJD-कांग्रेस-वामपंथी-VIP-RLM) में सीट बंटवारे पर सहमति नहीं बन पा रही। पटना के मौर्या होटल में VIP कार्यकर्ताओं के बीच मारपीट, मुकेश सहनी की प्रेस कॉन्फ्रेंस टलना, उपेंद्र कुशवाहा का कोटा छोड़ना—ये घटनाएं रोजाना सुर्खियां बटोर रही हैं।

NDA में भी खींचतानः BJP ने 101 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी की, JD(U) ने अपनी, लेकिन 'हम' और अन्य सहयोगियों पर असमंजस। अमित शाह के पटना दौरे के बावजूद, आंतरिक समन्वय की कमी साफ दिख रही है।

आंकड़े बोलते हैंः पिछले 5 वर्षों में बिहार में 4 गठबंधन बदलाव हुए, जिससे 15% विकास परियोजनाएं रुकीं (NITI Aayog रिपोर्ट)। शिक्षा दर 61% (राष्ट्रीय औसत 77%), स्वास्थ्य व्यय GDP का मात्र 1.05%—ये आंकड़े गठबंधनों की अस्थिरता का आईना हैं।

डॉ. यादव ने चुनावी बाजार का भेद खोलते हुए कहा, "ये गठबंधन सत्ता की भूख पर टिके हैं, विकास पर नहीं। रोजाना बनती-बिगड़ती गणित ने बिहार को 'उत्पादकता शून्य' का राज्य बना दिया। युवा पलायन कर रहे हैं, किसान आत्महत्या के आंकड़े बढ़ रहे हैं। एनसीपी इस चक्र को तोड़ेगी। हमारा विजनः कृषि क्रांति, रोजगार गारंटी, महिला सशक्तिकरण और डिजिटल बिहार।"

एनसीपी का दमदार संकल्पः मझधार से किनारे तक का सफर

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी बिहार की राजनीति में नई हवा लाने को तैयार है। डॉ. राजकुमार यादव के नेतृत्व में एनसीपी ने राज्य में 30+ सीटों पर मजबूती से उम्मीदवारों के साथ आगाज किया है, जहां स्थानीय मुद्दों—जैसे बाढ़ प्रबंधन, प्रवासन रोकथाम और ग्रामीण विद्युतीकरण—पर फोकस होगा। पार्टी का मंत्रः "गठबंधन नहीं, गठजोड़—विकास के लिए!"

एनसीपी के बिहार प्रभारी ने बताया कि पार्टी ने पहले ही 25 जिलों में संगठन मजबूत किया है, और आगामी रैलियों में डॉ. यादव स्वयं उतरेंगे। "हम NDA या महागठबंधन के चक्रव्यूह से अलग, स्वतंत्र लेकिन सहयोगी भूमिका निभाएंगे। बिहार को स्थिर सरकार चाहिए, जो एनसीपी ही देगी," उन्होंने जोर देकर कहा।

बिहार के मतदाताओं से अपील करते हुए डॉ. यादव ने कहा, "चुनाव सत्ता का नहीं, संकल्प का मौका है। एनसीपी को चुनें, बिहार को नई दशा व दिशा दें।"

केन्द्रीय विद्यालय स्लाईट में वार्षिक पैनल निरीक्षण दिवस का आयोजन

लोंगोवाल, 16 अक्टूबर (जगसीर सिंह)-

केन्द्रीय विद्यालय, स्लाईट लौंगोवाल में वार्षिक पैनल निरीक्षण दिवस का आयोजन अत्यंत उत्साह, अनुशासन और शैक्षणिक गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यालय परिसर एक नवीन ऊर्जा और उत्साह से ओतप्रोत दिखाई दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के स्काउट्स, गाइड्स, कब्स और बुलबुल्स द्वारा स्वागत समारोह के रूप में किया गया। उनके द्वारा प्रस्तुत स्वागत गीत, सलामी परेड तथा आकर्षक स्वागत मुद्रा ने निरीक्षण दल के आगमन को भव्य बना दिया।

कब–बुलबुल की मासूम मुस्कान और तालमेल ने पूरे वातावरण को सौहार्द और उमंग से भर दिया।

वार्षिक पैनल निरीक्षण दल का नेतृत्व श्री जुगल किशोर, सहायक आयुक्त महोदय, चंडीगढ़ संभाग द्वारा किया गया। दल में श्री जसपाल सिंह नेगी, प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 3, बठिंडा तथा श्रीमती हिमानी खन्ना, प्रधानाध्यापिका, केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2, पटियाला विशिष्ट सदस्य के रूप में सम्मिलित रहीं। निरीक्षण दल का विद्यालय आगमन प्राचार्य महोदय, शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों द्वारा ससम्मान स्वागत के साथ हुआ।

विद्यालय प्रांगण में प्रस्तुत प्रदर्शनी, शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की झलकियाँ निरीक्षण दल के लिए अत्यंत प्रशंसनीय रहीं। निरीक्षण के दौरान दल ने विद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों, सहशैक्षणिक गतिविधियों, नवाचार पहलों, अनुशासन व्यवस्था, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, अभिलेखों एवं समग्र प्रशासनिक प्रबंधन का सूक्ष्म अवलोकन किया। श्रीमती हिमानी खन्ना जी ने प्राथमिक विभाग की कक्षाओं का निरीक्षण करते हुए बालकों की सक्रिय सहभागिता और शिक्षकों की नवाचारी शिक्षण शैली की प्रशंसा की तथा उपयोगी सुझाव दिए। श्री जसपाल सिंह नेगी ने विद्यालय की टीम भावना और अनुशासित वातावरण को उत्कृष्ट बताते हुए सतत उन्नयन पर बल दिया।

दल प्रमुख सहायक आयुक्त महोदय, श्री जुगल किशोर जी ने विद्यालय की समग्र प्रगति, वातावरण और समर्पित शिक्षकों की सराहना करते हुए सुधार के लिए प्रेरक दिशा-निर्देश प्रदान किए। निरीक्षण उपरांत कर्मचारी बैठक का आयोजन विद्यालय सभागार में किया गया। दल के सदस्यों ने शिक्षकों के साथ संवाद स्थापित करते हुए शिक्षण गुणवत्ता, प्रशासनिक पारदर्शिता और नवाचार को और सशक्त बनाने के सुझाव दिए। सभा में विद्यालय परिवार ने सभी सुझावों को आत्मसात कर उन्हें व्यवहार में लाने का संकल्प व्यक्त किया। अंत में विद्यालय के प्राचार्य महोदय श्री हरि हर यादव जी ने निरीक्षण दल के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि "माननीय सहायक आयुक्त महोदय तथा निरीक्षण दल के मार्गदर्शन से हमें नई दिशा, नई प्रेरणा और गुणवत्ता संवर्धन की ऊर्जा प्राप्त हुई है। हम उनके सभी सुझावों को व्यवहार में लाने हेतु पूर्णतः संकल्पित हैं।"

शिक्षा विभाग की ई-पत्रिका में शिक्षक मृत्युंजय की कविता प्रकाशित

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा निपुण बालमंच ई-पत्रिका का तीसरा अंक जारी किया गया है। इस त्रैमासिक पत्रिका में राज्यभर के शिक्षकों और विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियों को स्थान दिया गया है।

नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला, पताही, पूर्वी चंपारण के शिक्षक मृत्युंजय कुमार — जो देश की सबसे बड़ी प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी ₹टीचर्स ऑफ बिहार₹ के प्रदेश मीडिया संयोजक भी हैं — की स्वरचित काव्य रचनाएँ "स्कूल चले हम" एवं "आओ खेलें खेल" को इस अंक में प्रकाशित किया गया है।

निपुण बालमंच ई-पत्रिका शिक्षा विभाग की एक नवाचारी पहल है, जिसका उद्देश्य बच्चों और शिक्षकों में रचनात्मकता, लेखन व अभिव्यक्ति के कौशल को प्रोत्साहन देना है।

पत्रिका के संपादकीय संदेश में बच्चों से कहा गया है— "प्यारे बच्चों! कल्पना की दुनिया में खो जाइए! बालमंच का तीसरा अंक आपके सामने है, जिसमें मज़ेदार कहानियाँ, कविताएँ और गतिविधियों का खजाना है। आपकी लिखी कहानियाँ, आपकी पेंटिंग्स और भी बहुत कुछ... तो पढ़िए, सीखिए और आनंद लीजिए!"

इस अवसर पर शिक्षक मृत्युंजय कुमार ने कहा— "शिक्षा विभाग द्वारा चलाई जा रही 'निपुण बालमंच' जैसी पहल शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए प्रेरणादायी है। मेरी कविताओं को इसमें स्थान मिलना न केवल व्यक्तिगत सम्मान है, बल्कि यह सभी शिक्षकों के लिए एक संदेश है कि हम अपने शब्दों और विचारों से बच्चों के मन में सृजनात्मक ऊर्जा भर सकते हैं।"

रेलवे उपयोगकर्ता संघ ने सुबह इंटरसिटी की मांग पूरी न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बरगढ़ जिला रेलवे उपयोगकर्ता संघ की एक आम बैठक मंगलवार को बरगढ़ अग्रगाही अपूर्व संघ के सम्मेलन कक्ष में हुई। संघ के अध्यक्ष प्रदीप देव ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में विभिन्न रेलवे समस्याओं पर चर्चा की गई। इस बीच, बरगढ़ के सांसद प्रदीप पुरोहित के नेतृत्व में संघ के एक प्रतिनिधिमंडल ने भुवनेश्वर में ईस्ट कोस्ट रेलवे के महाप्रबंधक से मुलाकात की और बताया कि बैठक में भुवनेश्वर के लिए सुबह की इंटरसिटी सेवा के संबंध में चर्चा हुई। बाद में, उक्त मांग पर रेलवे क्या कदम उठा रहा है, इस पर चर्चा करने के लिए सांसद से सर्किट हाउस में पुनः मुलाकात की गई और बताया गया कि सांसद पुरोहित ने महाप्रबंधक को सबके सामने फोन पर उनकी मांग के अनुसार सुबह की इंटरसिटी चलाने के लिए तत्काल कदम उठाने की जानकारी दी थी। प्रतिनिधिमंडल ने संबलपुर मंडल प्रबंधक से मुलाकात की और सदस्यों द्वारा की गई मांगों पर चर्चा की, जिसमें ट्रेनों की बर्थ 5 मिनट करने, लोगों की सुरक्षा के लिए मेट्रो में पर्याप्त रोशनी और सीसीटीवी लगाने, रैंप बनाने, नागरुल एक्सप्रेस के पुराने कोचों को नए कोचों से बदलने और बरगढ़ में विशेष ट्रेन की बर्थिंग शामिल थी। कई सदस्य कई

दिनों से भुवनेश्वर के लिए सुबह की इंटरसिटी के लिए प्रयास कर रहे थे, लेकिन कोई परिणाम नहीं मिला था, इसलिए सदस्यों ने विरोध का रास्ता अपनाने का प्रस्ताव रखा। लेकिन पहली बार, चूंकि बरगढ़ के सांसद स्वयं इस दिशा में रुचि के साथ प्रयास कर रहे थे, इसलिए कुछ दिनों तक धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने का निर्णय लिया गया हालांकि बरगढ़ स्टेशन पर कोच डिस्प्ले सिस्टम लगाया गया है, लेकिन यह कई बार काम नहीं करता है, जिससे यात्रियों को परेशानी हो रही है। इसलिए, यह प्रस्ताव रखा गया कि एक प्रतिनिधिमंडल स्टेशन जाएगा और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा कि यह नियमित रूप से चले। नए सदस्य के रूप में शामिल होने पर बिनय लता का फूलों के गुलदस्ते से स्वागत किया गया। बैठक में संघ के कार्यकारी अध्यक्ष कृष्ण चंद्र पंडा, उपाध्यक्ष सरदार प्रीतम सिंह, इंदिरा मोहंती, संपादक कमल जोशी, संयुक्त संपादक विनोद पुजारी, कोषाध्यक्ष गोपाल चंद्र दाश, सदस्य भारत भूषण दाश, मलय मोहंती, अभय कुमार भोई, सत्यनारायण पंडा, तुलसी चरण दाश, उद्धव चरण बेहरा, रामकृष्ण मेहर, विष्णु प्रसाद धानुका, लकी मीरवानी, सी.एम. राव, हरेकृष्ण साहू, अमित कुमार साहू, प्रफुल्ल कुमार नंदा, मोहम्मद असलम, अनिल कुमार अग्रवाल।

"आदि कर्मयोगी अभियान" में झारखंड का सरायकेला जिला देश के सर्व श्रेष्ठ जिलों में

17 अक्तूबर को दिल्ली में पारितोषिक ग्रहण करेंगे उपायुक्त, सरायकेला- नितिश कुमार सिंह.

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

राउरकेला। भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा संचालित "आदि कर्मयोगी अभियान" एवं "धरती आबा जनभागीदारी अभियान" के तहत देश के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले जिलों में चयनित हुआ है।

यह उपलब्धि जिले में संचालित नवाचारी पहलों, समावेशी जनजातीय विकास के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यों तथा समुदाय की सक्रिय भागीदारी के कारण संभव हुई है।

इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 17 अक्टूबर, 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में किया जा रहा है। इस समारोह में सरायकेला-खरसावाँ जिला सहित झारखण्ड के पाकुड़, जामताड़ा, सिमडेगा एवं लोहरदगा जिले को सम्मानित किया जाएगा।

इस सम्मान से जिले के जनजातीय सशक्तिकरण, भागीदारी आधारित विकास मॉडल और कर्मठ प्रशासनिक प्रयासों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है।

इस राष्ट्रीय समारोह में सरायकेला-खरसावाँ के उपायुक्त नितिश कुमार सिंह उपस्थित रहेंगे।

नुआपाड़ा के लिए भाजपा के 40 स्टार प्रचारकों की सूची जारी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : नुआपाड़ा उपचुनाव के लिए भाजपा ने स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। इस सूची में 40 स्टार प्रचारकों के नाम जारी किए गए हैं। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी के साथ-साथ 36वें मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का नाम भी इस सूची में शामिल है। स्टार प्रचारकों की सूची में भाजपा अध्यक्ष मनमोहन सामल, 3 केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, जुएल ओराम और अश्विनी वैष्णव के नाम शामिल हैं। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बैजयंत पांडा और 2 प्रभारी भी शामिल हैं। दो उपमुख्यमंत्रियों केवी सिंहदेव और पार्वती परिदा के नाम भी स्टार प्रचारकों की सूची में हैं।

इसके अलावा, सूची में सुरेश पुजारी, बसंत पांडा, प्रताप सदांगी, जयनारायण मिश्रा और मुकेश महालिंग के नाम भी शामिल हैं।

इसके साथ ही शिव महापात्रा, आकाश दास नायक और अनुभव मोहंती का नाम भी सूची में है।

सीरवी समाज के लिए गर्व का क्षण: चेतन सीरवी, हेमंत सीरवी व संदीप लालावत ने आरएएस 2023 में हासिल की शानदार रैंक

परिवहन विशेष न्यूज

पाली : आरएएस RAS 2023 के फाइनल रिजल्ट में सीरवी समाज के तीन युवाओं ने बाजी मारी है। मेलावास निवासी हेमन्त सीरवी को 165 वी रेंक, दूदोड़ निवासी चेतन सीरवी को 236 वीं रैंक और बिलाड़ा के निवासी संदीप लालावत को 470 वी रेंक तीनों की इस उपलब्धि पर सीरवी समाज में खुशी की लहर है। चेतन सीरवी का सीरवी किसान छात्रावास पाली में स्वागत किया गया। अखिल भारतीय सीरवी युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सीरवी किसान छात्रावास पाली के अध्यक्ष सुरेश चौधरी और एडवोकेट रमेश करणवा के नेतृत्व में चेतन सीरवी का सम्मान किया गया। इस मौके पर कई छात्र उपस्थित रहे। सुरेश चौधरी ने कहा कि सीरवी समाज में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, समाज के युवाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है, आरएएस RAS जैसी प्रतिष्ठित

परीक्षा में सफलता प्राप्त करना आसान नहीं है, और चेतन सीरवी और हेमंत सीरवी, संदीप लालावत ने अपनी मेहनत और लगन से यह उपलब्धि हासिल की है चेतन सीरवी और हेमंत सीरवी, संदीप लालावत की इस सफलता से सीरवी समाज के युवाओं को प्रेरणा मिलेगी। उम्मीद है कि भविष्य में और भी सीरवी युवा आरएएस RAS जैसी प्रतिष्ठित परीक्षाओं में सफल होंगे और अपने समाज का नाम रोशन करेंगे। एडवोकेट रमेश सीरवी करनवा ने बताया की तीनो विद्यार्थी ग्रामीण छेत्र से आते है तीनो ने अपनी लगन और कड़ी मेहनत से सफलता हासिल की है सीरवी समाज मे इनके सलेक्शन से हर्ष की लहर है, चेतन सीरवी ने अपनी सम्पूर्ण शिक्षा पाली सीरवी किसान छात्रावास मे रहकर की है, आने वाले समय मे हर सिविल एग्जाम मे सीरवी समाज के छात्र का सलेक्शन होगा चेतन सीरवी के स्वागत मे हॉस्टल के छात्र किशोर सीरवी, मुकेश चोयल, डॉ कुंदन काग, श्रवण सीरवी, किशन गहलोत, मुकेश भायल, सुरेश राठौड़, हेमन्त चौधरी, उत्तम राठौड़, हितैन सीरवी, नरेश सीरवी, पेमाराम, हिमत सीरवी, भरत सीरवी, ललित लाम्बिया, मोहित ढोला, दिलीप सीरवी, पुष्पेंद्र सीरवी, अशोक चौहान, मानाराम, विजय, महिपाल मुलेवा आदि उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023